गोस्वामी तुलसीदास कृत

बरवै रामायण

(नवीन पाठ)

सम्पादक

डॉ० रामकुमार वर्मा

शक १८८९

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

समर्पण

तुलसी-साहित्य के अनन्य प्रेमी और मर्मज्ञ

स्वर्गीय अग्रज

श्री रघुवीर प्रसाद वर्मा

की स्मृति में

सादर समर्पित

'कुमार'

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन विगत अनेक वर्षों से देश के विभिन्न अंचलों से हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह और संरक्षण का कार्य करता आ रहा है। लगभग आठ सहस्र ग्रंथों के इस वृहत् संग्रह में अनेक ग्रन्थ ऐसे भी हैं, जो अप्रकाशित एवं महत्त्वपूर्ण हैं और जिनके प्रकाश में आने से हिन्दी साहित्य की श्री-वृद्धि हो सकती है। इस उद्देश्य को दृष्टि में रखकर प्रथम शासन निकाय के कार्यकाल में विशेषज्ञ विद्वानों की एक परामर्शदातृ समिति का गठन किया गया और उसके निर्देशन में आठ हस्तलिखित ग्रन्थो के सम्पादन एवं प्रकाशन की एक योजना बनायी गयी। इन आठ ग्रन्थों के सम्पादन के लिए भारत सरकार से सम्मेलन को आंशिक वित्तीय सहायता भी प्राप्त हुई है। इस योजना के छः ग्रन्थ अब तक प्रकाशित हो चुके हैं और शेष दो ग्रन्थ भी शीघ्र ही पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होंगे।

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास की कृति 'बरवै रामायण' का यह प्रकाशन उक्त आठ ग्रन्थों के अतिरिक्त है। इस ग्रन्थ के यद्यपि अनेक संस्करण अब तक प्रकाशित हो चुके हैं; तथापि कदाचित् यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि पाठकों एवं अध्येताओं का गोस्वामी जी के प्रामाणिक मूल कृति की जिज्ञासा का समाधान उनसे नहीं हो पाया है। सम्मेलन द्वारा 'बरवै रामायण' के एक सर्वांगीण एवं यथासंभव विशुद्ध संस्करण निकालने की योजना का यही प्रयोजन है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अनुरोध पर डा० रामकुमार वर्मा ने १९६५ ई० में सम्मेलन-संग्रह के हस्तलिखित ग्रन्थो की विवरणात्मक सूची-निर्माण के लिए प्रधान सम्पादक का पद स्वीकार किया। इसी संदर्भ में ग्रन्थों का परीक्षण करते समय उन्हें एक ऐसी महत्वपूर्ण प्रति प्राप्त हुई, जिसमें गोस्वामी जी की समस्त रचनाएँ संगृहीत थीं। इसी संग्रह में उन्हें

'बरवै रामायण' की प्रति भी देखने को मिली। उसके अब तक के प्रकाशित संस्करणो से इस उपलब्ध हस्तलिखित प्रति के मूल पाठ का तुलनात्मक अध्ययन करने के अनन्तर डा० वर्मा ने सम्मेलन को उसके सम्पादन एवं प्रकाशन का सुझाव दिया। जिसे परामर्शदातृ समिति ने स्वीकार कर लिया। और यह भी प्रस्ताव किया कि डा० वर्मा ही उसका सम्पादन करें।

'बरवै रामायण' की प्रस्तुत प्रति के सम्पादन में काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी और जौनपुर के राजा श्री यादवेन्द्र दत्त दुबे द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित संस्करणों के अतिरिक्त विभिन्न संग्रहों में सुरक्षित लगभग सात हस्तलिखित प्रतियों का उपयोग किया गया है। जौनपुर महाराज के संस्करण में उनके संग्रह की दो हस्तलिखित प्रतियों का उपयोग किया गया है। सम्मेलन के अनुरोध पर उन्होंने स्व सम्पादित संस्करण को सहर्ष भेजकर जो सहयोग प्रदान किया है और उससे हमारे कार्य में जो सहायता मिली है उसके लिए सम्मेलन उनके प्रति आभारी है। इसी प्रकार दतिया के राज पुस्तकालय की प्रति के लिए भी हम उनके कृतज्ञ हैं।

प्रस्तुत संस्करण में सभा द्वारा प्रकाशित संस्करण के अतिरिक्त उसके संग्रह की दो हस्तलिखित प्रतियों और महाराज काशीनरेश के पुस्त- कालय की तीन हस्तलिखित प्रतियो का उपयोग किया गया है। यदि क नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी और महाराज काशीनरेश, राम वाराणसी द्वारा सम्मेलन को सहयोग प्राप्त न हुआ होता तो कद प्रस्तुत संस्करण को इस रूप मे निकालना सम्भव न होता। एत सम्मेलन की ओर से सभा के अधिकारियों और महाराज काशीनरे प्रति विशेष रूप से सादर कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इस पुस्तक के सम्पादक विद्वद्वर डा० रामकुमार वर्मा के ना सारा हिन्दी जगत सुपरिचित है। उन्होने अपनी महत्वपूर्ण मौलिक नाओ द्वारा हिन्दी साहित्य को परिपुष्ट एवं समृद्ध करने मे जो योग

अनुक्रम

प्राक्कथन

बरवै रामायण गोस्वामी तुलसीदास के प्रामाणिक ग्रन्थों में है। इसका उल्लेख वेणीमाधवदास के (संदिग्ध) 'मूल गोसाईं चरित' में भी मिलता है :

कवि रहीम बरवै रचे, पठये मुनिवर पास।
लखि तेइ सुन्दर छन्द में, रचना किये प्रकास॥

इसके अनुसार बरवै रामायण का रचनाकाल संवत् १६६९ (सन् १६१२) ठहरता है।

सन् १८७७ में श्री शिवसिंह सेंगर ने अपने ग्रंथ 'शिवसिंह सरोज'[1] के पृष्ठ ४२७ पर तुलसीदास के ग्रंथों में 'बरवै रामायण' का उल्लेख किया है। पृष्ठ १२१ पर उन्होंने 'बरवै रामायण' के दो छन्दों को उद्धृत भी किया है—

वंदे चरण सरोजं तव रघुबीर।
मुनि ललना इव नावं मा कुरु धीर[2]॥
सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जाय।
निसि मलीन वह निसि दिन यह बिकसाय॥

---

१. प्रकाशक—नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, (सातवीं बार), १९२६।

२. यह छन्द अभी तक प्राप्त किसी प्रति में नहीं है। इस छन्द वाली प्रति का निर्देश केवल दतिया राज्य पुस्तकालय में मिला है। शिवसिंह सेंगर ने लिखा है, "इनके बनाये ग्रंथों की ठीक-ठीक संख्या हमको मालूम नहीं हुई। केवल जो ग्रंथ हमने देखे, अथवा हमारे पुस्तकालय में हैं, उनका जिकर किया जाता है।"

यह प्रति संभवतः सेंगर जी के पुस्तकालय में हो जिसके सम्बन्ध में भी कोई सूचना नहीं है।

इस संदर्भ में केवल यही निर्दिष्ट है कि वरवै रामायण सात कांडों में है। उसमें कितने छन्द है, यह नहीं लिखा गया।

सन् १८९३ में सर जार्ज ए० ग्रियर्सन के 'इंडियन ऐंटिक्वरी' में 'नोट्स आन तुलसीदास' नामक लेख मे तुलसीदास के २१ ग्रंथों में दसवें ग्रंथ 'वरवै रामायण' का उल्लेख किया गया है।

उसी वर्ष 'एनसाइक्लोपीडिया आव् रिलीजन एंड एथिक्स' में ग्रियर्सन ने तुलसीदास के वारह ग्रंथों को प्रामाणिक मानते हुए उनके ६ छोटे ग्रंथों मे तीसरे स्थान पर 'वरवै रामायण' का निर्देश किया है।

सन् १९०३ में 'वंगवासी' के मैनेजर श्री शिवविहारी लाल वाजपेयी ने 'वंगवासी' के ग्राहकों को समस्त तुलसी-ग्रन्थावली (जिसमे १७ ग्रंथ थे) उपहार में दी थी। उस ग्रन्थावली में चतुर्थ ग्रथ 'वरवै रामायण' है। इस 'वरवै रामायण' में छन्द-संख्या ६९ है।

सन् १९२२ में काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित तुलसी-ग्रंथावली के दूसरे खण्ड में तुलसीदास के १२ प्रामाणिक ग्रंथों में 'वरवै रामायण' का उल्लेख है। इसकी भी छंद संख्या ६९ है। प्रारम्भिक वक्तव्य मे कहा गया है—

"वरवै रामायण—६९ वरवों का यह एक छोटा सा ग्रंथ है, जो सात अध्यायों मे वंटा है। गोस्वामी जी ने इसे ग्रंथ रूप में निर्मित नही किया था। ऐसा स्पष्ट ही ज्ञात होता है ये यथा रुचि बने हुए स्फुट वरवै थे जिन्हें बाद में स्वयं गोस्वामी जी ने या उनके किसी भक्त ने मानस के कांड-क्रम से संग्रहीत कर दिया है।"

६९ छन्दों के 'वरवै रामायण' मे राम-कथा का रूप ही नहीं है। केवल आलंकारिक रूप से राम-कथा के कुछ प्रसंगों की छाया मात्र है। वरवै भी काव्य-रूप में इतने स्फुट और अ-प्रवन्धात्मक है कि वे किसी कथा-भाग का निर्माण ही नही कर सकते। उत्तर कांड में तो कोई कथा है ही नही। वेणी माधव दास का यह कथन यथार्थ लगता है कि 'लखि तेइ सुन्दर छन्द में, रचना किये प्रकास'। कुछ छन्दों की रचना-मात्र की गई।

किन्तु 'वरवै रामायण' की इस ६९ छन्दोंकी पाठ-परम्परा से भिन्न ४०५ छन्दों वाली परम्परा की भी कुछ हस्तलिखित प्राचीन प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्टों में इन हस्तलिखित प्रतियों का यथेष्ट उल्लेख है और इनमें राम-कथा का विस्तार गोस्वामी तुलसीदास की काव्य-शैली के अनुरूप ही प्राप्त होता है।[1] रामचरित मानस और वरवै रामायण की प्रस्तुत प्रतियों मे केवल कथा-साम्य ही नहीं, शब्द-साम्य भी प्रचुर मात्रा में है। ऐसा प्रतीत होता है कि तुलसीदास के ग्रंथों में परिगणित 'वरवै रामायण' का यही वास्तविक रूप है। ६९ छन्दों की वरवै रामायण का पाठ केवल अलंकार निरूपण के लिए तुलसीदास द्वारा समय-समय पर लिखे गये छंदों का संकलन मात्र है।

४०५ छन्दो की वरवै रामायण की प्रतियों के आधार पर ही प्रस्तुत वरवै रामायण का पाठ निर्धारित हुआ है।

सन् १९५३ में जौनपुर के राजा साहब श्री यादवेन्द्र दत्त जी ने संवत् १८७३ की दो प्रतियों के आधार पर ४०५ छन्द-परम्परा वाली वरवा (वरवै) रामायण का प्रकाशन किया था और इसकी प्रस्तावना डॉ० हजारी प्रसाद द्विवदी ने लिखी थी। किन्तु "राजा साहब ने दोनों प्रतियों से पाठ-संकलन कर के इसका पाठ-शोधन कर दिया था"।

इसका प्रकाशन कर राजा साहब ने वास्तव में सराहनीय कार्य किया था किन्तु दोनों प्रतियों के 'पाठ-शोधन' में किसी वैज्ञानिक पद्धति का आश्रय ग्रहण न करने के कारण उसकी उपयोगिता संदिग्ध ही रह गई।

प्रस्तुत पाठ-निर्धारण में खोज मे प्राप्त प्रतियों के साथ जौनपुर के राजा साहब की दोनो प्रतियों से भी मैंने सहायता ली है जिसके लिए मैं राजा साहब के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

वरवै रामायण की प्रेस कापी तैयार करने के उपरान्त मुझे दतिया राज्य पुस्तकालय की एक प्रति 'वरवै बंध रामायन' की भी सूचना प्राप्त हुई। डिग्री कालेज, दतिया के असिस्टेण्ट प्रोफ़ेसर डा० शिव शरण शर्मा ने अनुग्रहपूर्वक मेरे पास उसकी प्रतिलिपि भेज दी। 'वरवै बंध रामायण'

की यह प्रति संवत् १९०१ की है जिसकी पुष्पिका निम्न प्रकार से है:—

"इति श्री वरमै रामायन पं० गुसांई तुलसीदास कृते उत्तर कांड संपूरनं शुभमस्तू मार्ग सुदि १३, संवत् १९०१"।

यह प्रति अधिकांशतः अशुद्ध लिखी गई है। लिपिकार ने अपना नाम नहीं दिया। प्रतिलिपि करने में अनेक स्थानों पर असावधानी और उतावलापन लक्षित होता है। अरण्यकाण्ड के १८वें बरवै की तो एक पंक्ति ही लिखने से रह गई है। मात्रा, विराम और शब्द तो अनेक स्थलों पर छूट गये हैं। यह होते हुए भी यह प्रति महत्त्वपूर्ण है। श्री शिवसिंह सेंगर ने अपने ग्रंथ शिवसिंह सरोज में 'बरवै रामायण' की जिस प्रति का संकेत किया है, उस प्रति से इस प्रति का अन्तर्सम्बन्ध किसी न किसी रूप से स्थापित होता ही है। श्री सेंगर ने 'बरवै रामायण' के जिन दो छन्दों को उदाहरण रूप में उद्धृत किया है, उनमें से एक छन्द किंचित् परिवर्तन के साथ इस दतिया की प्रति में प्राप्त होता है। वह छन्द अब तक की उपलब्ध अन्य किसी प्रति में नहीं मिला। वह छन्द अयोध्याकांड का ३१वाँ छन्द है जो श्री शिवसिंह सेंगर द्वारा इस प्रकार उद्धृत है:—

वन्दे चरन सरोजं तव रघुवीर।
मुनि ललना इव नाव मा कुरु वीर॥

यह छन्द दतिया की प्रति में इस प्रकार है:—

वन्दौं चरन सरोजं तुव रघुवीर।
मुनि घरनी यह तरनी मा कुरु वीर॥

दूसरा छंद जो श्री सेंगर ने उद्धृत किया है, वह इस प्रति में नहीं है।

सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जाय।
निसि मलीन वह निसिदिन यह बिकसाय॥

यह छन्द बरवै रामायण की लघु शाखा का पाठ है।

ऐसा प्रतीत होता है कि श्री सेंगर की प्रति किसी मूल प्रति की दो या अधिक शाखाओं में से किसी एक की प्रतिलिपि होगी और दतिया की प्रति उन्हीं शाखाओं में से किसी दूसरी की प्रतिलिपि होगी। यह इसलिए कि 'वंदे चरन सरोजं तव रघुवीर।' दोनों प्रतियों में समान छन्द है किन्तु 'सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जाय।' श्री सेंगर की प्रति में विशिष्ट छन्द है जो दतिया की प्रति में नहीं है और जिसका अन्तर्सम्बन्ध बरवै रामायण के लघु पाठ से है।

दतिया की प्रति में एक बात और भी ध्यान देने योग्य है। इसके उत्तरकांड में एक अतिरिक्त बरवै (३१वाँ) है जो अन्य प्रतियों में नहीं है:—

रघुवर चरन तरनीआ चढ़ि चित मोर।
तर भव सागर नदीआ दिन रह थोर॥

इस छन्द से तुलसीदास के अन्तिम दिनों का संकेत मिलता है। इस दृष्टि से डा० माताप्रसाद गुप्त का यह अनुमान कि 'बरवै रामायण' कवि के जीवन की उत्तरकालीन रचना है और अयोध्या की (अ) प्रति का रचना-तिथि-संकेत संवत् १६७९ समर्थित होता है। मैं स्वयं बरवै रामायण का रचना-काल संवत् १६७९ के आसपास मानने के पक्ष में हूँ। दतिया की प्रति के शेष सभी छन्द नागरी प्रचारिणी सभा काशी की प्रति से साम्य रखते हैं। मैंने उस प्रति की विशिष्टता की ओर ही संकेत किया है।

अभी तक गोस्वामी तुलसीदास की यह महत्वपूर्ण कृति हिन्दी-जगत् में सही ढंग से प्रवेश प्राप्त नहीं कर सकी। मैं विनम्रतापूर्वक यह कृति प्रस्तुत करते हुए अपने को सौभाग्यशाली समझता हूँ।

साकेत, प्रयाग
विजयादशमी, १९६७

—रामकुमार वर्मा

भूमिका

बरवै रामायण महाकवि तुलसीदास के प्रमुख ग्रंथों में है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा संवत् १९८० में प्रकाशित तुलसी-ग्रंथावली के दूसरे भाग में तीसरा ग्रंथ बरवै रामायण है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त भी 'बरवै' को महाकवि तुलसी का एक 'संग्रह ग्रंथ' ही मानते हैं।[1]

भाषा और शैली की दृष्टि से भी बरवै रामायण महाकवि तुलसीदास का ग्रंथ ज्ञात होता है, किन्तु जिस बरवै रामायण को अब तक तुलसी रचित होने की मान्यता प्राप्त है, वह संभवतः वास्तविक बरवै रामायण नहीं है। या तो वह 'बरवै' नाम से एक स्वतंत्र ग्रंथ है या वास्तविक बरवै रामायण का अत्यंत अव्यवस्थित व्यत्ययित लघु-पाठ है जिसमें तुलसी के अन्य ग्रंथों में कही गई राम-कथा का विकृत कंकाल-मात्र है। न तो उसका प्रारम्भिक भाग ही कथा-रूप से आरम्भ होता है और न अंत में ही कथा का पर्यवसान है। आलंकारिक रूप से विविध कांड स्थितियों के बिम्ब-मात्र हैं और उत्तर कांड तो कथा-रहित भक्ति का उपदेश ही है।

खोज-विवरणों में बरवै रामायण की अनेक हस्तलिखित प्रतियों का उल्लेख हुआ है। कुछ अन्य प्रतियाँ विविध स्थानों से भी प्राप्त हुई हैं। इन प्रतियों के पाठ नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित बरवै रामायण के पाठ से भिन्न हैं। इन भिन्न पाठों में जहां राम-कथा विस्तारपूर्वक वर्णित की गई है, वहां महाकवि तुलसी की कथा-विषयक प्रवृत्ति, काव्य-सुषमा और भाषा-शैली भी लक्षित हुई है। इनमें से अनेक प्रतियाँ प्राचीन भी हैं। अतः इन प्रतियों के द्वारा बरवै रामायण का एक अत्यन्त व्यवस्थित रूप प्राप्त होता है, जो बरवै रामायण के मुद्रित पाठ से बहुत भिन्न है।

---

१. तुलसीदास (डॉ० माताप्रसाद गुप्त) पृ० २४५।

इस संदर्भ में जितने प्रकार की हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हैं, उनकी कोटियों का निर्धारण आवश्यक है—

पहली कोटि (क)

पहली कोटि उन प्रतियों की है जो नागरी प्रचारिणी सभा की मुद्रित प्रति से समानता रखती हैं। नागरी प्रचारिणी सभा की मुद्रित प्रति में केवल ६९ बरवै छंद है। छंदों का विभाजन इस प्रकार है—

बालकांड	छंद १९
अयोध्याकांड	८
अरण्यकांड	६
किष्किंधाकांड	२
सुन्दरकांड	६
लंकाकांड	१
उत्तरकांड	२७
कुल–	६९ छंद

सभी प्रतियो मे कांडों के उपर्युक्त सीमा-विस्तार में लिखे गये ६९ छंद हैं। उन प्रतियों का विवरण इरा प्रकार है—

(१) यह प्रति नागरी प्रचारिणी सभा काशी मे सुरक्षित है। (प्रति संख्या २७४४।१६५३) यह पूर्ण है। इसमें पांच पत्र हैं। छन्द संख्या ६९ लिपिकाल संवत् १९०४ वि०।

आरंभ का अंश

श्री गनेस जू ॥ श्री सरसुती जू ॥ अथा लिषते ॥ श्री गुसाईं तुलसीदास कृते ॥ बरमै रामायन ॥ प्रथम बालकांड ॥

केस मुकुत सषि मरकत मनिमय होत।
हाथ लेत पुनि मुकता करत उदोत॥

अंत का अंश

जन्म जन्म जह जह तन तुलसिहि देहु।
तह तह राम निवाहव राम सनेहु ॥६९॥

पुष्पिका—इति तुलसीदास कृते उत्तर कांड
वरमै रामाइन संपुरन स्मापता ॥
कातिक ॥ सुदि ३ ॥ संवतु १९०४ ॥
मुकाम माधौगढ़ ॥ श्री सीताराम जू ॥

(२) यह प्रति नागरी प्रचारिणी सभा काशी मे सुरक्षित है। (प्रति संख्या २७४१।१६५२) प्रति पूर्ण है। इसमें पाच पत्र हैं। छन्द सख्या ६९, लिपि-काल संवत् १९०८ वि०।

आरंभ का अंश

श्री गनेश जू ॥ श्री सरसुती जू ॥ अथः लिषते ॥
श्री गुसाई तुलसीदास कृते वरमै रामायन ॥ प्रथम वालकांड॥

केस मुकुत सषि मरकत मनिमय होत।
हात लेत पुनि मुक्ता करत उदोत ॥

अंत का अंश

जन्म जन्म जह जह तन तुलसिहि देहु।
तह तह राम निवाहव राम सनेहु ॥६९॥

पुष्पिका—इति श्री तुलसीदास कृते
उत्तरकांड वरमै रामाइन संपूरन
स्मापता ॥
कार्तिक सुदि ३ ॥ संवतु १९०८॥
मुकाम माधौगढ़॥ श्री सीतारामजू ॥

(यह प्रति पहली प्रति की ही चार वर्ष वाद की गई प्रतिलिपि ज्ञात होती है।)

(३) प्राप्ति स्थान अज्ञात। लिपि काल संवत् १९०९।

छन्द संख्या	छन्द संख्या
१६	१७
१७	१८
१९	१८

इस प्रति का आरंभ इस प्रकार है।

श्री गणेशायनमः

वड़े नयन कट भृकुटी भाल बिसाल।
तुलसी मोहत मर्नाहि मनोहर बाल॥

अंत का अंश

जनम जनम जहं जहं तनु तुलसीहु देहु।
तहं तहं राम निबाहिव नाम सनेहु॥६९॥

इति श्री बरवै रामायणे श्री गुसाई
तुलसीदास जी कृते उत्तरकांडः समाप्तः॥

श्री रामो जयतु॥

ज्ञात होता है कि इस प्रति में कथा को क्रमिक रूप देने की चेष्टा की गई है। अन्य प्रतियों में जहाँ आरम्भ में सीता का सौंदर्य-वर्णन है, वहाँ इसमें पहले राम का सौन्दर्य-वर्णन है। उसके उपरान्त सीता-सौन्दर्य, धनुर्भंग और सखियों का परिहास है। इसमें कथा का विस्तार नही है, कथा-क्रम अवश्य है।

इसके अतिरिक्त इन्ही प्रतियों में बरवै रामायण का एक और पाठ मिलता है। जिसमे छन्द तो ६९ ही है किन्तु वालकाण्ड में १९ के स्थान पर २० छन्द मिलते है। यह अन्तर प्रति (४) में है।

यह छन्द जो अन्य किसी प्रति मे नही है, इस प्रकार है—

विदा होत विमलेश्वर सुतन समेत।
रहे प्रान तन सजनी कहु किहि हेत॥९॥

इस छन्द को उन्नीसवी संख्या देकर प्रति (२) के उन्नीसवें छंद—

सींक धनुष हित सिखत सकुच प्रभु लीन।
मुदित मांगि इक धनुही नृप हँसि दीन॥

को बीसवीं संख्या दी गई है। बालकाण्ड मे इस एक छन्द के बढ़ने से बरवै रामायण की कुल छन्द संख्या ६९ के स्थान पर ७० होती है किन्तु इस स्थिति को बचाने के लिए अयोध्या कांड के दो छंदों को एक ही संख्या (२२) देकर अंत में ६९ छन्दों का निर्वाह कर लिया गया है। इससे यह स्पष्ट है कि प्रति (४) में ७० छन्द हैं, यद्यपि अन्तिम छन्द संख्या ६९ ही डाली गई है।

इन प्रतियों मे छन्द व्यत्यय भी हुआ है। प्रति (५) में बालकांड का अन्त उन्नीसवे छन्द से इस प्रकार होना है—

उठी सखी हँसि मिस करि कहि मृदु बैन।
सिय रघुवर के भये उनींदे नैन॥१९॥

यह अन्तिम १९ वाँ छन्द बालकाण्ड के कथा-क्रम मे तो स्वाभाविक है किन्तु प्रति (२) और प्रति (४) मे यह अठारवाँ छन्द है। प्रति का उन्नीसवाँ और प्रति (४) का बीसवाँ छन्द (जिसका निर्देश ऊपर हो चुका है और) जिससे काण्ड समाप्त होता है, वह इस प्रकार है—

सींक धनुष हित सिखन सकुच प्रभु लीन्ह
मुदित माँगि इक धनुहीं नृप हँसि दीन॥

काशी नागरी प्रचारिणी सभा मे प्रकाशित बरवै रामायण के बालकांड में भी यही अन्तिम छन्द है किन्तु प्रति (५) मे यह अन्तिम छन्द न होकर आठवां छन्द है जो प्रसंगत: अनुकूल भी प्रतीत होता है। इस भाँति प्रति (५) का आठवां छन्द, प्रति (२) का उन्नीसवां और प्रति (४) का बीसवाँ है और प्रति (२) और प्रति (४) का अट्ठारहवाँ छन्द प्रति (५) का उन्नीसवाँ छन्द है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि किंचित् पाठान्तर और छन्द-व्यत्यय होते हुए भी उपर्युक्त पाँचों प्रतियाँ एक ही कोटि की प्रतियाँ है क्योंकि वर्णन

शैली और प्रसंगों की एकरूपता के साथ छन्द-संख्या ६९ ही रखी गई है। ऐसा ज्ञात होता है कि इन प्रतियों की सहायता लेकर प्रति (२) के आधार पर ही नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ने बरवै रामायण का प्रकाशन किया है। इस शाखा में बरवै रामायण का ६९ छन्दों में लघु पाठ होने के कारण इन प्रतियों को (ल) संज्ञा दी गई है।

दूसरी कोटि (ख)

खोज सम्बन्धी विवरण-ग्रंथों ने 'बरवै रामायण' के वास्तविक और विस्तृत रूप पर प्रकाश पड़ा है। इस सम्बन्ध में अनेक प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं जो ६९ छन्दों की परम्परा वाली प्रतियों से अनेक रूपों में भिन्न हैं। प्रस्तुत खोज के आधार पर प्राप्त प्रतियों में ४०५ छन्दों की एक विशिष्ट परम्परा है जिसमें राम-कथा का सम्पूर्ण विस्तार बरवै छन्दों में क्रम से उपस्थित किया गया है। ६९ छन्दों वाली परम्परा न तो राम-कथा को अभिव्यक्ति दे सकी है न उसके आदि में ग्रन्थ-रचना का संकेत अथवा मंगलाचरण है। साथ ही उसमें बरवै की आलंकारिक प्रवृत्ति इतनी साग्रह है कि तुलसी की सहज अभिव्यक्ति से उसका मेल कम हो पाता है। ऐसा ज्ञात होता है कि तुलसी ने मात्र अलंकार निरूपण के लिए ही वे बरवै छन्द लिखे हैं।* संभव है, अपने समकालीन कवि रहीम खानखाना का 'बरवै नायिकाभेद' अथवा महाकवि केशव की 'रामचन्द्रिका' की प्रवृत्ति तुलसी में भी परोक्ष रूप से काम कर रही हो। तुलसी 'प्राकृत' विषयों पर कविता नहीं लिखते थे। अतः उन्होंने अलंकार अथवा काव्य के अन्य अंगों के निरूपण के लिए जो छन्द लिखे हों

---

*इसके कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं:-

केस मुकुत सखि मरकत मनिमय होत।
हाथ लेत पुनि मुकुता करत उदोत ॥ १ ॥ (अतद्गुण)
सम सुवरन सुखमाकर सुखद न थोर।
सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर ॥ २ ॥ (व्यतिरेक)

वे अपने इष्ट राम और सीता मे ही सम्बन्ध रखने वाले हों। इस भाँति उनके मुक्त बरवै छन्दों को बाद के भक्तों ने 'बरवै रामायण' का रूप दे दिया हो। किन्तु ४०५ छन्दों वाली परम्परा में राम-कथा का निर्वाह जितनी सहजता से

सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जाय।
निसि मलीन वह, निसिदिन यह विगसाय॥ ३॥ (व्यतिरेक)
बड़े नयन, कटि, भृकुटी भाल विसाल।
तुलसी मं.हत मनहि मनोहर बाल॥४॥ (समुच्चय)
चंपक हरवा अंग मिलि अधिक सोहाय।
जानि परै सिय हियरे जब कुंभिलाय॥५॥ (उन्मीलित)
सिय तुव अंग रंग मिलि अधिक उदोत।
हार बेलि पहिरावो चंपक होत॥६॥ (तद्गुण)

... ...

गरब करहु रघुनंदन जनि मन माँह।
देखहु आपनि मूरति सिय के छाँह॥१७॥ (प्रतीप)

.. ..

द्वै भुज कर हरि रघुवर सुन्दर वेष।
एक जीभ कर लछिमन दूसर शेष॥२७॥ (अभेद रूपक)
वेद नाम कहि अंगुरिन खंडि अकास।
पठयो सूपनखाहि लषन के पास॥२८॥ (कूट काव्य)

... ...

जटा मुकुट कर सर धनु संग मरीच।
चितवनि बसत कनिखयनु अखियनु बीच॥३०॥ (स्वभावोक्ति)

... ...

अब जीवन कै है कपि आस न कोय।
कनगुरिया कै मुंदरी कंकन होय॥३८॥ (अतिशयोक्ति)

सभी छन्दों में आलंकारिक दृष्टि देखी जा सकती है।

हुआ है, उसमे सन्देह के लिए कम स्थान रह जाता है। हिन्दी-साहित्य के साहित्यकार तथा तुलसी के मर्मज्ञ इस पाठ के सम्बन्ध में सर्वथा मौन है। इस प्रकार सामान्यतः बरवै रामायण के पाठ की दो पृथक् परम्पराएँ है, प्रथम का सम्बन्ध ६९ छन्दों मे है, तथा दूसरी का ४०५ छन्दों से।

दूसरी कोटि की प्रतियों का विवरण इस प्रकार है—

(६) यह प्रति हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कृपा से देखने को प्राप्त हुई। यह संवत् १८९५ वि० मे श्री अयोध्यादास ने निज पाठार्थ लिखी थी। यह प्रति पूर्ण है।

इसमे काण्डों का विस्तार निम्न प्रकार से है—

बालकाण्ड	छन्द संख्या १३८
अयोध्याकाण्ड	छन्द संख्या ८९
अरण्यकाण्ड	छन्द संख्या ४४
किष्किधाकाण्ड	छन्द संख्या १६
सुन्दरकाण्ड	छन्द संख्या १५
लंकाकाण्ड	छन्द संख्या ४९
उत्तरकाण्ड	छन्द संख्या ५४
	कुल संख्या ४०५

इस प्रति का आरंभ इस प्रकार है—

अथ बरवै रामायण लिख्यते।

श्री मते रामानुजाय नमः॥

गन नायक वरदायक देव मनाए।
बिघन बिनासक, बरन प्रकासक होहु सहाए॥

अंत का अंश इस प्रकार है—

सोई गुनवंत ज्ञान रत परम बिचार।
तुलसिदास के स्वामी परम उदार॥५४॥

पुष्पिका—इति बरवै रामायने तुलसी कृते उत्तर काण्ड सप्तमो सोपान समाप्त॥

लि: अजोव्यादास निज पाठार्थ । सं० । १८९५
मी० मा० सु० १२ वारःर. . .श्री बलदेव (व) मंदिरे॥

श्री अजोव्यादास के निज पाठार्थ लिखित होने के कारण इस प्रति की संज्ञा (अ) है।

(७) यह इस विवरण क्रम की सातवीं प्रति है। यह महाराज बनारस के पुस्तकालय मे है, नागरी प्रचारिणी सभा काशी के १९०३ के खोज-विवरण में उल्लिखित हुई है। इसकी विडा संख्या—४८ तथा पुस्तक संख्या—११४।४५ है। यह प्रति कागज पर है जिसका आकार "१०.३ × ५" है। पत्र संख्या—२४, पंक्ति प्रति पृष्ठ—७, अक्षर प्रति पंक्ति—४५, स्थिति-पूर्ण, छन्द संख्या—४०५, लिपि-नागरी, रचना काल-अज्ञात, लिपिकाल—स० १८७३ वि०।

इसमें कांडो का विस्तार निम्न प्रकार से है—

बाल काण्ड	छन्द संख्या	१३७
अयोध्या काण्ड	छन्द संख्या	१२०
अरण्य काण्ड	छन्द संख्या	४८
किष्किधा काण्ड	छन्द संख्या	१६
सुन्दर काण्ड	छन्द संख्या	३४
लंका काण्ड	छन्द संख्या	२०
उत्तर काण्ड	छन्द संख्या	३०
	कुल संख्या	४०५

श्री गणेशाय नमः । अथ बरवा रामायन लिषते॥

आरंभ का अंश बरवा

गन नायक वर दायक देव मनाय।
विघन विनास प्रकासक होउ सहाय॥

अंत का अंश

सीता राम लषन संग मुनि के साज।
तुलसी चित चित्रकूटहिं बस रघुराज॥४०५॥

आरंभ के दो पत्र न होने के कारण प्रति का आरंभ १६ वें छन्द से मिलता है जो इस प्रकार है:–

अस्तुति करि सुर गमने निज निज लोक।
प्रगटे प्रभु हरि लीन्हें सुर द्विज सोक।।१६।।

अंत का अंश इस प्रकार है:—

तुलसी कहेउ राम जस जो मन बुधि।
सोवत बीते काल वहु अब करु सुधि।।७।।

पुष्पिका—इति श्री गुंसाई तुलसीदास कृत
वरमै ।।रामाइन।। उत्तर काण्ड।।
संपूरन ।।स्मापता।। १७ ।।
मिती ।।सुभ।। माह।। बदि ८।।भौमे।। संवत् १९०८

इस प्रति के वाल काण्ड मे राम-कथा का वर्णन-विस्तार प्रति (६) और (७) की भाँति ही है, यद्यपि कुछ छन्द छोड़ दिये गये हैं। अयोध्या काण्ड मे भी विस्तार मे कमी की गई है। परवर्ती काण्डों में यह प्रति लगभग वही रूप ले लेती है जो (ल) कोटि की प्रतियो मे है। अरण्य काण्ड से छन्द-संगति प्रति (७) से अवश्य हो जाती है। कथा का विस्तार मध्यम रूप से होने के कारण इस प्रति को सज्ञा (म) दी गई है।

तीसरी कोटि (ग)

(११) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों के त्रयोदश वार्षिक विवरण (सन् १९२६-१९२८) मे वरवै रामायण की एक प्रति का उल्लेख है जो महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़ (अवध) में सुरक्षित है। प्रतापगढ़ से प्राप्त होने के कारण इस प्रति को (प्र) संज्ञा दी गई है। इसका लिपिकाल संवत् १७९७ वि० है। विवरण में यद्यपि इसे पूर्ण कहा गया है तथापि इसका कथा-भाग आदि से आरंभ न होकर मध्य से आरंभ होता है। यह नीचे द्रष्टव्य है:–

आदि

श्री रामो जयति श्री राम सीता। श्री गणेशाय नमः॥

राग विरवैं

सीय राम अरु लषन चले मग जाहिं।
ग्राम नारि नर निरषत रूय (?) लुभाहिं॥
सजल नयन तन पुलकित गदगद वैन।
कहहिं निछावर करिये कोटिक मैन॥
जेहि जेहि गाऊ गोड़वा निकसहिं जाइ।
देप वैह (?) के मनहिं लेहि संग लाइ॥
सोभा कहि नहिं सकहि देषि मन मोह।
जनु वसंत रति सहित मदन वनु सोह॥

अंत

(तुलसी) सुमिरत राम सुलभ फल चारि।
वेद पुरान पुकारत कहत पुकारि॥
राम नाम पर तुलसी नेह निवाहु।
येहि ते नहीं अधिक कछु जीवन लाहु॥
दोष दुरित दुष दारिद दाहक नाम।
सकल सुमंगल दायक तुलसी राम॥

अधूरी कथा का यथा-सम्भव निर्वाह करते हुए भी प्रारंभ के छन्द वरवैं रामायण की अन्य किसी भी प्रति में नहीं पाये जाते। अंत के तीन छन्द (ल) कोटि की प्रति (२), (४) और (५) प्रतियों में ५६, ५७ और ५८ छन्दों के रूप में अवश्य प्राप्त होते हैं। वरवैं रामायण की मुद्रित प्रति में भी इसी क्रम में ये छन्द हैं। इस प्रति का निर्देश डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने भी अपने ग्रन्थ में किया है।[1] वे लिखते हैं—

ज्ञात प्रतियों में सब से प्राचीन कदाचित् सं० १७९७ की है जो प्रतापगढ़ (अवध) के राजकीय पुस्तकालय में है।...मिलने पर पता चला है कि

१. तुलसीदास—डॉ० माता प्रसाद गुप्त, पृष्ठ २०६-२०७।

मुद्रित पाठ के बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किंधा, सुन्दर तथा लंका काण्ड तक के प्रथम बयालिस बरवै तथा उत्तर काण्ड के ५९-६९ बरवै इस हस्त-लिखित प्रति के पाठ में नही मिलते। इनके स्थान पर इस प्रति में पच्चीस अन्य बरवै मुद्रित पाठ के ४३-५८ बरवै के पूर्व आते है। दोनों के उदाहरण के लिए हम निम्नलिखित को ले सकते है, अन्तिम मुद्रित पाठ का तैंतालीसवां है। शेप उक्त प्रति के पाठ के अपने हैं[1] —

(न) जो पै राम न जानेउ सहज सुभाइ।
सत सुरेस सम राजत जीवन जाइ॥
देखि राम छवि बिबुध गए सब सोक।
रचे परन त्रिन साल गए निज लोक॥
सोहत परन कुटी तर सीता राम।
लषन समेत बसहु तुलसी उर धाम॥
(ल) चित्रकूट निज तीर सुतरु तर वास।
लषन राम सिय सुमिरहु तुलसीदास॥

इस पाठ के जो पच्चीस बरवै मुद्रित पाठ में नही मिलते वे इसी आधार पर गोस्वामी जी की रचनाओं से कदाचित् बहिष्कृत नही किये जा सकते, क्योंकि शैली तो उनकी प्रमुख रूप से तुलसीदास जी की ही दिखाई देती है।'

डॉ० माता प्रसाद गुप्त के कथन के अनुसार इस प्रति में २५+१६ बरवै (४१ छन्द) ज्ञात होते है। उपर्युक्त ११ प्रतियों मे बरवै रामायण के पाठ की तीन कोटियाँ (ल), (न) तथा (प्र) प्राप्त होती है जिनमें अनेक शाखाएँ देखी जा सकती है। इनमे परस्पर शुद्ध और संकीर्ण सम्बन्ध भी लक्षित होते है।

---

१. आरंभ के तीन छन्द (न) प्रति में प्राप्त होते है जिनकी क्रम संख्या १८९, १९०, १९१ है।

बरवै रामायण की दूसरी कोटि का पाठ महत्वपूर्ण है जिसमें ४०५ छन्द राम-कथा का सम्यक् निरूपण करते हैं। इस कोटि में तीन प्रतियों द्वारा तीन शाखाओं का स्पष्ट संकेत मिलता है। (न), (अ) और (म) प्रतियाँ वृहत् पाठ का एक कुतूहल पूर्ण रूपान्तर प्रस्तुत करती हैं। तीनों प्रतियाँ वाल काण्ड और अयोध्या काण्ड में न्यूनाधिक छन्दों में एक ही पाठ उपस्थित करती हैं किन्तु परवर्ती काण्डों में (न) और (अ) प्रतियाँ स्वतंत्र छन्दों में (ऐसे छन्दों में जो पाठ की दृष्टि से एक दूसरे से नहीं मिलते) कथा का विस्तार करती हैं। (म) प्रति जो वालकाण्ड और अयोध्या काण्ड में पाठ की दृष्टि से (अ) से मिलती है, परवर्ती काण्डों में अत्यन्त संक्षिप्त रूप ग्रहण कर लेती है और अपने थोड़े छन्दों (अरण्य ३, किष्किंधा ४, सुन्दर ४, लंका ३, उत्तर ७=२१) का पाठ-साम्य केवल (अ) प्रति से ही करती है। परोक्षतः (न) से उसका सम्वन्ध केवल वाल काण्ड और अयोध्या काण्ड में ही देखा जाता है—सो भी ऐसे छन्दों से जो (अ) प्रति में हैं। साथ ही (म) प्रति में कुछ ऐसे भी छन्द हैं (छन्द वाल काण्ड ११७) जो (अ) के १२७-१२८ की प्रथम पंक्तियों को जोड़कर लिखे गये हैं। अरण्य काण्ड के पहले छन्द में (अ) प्रति के चौथे छन्द से पंक्ति भेद कर दिया गया है। इस प्रकार के पंक्ति-भेद (अ) प्रति के पाठ से अनेक स्थलों पर हैं। उत्तर काण्ड के दो छन्द ६ और ७ (अ) प्रति से विल्कुल भिन्न हैं जो एक अलग प्रशाखा का संकेत करते हैं। किन्तु यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि (म) प्रति अधिकांश रूप से (अ) प्रति का ही अनुसरण करती है। यह निश्चित ज्ञात होता है कि (अ) प्रति की किसी शाखा का ही वह मध्यम रूपान्तर हो। यह रूपान्तर वृहत् पाठ-परम्परा से ही अनुवंधित है।

किंचित् पाठ-साम्य की दृष्टि से हम (ल) और (प्र) कोटियों पर भी विचार करें। यह पहले ही लिखा जा चुका हैकि राम-कथा की दृष्टि से (ल) कोटि का कोई महत्व नही है। राम और सीता को लेकर उसमें कुछ प्रसंगों के आलंकारिक चित्रमात्र है। केवल ६९ छंदों में राम सम्वन्धी कुछ प्रसंगो का एक लघु रूपान्तर है। पाठ-साम्य की दृष्टि से ६९ छन्दों में से केवल एक छन्द

(अरण्य २८) (न) प्रति के (अरण्य २८१) और (अ) प्रति के (अरण्य २८) से मिलता है। १३ छन्द उत्तर काण्ड के (४४, ४६, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ६३, ६४ और ६७) (न) प्रति के अयोध्या काण्ड के (क्रमशः १९२, १९३, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०२, २०१, २०३, २०४, २०५) से और (अ) प्रति के अयोध्या काण्ड के (क्रमशः ५५, ५६, ५८, ५९, ६०, ६१, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८) १३ छन्दों से पाठ-साम्य रखते हैं। इस भाँति (ल) और (न) में केवल १४ छन्दों की एकरूपता है यद्यपि उनमें १३ छन्दों का स्थान-विपर्यय है। (ल) का उत्तर-काण्ड, (न) का अयोध्या काण्ड है।

इसी भाँति प्रशाखा (प्र) की प्रति अपने पूर्वार्द्ध में (न) प्रति से साम्य रखती है और उत्तरार्द्ध मे (ल) प्रति से। किन्तु आदि के छन्द ऐसे भी है जो किसी अन्य प्रति में प्राप्त नही होते। फलस्वरूप पाठ-साम्य की दृष्टि से बरवै रामायण की प्रतियो का वंश-वृक्ष कुछ इस प्रकार होगा—
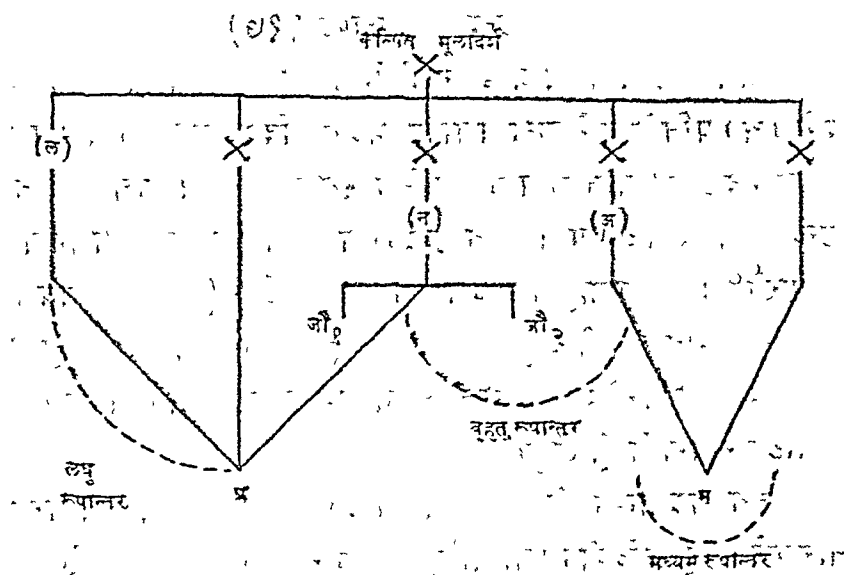
इस वंशवृक्ष में वृहत् रूपान्तर की (न) प्रति अधिक शुद्ध और मूलादर्श के निकट ज्ञात होती है। (न) प्रति अपने पाठ में (जौ १) और (जौ २) से समर्थित है और काव्य-पक्ष से गोस्वामी तुलसीदास की शैली के अनुरूप है। ऐसी स्थिति में (न) प्रति के आधार पर जिसमें (जौ १) और

(जौ २) अन्तर्भूत है, वरवै रामायण के पाठ का सम्पादन करना समीचीन है।

वरवै रामायण की रचना तिथि——

प्राप्त प्रतियों मे केवल (अ) प्रति ही है जिसमें ग्रन्थ की रचना-तिथि का उल्लेख है। यह उल्लेख आरंभ में ८ वे और ९ वे छन्द मे है——

९ ७ ६ १
षंड दीप रस इंदुहि संमत जान।
दामोदर सुत नन्दन (?) छति (सित?) तिथि वेद बखान॥८॥
वलि प्रोहित मीन दुघरि (या?) वालव देषि।
तुलसी करि प्रभु ध्यानहिं रामहि पेषि॥९॥
(षंड = ९, दीप (द्वीप) = ७, रस = ६, इन्दु = १)

अंकानां वामतो गतिः के अनुसार संवत् १६७९।

इसका तात्पर्य यही है कि संवत् १६७९ में दामोदर सुत (तुलसीदास) ने छिति (सित) शुक्ल। प्रतिपदा मे शुक्र (वलि प्रोहित) ने जव मीन राशि मे दो घड़ी व्यतीत की तव वालव योग मे तुलसी ने ध्यान मे राम को देख कर यह ग्रन्थ निर्मित किया। तुलसीदास की मृत्यु संवत् १६८० मे हुई। इस प्रकार तुलसीदास ने अपनी मृत्यु के एक वर्ष पूर्व इस ग्रन्थ की रचना की। तिथि का इतना स्पष्ट उल्लेख विवेच्य विषय है।

कवि-परिपाटी के अनुसार अंको का उल्लेख सांकेतिक शब्दों से किया जाता है। अंको के साथ साथ नामो को भी पर्याय रूप से लिखा जाता है। दामोदर पर्याय है मुरारि का और वलि प्रोहित पर्याय है शुक्र का। पं० रामचन्द्र शुक्ल ने 'तुलसी चरित' के आधार पर मुरारी मिश्र को तुलसीदास का पिता निर्दिष्ट किया है। इस छन्द की दृष्टि से 'तुलसी चरित' की प्रामाणिकता पर फिर से विचार होना चाहिए।

उपर्युक्त रचना-तिथि के आधार पर वरवै रामायण तुलसीदास की अन्तिम रचना सिद्ध होती है। रचना-काल के सम्बन्ध मे अभी तक तीन मतों का उल्लेख हुआ है——

१. श्री सद्गुरुशरण अवस्थी बरवै रामायण को तुलसीदास की 'पूर्व कालिक कृतियों' मे मानते हैं क्योंकि 'इस कृति में कवि की अलंकार-प्रियता दर्शित होती है।'[१]

२. डॉ० श्यामसुन्दर दास ने लिखा है कि 'बरवै की रचना गोस्वामी जी ने रहीम के बरवै देख कर सं० १६६९ मे की थी।'[२]

३. डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने लिखा है कि 'बरवै मे कुछ ऐसे छन्द आते हैं जिनमे निकट आती हुई मृत्यु की धुँधली प्रतिच्छाया से कवि प्रभावित दिखाई पड़ता है। इस प्रकार के कुछ छन्द निम्नलिखित हैं—

> भरत कहत सब सब कहँ सुमिरहु राम।
> तुलसी अब नहिं जपत समुझि परनाम॥
> तुलसी राम नाम सम मित्र न आन।
> जो पहुँचाव रामपुर तन अवसान॥
> नाम भरोस नाम बल नाम सनेहु।
> जनम जनम रघुनंदन तुलसिहि देहु॥
> जनम जनम जहँ जहँ तन तुलसिहि देहु।
> तहँ तहँ राम निबाहब नाम सनेहु॥'[३]

डॉ० माता प्रसाद गुप्त का अनुमान उपर्युक्त रचना-तिथि से मेल खाता है। अतः बरवै रामायण की रचना तिथि सं० १६७९ निश्चयात्मकता की ओर संकेत करती है। तुलसीदास की रचना-शैली की दृष्टि से भी बरवै रामायण की शैली पुष्ट और प्रौढ़ है। अतः यह रचना निश्चित रूप से तुलसीदास की काव्य-रचना में उत्तर-काल की है।

---

१. तुलसी के चार दल—(सद्गुरुशरण अवस्थी), पृष्ठ १०२।
२. गोस्वामी तुलसीदास—(श्यामसुन्दरदास) पृष्ठ, १००।
३. तुलसीदास—(डॉ० माता प्रसाद गुप्त) पृष्ठ, २४६।

सम्पादन के लिए प्रयुक्त प्रतियाँ

बरवै रामायण का पाठ जो तीन कोटियो में विभाजित है, उनमें ग्यारह प्रतियों का उल्लेख हुआ है। इन ग्यारह प्रतियों में पाँच पहली कोटि में है, पाँच दूसरी कोटि में और एक तीसरी कोटि मे है। इन प्रतियो के संपरीक्षण से जो उनका वंश-वृक्ष निरूपित हुआ है, उसके आधार पर तीन प्रतियाँ सम्पादन के कार्य मे विशेष उपयोगी सिद्ध होती हैं। वे प्रतियाँ प्रदत्त सज्ञा के अनुसार 'न', 'अ' और 'म' प्रतियाँ है। इन प्रतियो के अतिरिक्त इनमे पृथक् परम्परा की ६९ छन्दो वाली 'ल' प्रति का भी उपयोग किया गया है, यद्यपि छन्द-साम्य की दृष्टि से उनका महत्व अधिक नही है।

आधेय प्रतियों के समान छन्दों की स्थिति

उपर्युक्त तीन प्रतियाँ बरवै रामायण के वृहत् पाठ से पूर्णत या अशत. संबन्धित है किन्तु इसका यह अर्थ नही है कि इनमे छन्दो की पूर्णरूपेण समानता वर्तमान है। इनके अनेक छन्द परस्पर भिन्न हैं और भिन्नता की इस स्थिति से पाठ-सपादन पर पर्याप्त प्रभाव पडा है। इनके छन्दों की वास्तविक संख्या इस प्रकार है—

छन्दों की वास्तविक संख्या

काण्ड	प्रति (न)	प्रति (अ)	प्रति (म)	प्रति (ल)
बाल काण्ड	१३७	१३८	१२०	१९
अयोध्या काण्ड	१२०	८९	२५	८
अरण्य काण्ड	४८	४४	३	६
किष्किंधा काण्ड	१६	१६	४	२
सुन्दर काण्ड	३४	१५	४	६
लंका काण्ड	२०	४९	३	१
उत्तर काण्ड	३०	५४	७	२७
कुल	४०५	४०५	१६६	६९

इस सारिणी से स्पष्ट है कि प्रति (न) और प्रति (म) एक ही परम्परा का अनुसरण करती हुई ज्ञात होती है। प्रति (म) मे संक्षिप्तीकरण की प्रवृत्ति लक्षित होती है और प्रति (ल) विविध काण्डो के अनुपात रहित परिमाण से आक्रान्त है। प्रति (न) और प्रति (अ) जो एक ही परम्परा से पोषित ज्ञात होती है, उनके छन्दो में कितनी समानता है, यह देखना उचित है।

प्रति (न) और प्रति (अ) में समान रूप से प्राप्त होने वाले छन्दों की संख्या

काण्ड	प्रति (न) कुल संख्या	प्रति (न) समान संख्या	प्रति (अ) कुल संख्या	प्रति (अ) समान संख्या
बाल काण्ड	१३७	१३६ छन्द संख्या १०६ (अ) प्रति में नही है।	१३८	१३६ छन्द संख्या ८ और ९ (न) प्रति मे नहीं है।
अयोध्या काण्ड	१२०	४२ (१३८-१४९ = १२ (१७७-२०५ = २९ २२३ — १ अतिरिक्त छन्द ४२ ७८	८९	४२) १-१२ = १२ २७-५५ = २९ ६६ = १ अतिरिक्त छन्द ४२ ४७
अरण्य काण्ड	४८	४ (२६०, २८१, २९३, २९९) अतिरिक्त छन्द ४४	४४	४ (४, १४ १७, ३० = ४ अतिरिक्त छन्द ४०
किष्किंधा काण्ड	१६	×	१६	×
सुन्दर काण्ड	३४	×	१५	×
लंका काण्ड	२०	×	४९	×
उत्तर काण्ड	३०	×	५४	×
कुल संख्या	४०५	१८२	४०५	१८२

इस भाँति यद्यपि (न) और (अ) प्रतियो में छन्द संख्या ४०५ समान है किन्तु समान रूप से प्राप्त होने वाले छन्दो की संख्या (१३६+४२+४) = १८२ है। २२३ छन्द दोनों प्रतियो मे अलग-अलग पाठ-भेद से लिखे गये

है। समानता रखने वाले छन्द दोनों प्रतियों के वाल काण्ड में लगभग शत प्रतिशत है। अयोध्या काण्ड में (न) प्रति की छन्द-संख्या में लगभग ३५ प्रतिशत और (अ) प्रति की छन्द-संख्या मे लगभग ५० प्रतिशत है। अरण्य काण्ड मे (न) प्रति की छन्द-संख्या मे ८.३ प्रतिशत और (अ) प्रति की छन्द-संख्या मे ९ प्रतिशत है। किष्किंधा से उत्तर काण्ड तक दोनों प्रतियाँ अलग-अलग छन्दों में लिखी गई है। समान छन्दों का एकदम अभाव है। पाठ की दृष्टि से (न) प्रति के छन्द (अ) प्रति के छन्दों की अपेक्षा तुलसीदास की काव्य-शैली के अधिक समीप है।

(न) प्रति और (म) की समानता पर विचार करने के उपरान्त (न) प्रति और (म) प्रति की समानता पर भी एक दृष्टि डाल लेना उचित होगा। प्रति (न) और प्रति (म) मे समान रूप से प्राप्त होने वाले छन्दों की सख्या

काण्ड	प्रति (न) कुल संख्या	समान संख्या	प्रति (म) कुल संख्या	समान संख्या
वाल काण्ड	१३७	—	१२०	१६-१२०
		१६-१०५=९०	१-१५ तक	
		१०७-११३=७	खडित	=१०५
		११५, १२०=२		
		१२३, १२४, १२७		
		१२९, १३४, १३५		
		१०५		
अयोध्या काण्ड	१२०	१३८-१४०=३	२५	१-६=६
		१४२,१४४,१४५,=३		१४-१७=४
		१७७, १७८=२		१०
		१८५, १८७=२		
		१०		
अरण्य काण्ड	४८	२६०, ३०२=२	३	१-३=३
		३०३=१		
		३	३	३
किष्किंधा काण्ड	१६	×	४	×
सुन्दर काण्ड	३४	×	४	×
लका काण्ड	२०	×	३	×
उत्तर काण्ड	३०	×	७	×
कुल	४०५	११८	१६६	११८

(न) प्रति और (म) प्रति में अरण्य काण्ड के वाद लगभग वैसा ही पार्थक्य है जैसा (अ) प्रति में है। पूर्व के वाल काण्ड, अयोध्या काण्ड और अरण्य काण्ड में जो समान छन्द मिलते हैं (वाल काण्ड मे १०५, अयोध्या में १० और अरण्य में ३) उनकी संख्या ११८ है। (न) प्रति के वाल काण्ड में समान छन्दो की संख्या लगभग ८० प्रतिशत है, और (म) प्रति में लगभग ९० प्रतिशत। अयोध्या काण्ड मे क्रमश: ८ प्रतिशत और ४० प्रतिशत है, अरण्य काण्ड में यह प्रतिशत (न) प्रति में लगभग ६ और (म) प्रति मे शत प्रतिशत है। अरण्य काण्ड से लेकर उत्तर काण्ड तक (न) प्रति के १०० छन्द और (म) प्रति के २१ छन्द एकदम एक दूसरे से भिन्न हैं।

अव (अ) प्रति और (म) प्रति मे समान-छन्दों की संख्या देख लेना चाहिए।

प्रति (अ) और प्रति (म) के समान छन्द

काण्ड	प्रति (अ) कुल संख्या	समान संख्या	कुल संख्या	प्रति (म) समान संख्या
वाल काण्ड	१३८	१०५	१२० छन्द १ से १५ तक खंडित	१६-१२० १०५ छन्द
अयोध्या काण्ड	८९	२५	२५	१-२५ २५ छन्द
अरण्य काण्ड	४४	३	३	१-३ ३ छन्द
किष्क्धा काण्ड	१६	४	४	१-४ ४
सुन्दर काण्ड	१५	४	४	१-४ ४ छन्द
लंका काण्ड	४९	३	३	१-३ ३ छन्द
उत्तर काण्ड	५४	५	७	१-५ ५ छन्द
कुल	४०५	१४९	१६६	१४९

उपर्युक्त सारिणी से ज्ञात होता है कि (अ) और (म) प्रतियाँ अपनी परम्परा में बहुत साम्य रखती हैं। (न) प्रति और (अ) प्रति तथा (न) प्रति और (म) प्रति में अरण्य काण्ड के बाद जैसा पार्थक्य (अ) और (म) प्रतियों में नहीं है। देखा तो यह जाता है कि (म) प्रति के अन्तिम दो छन्दों को छोड़कर समस्त छन्द (अ) प्रति में प्राप्त हो जाते हैं। (न) प्रति के आरंभिक (छन्द १ से १५ छन्द तक) खंडित अंश भी उपर्युक्त साम्य के आधार पर (अ) प्रति के ही छन्द अनुमानित किये जा सकते हैं। (म) प्रति में रचना-तिथि सम्बन्धी (अ) प्रति के छन्द अवश्य छोड़ दिये गये होंगे क्योंकि (न) प्रति (जिसमें रचना सम्बन्धी छन्द नहीं हैं) (म) प्रति के छन्द-क्रम से समानता रखती है। (न) प्रति के बाल काण्ड का १६वां छंद (म) प्रति के बाल काण्ड का भी १६वाँ छन्द है। अतः (म) प्रति में बाल काण्ड के अंतर्गत रचना-तिथि के दो छंद और उत्तर काण्ड के अंतर्गत अंतिम दो छन्द छोड़कर समस्त छंद (अ) प्रति में प्राप्त हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि (म) प्रति, (अ) प्रति के किसी रूपान्तर का ही प्रतिरूप है। (देखिए हस्तलिखित प्रतियों का वंश-वृक्ष)।

अब यह देखना शेष है कि (न), (अ) और (म) प्रतियों में समष्टि रूप से समान-छन्दों की संख्या कितनी है। यह निम्नलिखित सारिणी से ज्ञात होता है।

	(न) प्रति	(अ) प्रति	(म) प्रति
बाल काण्ड	१०५	१०५	१०५
अयोध्या काण्ड	१०	१०	१०
आरण्य काण्ड	३	३	३
किष्किधा काण्ड	×	×	×
सुन्दर काण्ड	×	×	×
लंका काण्ड	×	×	×
उत्तर काण्ड	×	×	×
	११८	११८	११८

अतः वरवै रामायण की समस्त शाखाओं की समस्त प्रतियों में विविध काण्डों में ११८ छन्द समान है।

सापेक्ष्य दृष्टि से देखने पर (न) प्रति और (अ) प्रति में १८२ छन्द समान है, (न) प्रति और (म) प्रति में ११८ छन्द समान है तथा (अ) और (म) प्रति मे १४९ छन्द समान है। सारिणी से यह भी ज्ञात होता है कि बाल काण्ड और अयोध्या काण्ड के कथा-विस्तार में (अ) प्रति (न) प्रति का अनुसरण कर रही है तथा (म) प्रति कथा-संक्षेप में (अ) प्रति को आदर्श मान रही है क्योंकि अरण्य काण्ड के अनन्तर (न) प्रति और (अ) प्रति मे जो पार्थक्य है यह (अ) प्रति और (म) प्रति मे नही है। बाल काण्ड और अयोध्या काण्ड मे (म) प्रति (न) प्रति की अपेक्षा (अ) प्रति का ही अनुसरण करती ज्ञात होती है।

प्रतियो के अन्तर्सम्बन्ध की दृष्टि से निम्नलिखित रेखा चित्र छन्दों की स्थिति स्पष्ट करता है—
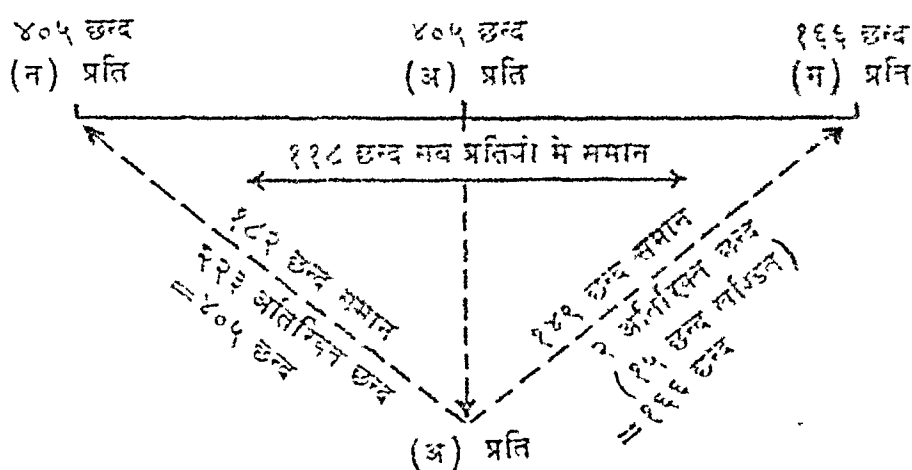
सम्पादन के संदर्भ में (ल) शाखा की स्थिति

वरवै रामायण का लघु-पाठ जिसे (ल) संज्ञा दी गई है, सम्पादन की दृष्टि से विशेष महत्व नही रखता। इसमे केवल ६९ छन्द है जो स्फुट या मुक्तक कहे जा सकते है। घटनाओ के क्रमिक-विकास की दृष्टि से कथा-प्रवाह का रूप नही रखते। ६९ छन्दों मे केवल १ छन्द अरण्य काण्ड में तथा

१३ छन्द जो (ल) शाखा के उत्तर काण्ड में है, (न) और (अ) प्रतियो के अयोध्या काण्ड से पाठ-साम्य रखते है। अरण्य काण्ड का १ छन्द कूट-काव्य का उदाहरण है तथा लंका काण्ड के १३ छन्द केवल उपदेश-परक है। अतः बरवै रामायण के वृहत्-पाठ में उनकी कोई विशेष उपयोगिता नहीं समझी गई। इसी प्रकार (प्र) प्रति भी पाठ-संदर्भ में कोई महत्व नही रखती हुई ज्ञात होती।

पाठ-मिलान के सन्दर्भ में (न), (अ) और (म) तीनों शाखाओं की प्रतियों में समान ११८ छन्दों के आधार पर प्रामाणिक पाठ खोजने का प्रयत्न किया गया है। इसके पश्चात (न) और (अ) के १८२ समान तथा (म) से पृथक् छन्दों का परस्पर पाठ-मिलान किया गया है। प्रति (न) के शेष २२३ छन्दों का कोई भी पाठान्तर नही मिलता। यही दशा प्रति (अ) के शेष २२३ अलग छन्दों की है जिनकी पाठ-शुद्धि (म) प्रति में समान मिलने वाले छन्दों के आधार पर की गई है और उसका उपयोग (न) प्रति के लिए किया गया है।

मूल-शाखा के पाठ का स्वरूप

प्रस्तुत सम्पादन में मुख्यतः इन्हीं तीनों प्रतियों (न), (अ) और (म) का उपयोग किया गया है। ६९ छन्दों वाली (ल) प्रति का पाठ प्रस्तुत सम्पादन की दृष्टि से नगण्य है। किन्तु इन तीनों प्रतियों के छन्दों और पाठों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर तीनों मे पर्याप्त असमानताएं भी परिलक्षित होती है।

यह सही है कि तीनों प्रतियों में ११८ छन्द समान रूप से पाठ-साम्य की दृष्टि से प्राप्त होते है, दो प्रमुख प्रतियो (न) और (अ) में १८२ छन्द एक से ही मिल जाते ह, तीनों प्रतियों में बालकाण्ड का पाठ प्रायः समान है। अयोध्या काण्ड के प्रारम्भिक छन्द तीनो प्रतियों मे प्रायः समान रूप से मिल जाते है और अरण्य काण्ड के तीन छन्द समान है किन्तु किष्किधा, सुन्दर, लंका तथा उत्तर काण्ड का कोई भी (न) प्रति का छन्द (अ) प्रति में नहीं

मिलता। यह वात दूसरी है कि इस (अ) प्रति के भिन्न पाठ से (म) प्रति में इन्हीं काण्डों के १६ छन्द (कि० ४, सु० ४, लं० ३ और उ० ५) मिल जाते है।

वालकाण्ड और अयोध्या काण्ड को छोड़ कर अन्य काण्डों के पाठ-भेद की विविवता के कारण मूल-शाखा के पाठ की खोज के विपय में वैमत्य उठना स्वाभाविक है।

खोज-विवरणों से तथा इस दिशा में अन्वेपण के फलस्वरूप जो-जो उपलब्धियां हुई है, उनके आवार पर पाठ की वास्तविक शाखा की खोज सरलता पूर्वक की जा सकती है। और इस आवार पर (न) प्रति के पाठ को ही मूल शाखा से सम्बद्ध मानना चाहिए। इसके चार प्रमुख कारण है:—

१. भाव एव भापागत दृष्टि से (न) प्रनि का पाठ अविक शुद्ध सभव मौलिक और सुलझा हुआ है तथा महाकवि तुलसी की काव्य-शैली के अविक समीप है।

२. (न) प्रति के मंगलाचरण का समर्थन वृहत-पाठ से सम्वन्वित सभी प्रतियो से होता है। अनेक प्रतियों का मंगलाचरण प्रायः अशुद्ध और छन्दोभंग से दूपित है, (न) प्रति के पाठ का मंगलाचरण इन दोपों से रहित है।

३. (न) प्रति की ४०५ छन्दों की परम्परा (अ) प्रति को भी मान्य है, और (अ) प्रति के सबसे अविक छन्द १८२ (न) प्रति के पाठ से साम्य रखते है।

४. अन्य काण्डो में जहाँ (अ) प्रति (न) प्रति के समान पाठ-साम्य नही रखती, वहां वह अन्यत्र सामान्य और दोपपूर्ण वन कर रह गई है।

यदि प्रति (अ) को प्रामाणिक शाखा का पाठ स्वीकार किया जाय तो उसकी वर्णन-शैली अपरिपक्व और तुलसी की शैली के अनुरूप नही बैठती। सामान्य प्रसंगों की अतिरंजना अनेक प्रक्षेपों की संभावना को जन्म देती है। यद्यपि इस प्रति में वरवै रामायण की रचना-तिथि का उल्लेख है किन्तु प्रक्षेपों के कारण कथा-विस्तार में सानुपातिक दृष्टि का अभाव लक्षित होता

है। यदि प्रति (म) को प्रामाणिक शाखा का पाठ माना जाय तो उसकी स्थिति और भी भ्रामक हो जायगी क्योंकि एक ओर तो (न) प्रति से उसका भ्रमपूर्ण पाठ-भेद है और दूसरे परवर्ती काण्डों की रचना केवल २१ छन्दों में ही समाप्त कर दी गई है। कथा-भाग उतना भी नही है जिससे कोई घटना-क्रम का विवरण प्राप्त कर सके। हां, यदि (अ) प्रति का कोई मूलादर्श प्राप्त हो सके जिसमें प्रक्षेपों का निराकरण हो, तो उसे प्रामाणिक शाखा का पाठ माना जा सकेगा। यों (न) प्रति को आधार मान कर जो ग्रन्थ का सम्पादन किया गया है, उसमें यथास्थान (अ) प्रति से भी यथेष्ट सहायता ली गई है। कुछ स्थलों पर (म) प्रति भी सहायक हुई है।

इस भाँति (न) प्रति के पाठ को ही प्रामाणिक शाखा-का पाठ स्वीकार किया गया है।

स्वीकृत-पाठ की स्थिति तथा पाठ-प्रमाद

तीनों प्रतियो के पाठों की तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन कर लेने के पश्चात् यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि तीनों पृथक्-पृथक् परम्पराओं मे सम्बद्ध है। तीनों प्रतियों के पाठों में परस्पर वैभिन्न है और अनेक छंद अपनी रचना में असमान है। छन्दो की समानता बालकाण्ड (सम्पूर्ण) और अयोध्या काण्ड के प्रारंभिक अंशों में है। किन्तु बाद में कथा-शैली और छन्दों में पर्याप्त भिन्नता आ गई है। फलतः सम्पादन के सन्दर्भ में भिन्न स्थलो को छोड़ देने के अतिरिक्त कोई मार्ग नही है। इन भिन्न स्थलों का निर्देश पाद-टिप्पणियों में कर दिया गया है।

प्रति (न) का पाठ अनेक स्थलों पर प्रति (अ) और (म) से वैषम्य रखता है, जहां प्रति (अ) तथा (म) में पाठान्तर-वैषम्य (न) की तुलना में कम है। इस दृष्टि से प्रति (न) के पाठ को प्राथमिकता देते हुए उसके त्रुटित, संशयपूर्ण, खंडित अथवा लुप्त पाठो के लिए (अ) और (म) प्रतियों के पाठों का आधार ग्रहण करना पड़ा है। यह उपयोग ऐसे स्थानों पर अधिक स्पृहणीय हुआ है जहां (अ) प्रति का पाठ (न) से भिन्न रहते हुए भी (म)

प्रति के अनुकूल रहा है। ऐसा लगता है कि (न) और (अ) दोनों की प्रथम प्रतियां भी एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न रही होंगी और वे वर्तमान प्रतियों से अधिक शुद्ध, अधिक प्राचीन और अधिक प्रामाणिक रही होंगी। सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से इन प्रतियों में परस्पर होने वाले पाठ-प्रमादों का संशोधन तथा परिष्करण आवश्यक रूप से किया गया है।

लेखन-प्रमाद अथवा पाठ न पढ़ सकने के कारण विकृतियाँ

लेखन-प्रमाद तथा अन्य विकृतियाँ अधिकतर लिपि से ही सम्बन्ध रखती है। उचित रूप से पाठ न पढ़ सकने के कारण या प्रतिलिपिकार की लेखन-प्रवृत्ति के कारण ये विकृतियां पाण्डुलिपियों में आ जाती हैं। प्रस्तुत पाण्डु-लिपियाँ इन विकृतियों से अछूती नहीं है।

उदाहरण के लिए—

कई स्थलों पर 'ए' को 'रा' के रूप में भी पढ़ लिया गया है।

ए / रा = गए / गरा (छं० सं० ५५)

इसी प्रकार और भी अनेक वर्ण हैं जिनको उचित रूप से न पढ़ने के कारण पाठ-प्रमाद हो गया है—

ट / ठ = उबटि / उबठि (छं० सं० ३०)

छोट / छोठ (छं० सं० ३२)

लटकनि / लठकनि (छं० सं० ३५)

ढ / ठ = मुढारि / सुठारि (छं० सं० ७८)

ड / उ = डर / उर (छं० सं० ५१)

ह / रु = जह / जरु (छं० सं० ५५)

य / प = देपिय / देपिप (छं० सं० ७४)

रु / थ = रुकहि / थकिय (छं० सं० १०४) आदि।

लेखन-रूप से सम्बन्धित यह विकृति कहीं पाठ की दृष्टि से पर्याप्त गंभीर बन गई है।

'ञ' को 'इ' या 'उ' के रूप में पढ़ने के कारण 'वूञ' 'मूञ' पाठ 'वुई', 'मुई' अथवा 'वूड़ सूड़' लिखा गया है। ('ञ' का प्राचीन रूप आधुनिक 'इ' और 'ड' से मिलता जुलता है।)

'प' को ठीक तरह से न पढ़ने के कारण 'पीत' पाठ 'मीत', 'चीत' आदि रूपों में रखा गया है। इसी प्रकार और भी शब्द प्राप्त होते हैं—

ज्ञान / मान (छं० सं० २७३)

वामदेव / रामदेव (छं० सं० २८३)

यहिविधि / महि विधि (छं० सं० २८८)

आपन / आयन (छं० सं० २९०)

बड़ै / बटै (छं० सं० ३१७)

लेखन-रूप के प्रमाद के साथ लेखन सम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ इन प्रति-लिपियों में प्राप्त होती हैं। ये त्रुटियाँ एक निश्चित प्रकार की हैं और इनका सम्बन्ध अधिकांशत: प्रतिलिपिकार की लेखन-प्रवृत्ति से ही कहा जा सकता है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

जोइ, सोइ / जोए, सोए (छं० सं० ४४)

लीन्हे / लीन्ह (छं० सं० २९७)

हरपाइ / हरपाए (छं० सं० ७५)

अहही / अहहि (छं० सं० २५६)

पाइ / पाए (छं० सं० ३४५)

नहाय गवाय, / नहाए, गवाए (छं० सं० २२७) आदि।

इनके अतिरिक्त प्रति (न) में एक विशिष्ट प्रकार की लेखन-प्रवृत्ति के कारण पाठ विषयक कुछ विकृतिया आ गई हैं। यथा:—

पुकारत / प्रकारत (छं० सं० १८१)

हरपाय / हृपाय (छं० सं० २४५)

मेवरी / मेव्ररी (छं० सं० ३०२)

भृकुटि / भ्र ुटि (छं० सं० ९७)

दोनों प्रतियो मे 'हाथ नारि अर' और 'हाथ नारि पर' स्पष्ट नही है। (न) प्रति का पाठ है:—

धरहिं धनुष बल करि करि डगैं न चाप।
वानर हाथ नारियर, लषि तजि आप॥११५॥

(न) प्रति का पाठ है:—

प्रथम जनक जो देषत तो का करि पन।
अब छोड़त अति लज्जा सब हँसि हैं जन॥१११॥

इस छद में लक्षण-दोष हो गया है, वस्तुतः (अ) और (म) प्रति का पाठ ही ठीक समझा जाना चाहिए:—

(अ) प्रति

प्रथम जनक जो देषत आपन कीन।
अब छोड़त लज्जा बड़ भा अति पीन॥

(स) प्रति

प्रथम जनक जो देषत आपन कीन।
अब छोड़त अति लाजहिं भा अति पीन॥

४. इसी संदर्भ में एक छन्द वास्तविक पाठ की कठिनाई उत्पन्न करता है:—

(अ) प्रति

नारि परसपर सब कह ए दोऊ भाय।
लिहे जनम फल आजु हियेहि जग आय॥१०४॥

(म) प्रति

नारि परसपर लषि कहै ये दोउ भाइ।
लेहु अनम कुल आजुहि ये जग आइ॥१०२॥

(न) प्रति

नारि परस्पर लषि कह दोउन भाइ।
लहौरी जन्म फल आजु हिय तर पग आइ ॥१०२॥

वस्तुतः इस छन्द में 'हिय तर पग आइ' अस्पष्ट और भ्रष्ट है। इसका शुद्ध-पाठ निम्नलिखित रूप में चाहिए:—

नारि परस्पर कह लषि दोउन भाय।
लह्यो री जनम फल आजुहि येहि जग आय ॥१०२॥

इसी प्रकार अनेक पंक्तियाँ परस्पर उलझी हुई हैं किन्तु उनका समाधान संदर्भ, तुलसी की शब्द-प्रयोग शैली के आधार पर कर लिया गया है।

इन प्रतियों में पाठ-वृद्धि के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। पंक्तियाँ छन्द-पद्धति छोड़ कर बहुत लंबी और व्याख्यात्मक हो गई हैं। उदाहरण के लिए (न) प्रति में निम्नलिखित छन्द है—तब प्रभु लषि समझावा, मति सूझे साय ॥१९॥ 'तब' शब्द यहां व्यर्थ जोड़ा गया है। इसी प्रकार—

कुटी निहारि सिया बिनराम कहै भैया लछिमन का बिधि कीन्ह।
कुप दिसराचन सीता केहि हरि लीन्ह ॥२३१॥

"राम कहैं, भैया लछिमन का बिधि कीन।" और 'कुटी निहारि सिय बि...' पूर्ववर्ती छन्द की टूटी हुई पंक्ति है जो इस छन्द के साथ जोड़ दी गई है। पाठ में इस छूटे हुए छन्द का निर्देश कर दिया गया है।

शब्दों के रूप भी अनेक स्थलों पर विकृत हुए हैं।

पारसन पाए / परसन पाइ।

सगुन जग नाइ / सगुन जनाइ।

कहीं-कहीं शब्द छूट भी गए हैं—

(न) प्रति

नृप रानी मज्जन णित ..... प्रयाग।
तुलसी फल चारा मनि कर्म त राग॥४०॥

इस छन्द का पाठ इस प्रकार होना चाहिए :—

नृप रानी मज्जहिं नित प्रेम प्रयाग।
तुलसी मनि फल चारिउ मरकत राग॥४०॥

दूसरी पंक्ति का समर्थन प्रति (म) से भी होता है।

(अ) प्रति का लिपिकार पंजावी या राजस्थानी ज्ञात होता है। वह 'न' के लिए अधिकतर 'ण' का प्रयोग करता है—

णित (नित) ४०, जनणी (जननी) ६२, अणुसासन (अनुसासन) २५१, भाणेउ (भानेउ) २७४ आदि।

अस्पष्ट-पाठ तथा शब्द-रूप

इनके अतिरिक्त भी तीनों प्रतियो में अनेक पाठ-स्थल अस्पष्ट हैं। उन्हें यथा-संभव स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। उदाहरण के लिए कुछ पाठ-स्थल निम्नलिखित हैं—

१ तब निषाद देष राएउ सैल अनूप।
मंदाकिनी कटत हरह सुर भूप॥२३१॥

इस पाठ का स्पष्ट रूप यह है—

तब निषाद देषराएउ सैल अनूप।
मंदाकिनि तट तहां रहत सुर भूप॥२३१॥

२ आए परन कुटी प्रभु सिया अनंत।
देवन्ह दीन्ह भएं सो बस सुतंत॥२४८॥

शुद्ध-पाठ

आए परन कुटी प्रभु सिया अनंत।
देवन्ह दीन्ह भरोसो सुबस सुतंत॥२४८॥

३ पट वाचालि होहि जो त्यागउ सैल।
विप्र रूप धरि गयउ तहा आवत जेहि गैल ॥३०८॥

शुद्ध-पाठ

पठवा वालि होहि जो त्यागउँ सैल।
विप्र रूप धरि गएेउ तहाँ तेहि गैल ॥३०८॥

४ वर्षागत निर्मल रितु सोवत राम।
जेहि हित कीन्ह निवास कछु नहिं निबह्यो काम ॥३१५॥

शुद्ध पाठ

वर्षा गत निर्मल रितु सोचत राम।
जेहि हित कीन्ह निवास न निबह्यो काम ॥३१५॥

५ वधि ताडका सुवा हुहि प्रगट्यो आप।
मिस पारी वनी वकि पवि सिव प्रताप ॥३५७॥

शुद्ध पाठ

वधि ताड़िका सुवाहुहि प्रगट्यो आप।
मिस मारीच मीच किय विसिष प्रताप ॥३५७॥

अनेक भ्रान्तियाँ शब्दों के परस्पर भिन्न रूप से जुड़ जाने, अक्षरों का रूप विकृत हो जाने और शब्द-विग्रह ठीक ढंग से न करने के कारण ही है। इन्हें यथा- संभव स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

सम्पादन सिद्धान्त

यह ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि बरवै रामायण की आधारभूत तीनो प्रतियों के पाठ अपने आप में पर्याप्त भिन्न है तथा अपनी विशेप स्थिति में स्वतंत्र शाखाओ से सम्वन्धित है। इन शाखाओं में परस्पर सम्वन्ध निर्धारित करते हुए (न) प्रति के पाठ को प्रामाणिक शाखा का पाठ स्वीकार किया गया है। (न) प्रति की जो अनेक प्रतिलिपियां प्राप्त होती है वे (म) और (अ) के पाठ-रूप से सम्वद्ध नहीं हैं।

जहाँ तक तीनों प्रतियों के समान पाठ-स्थल का प्रश्न है वहां किसी प्रति को प्राथमिकता न देकर तीनों के तुलनात्मक पाठ को प्रमुखता दी गई है और पाठ की प्रामाणिकता के संदर्भ मे उनका उपयोग किया गया है।

जहाँ प्रति (न) तथा प्रति (म) से सम्बन्धित समान-पाठों के निर्धारण का प्रश्न है, वहाँ प्राथमिकता प्रति (न) के पाठ को दी गई है और प्रति (न) में त्रुटित, संशयपूर्ण और विकृत पाठों के स्थान पर (म) प्रति के पाठ से अनिवार्य रूप से सहायता ली गई है। ठीक यही स्थिति प्रति (न) तथा (अ) प्रति के पाठ की है। यहाँ भी प्रति (न) के पाठ को प्राथमिकता देते हुए त्रुटित तथा संशयपूर्ण स्थलों के लिए प्रति (अ) के पाठ का उपयोग किया गया है।

प्रति (न) मे अधिकांश स्थल इस प्रकार के हैं जो प्रति (अ) और प्रति (म) से मेल नहीं खाते। इस स्थिति में प्रति (न) के पाठ को मूलादर्श के रूप में स्वीकार किया गया है तथा उसके त्रुटित, संशयपूर्ण एवं विकृत-पाठों को अंतरंग एवं बहिरंग सम्भावनाओं के आधार पर संशोधित किया गया है। इस संशोधन की स्थिति मे कुछ स्थल ऐसे भी हो सकते है जिनके विषय में भविष्य में और भी अधिक प्रकाश डाला जा सके। जब तक प्रति (न) या उससे सम्बन्धित कोई अन्य मूलादर्श प्राप्त न हो तब तक हमें वर्तमान (न) प्रति के पाठ से ही संतोष करना चाहिए।

कथा का रूप

वस्तुतः बरवै रामायण मे कथा का विन्यास ठीक उसी प्रकार हुआ है जिस प्रकार रामचरित मानस मे। राम-भक्ति में जैसी महाकवि तुलसीदास की प्रवृत्ति है वैसी ही बरवै रामायण के कथा प्रसंगों के उल्लेख में उपस्थित की गई है। सब से बड़ी बात यह है कि बरवै रामायण तुलसीदास के स्तुति-क्रम से ही आरंभ होती है। इस भाँति 'मानस' और 'विनय पत्रिका' की भाँति 'बरवै रामायण' भी एक सुनिश्चित भाव-प्रबन्ध के रूप मे प्रस्तुत हुई है। इस भाव-प्रबन्ध की रचना प्रायः उसी शैली और उन्हीं शब्दों मे हुई है

जो रामचरित मानस, कवितावली या गीतावली में है। इस प्रकार प्रस्तुत बरवै रामायण को महाकवि तुलसीदास की एक महत्वपूर्ण कृति समझना चाहिए।

गत वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने मुझे लगभग तीन हजार पाण्डुलिपियों के विवरण बनाने का कार्य सौंपा था। उन पाण्डुलिपियों में 'बरवै रामायण' का यह वृहत् पाठ भी देखने को मिला जिसकी प्रतीक्षा अनेक वर्षों से हिन्दी-साहित्य के विद्वानों और पाठकों को थी। मुझे प्रसन्नता है कि वह वृहत् पाठ प्रस्तुत करने का सुयोग और सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। इसके लिए मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिकारियों का कृतज्ञ हूँ। श्री मौलिचन्द्र शर्मा, श्री मोहनलाल भट्ट और श्री रामप्रताप त्रिपाठी का विशेष आभार मानता हूँ। पाण्डुलिपियाँ प्राप्त कराने में श्री वाचस्पति गैरोला तथा सम्पादन में सहायता देने के लिए मेरे शिष्य और सहयोगी डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह भी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं। प्रूफ़ को अत्यन्त सावधानी से देखने तथा आवश्यक स्थलों पर परामर्श देने के लिए मेरे प्रिय शिष्य श्री हरिमोहन मालवीय सहायक रहे हैं। प्रतिलिपि करने में श्रीमती पुष्पा जायसवाल, श्री रोशनलाल एमा और श्री कुलदीप कपूर ने विशेष सहयोग दिया है। अनुक्रमणिका तैयार करने में डॉ० राधेकृष्ण श्रीवास्तव ने सहायता की है। इन सब को हार्दिक धन्यवाद !

साकेत, प्रयाग

विजया दशमी, १९६७ — **रामकुमार वर्मा**

बरवै रामायण के अन्तिम पृष्ठ की पुष्पिका

श्री गणेशाय नमः

(बालकांड)

गननायक वरदायक देव मनाय[1]।
विघ्न विनास प्रकासक[2] होउ सहाय॥१॥

श्री गुरु पद अंवुज रज हृदय संभारि[3]।
वरनन करौ राम जस कृपा[4] सुधारि॥२॥

श्री रघुवर अंग[5] सोभित अतुलित काम।
जन[6] चकोर पूरण विधु करौ प्रनाम॥३॥

भरत भारती नायक छंद विधान।
वालमीक मह घटि रहि कर[7] गुन गान॥४॥

लषन मधुर मृदु मूरति सुमिरन कीन्ह[8]।
जिन्ह कीं[9] कृपा राम जस वरनै लीन्ह[10]॥५॥

लवनि अंवु निधि कुंभज विकट प्रहार।[11]
भरत चरन अनुगामी सहित विचार॥६॥

---

१. मनाए (अ)। २. विघन विनासक बरन प्रकासक (अ)। ३. सह्मार (अ)। ४. लेउ (अ)। ५. संग (अ)। ६. भक्त चकोर पूर्ण (न) (जौ)। ७. सो कर (अ) करोउ (जौ)। ८. कीन (अ) सुमिरन्ह कीन (जौ)। ९. जीन्ह की (अ)। १०. लीन (अ)। ११. संकट परिहार (न) (जौ)।

केसरि सुवन[1] वीरवर रघुपति दास।
जासु कृपा मति निर्मल छन्द प्रकास॥७॥*

अवधपुरी दसरथ नृप[2] सुकृत सरूप।
कौसिल्यादिक रानिन्ह अमित[3] अनूप॥८॥

राम भक्त मन क्रम वच सह रनिवास।
गुरु पद कमल हृदय जेहिं[4] सब नृप पास[5]॥९॥

राउ[6] हृदय महँ चिंता सुत मोहि नाहिं।
गुर सन[7] कहेउ पूजि पद जो मन माहिं॥१०॥

गुर कृपाल[8] अति कोमल रिषिन्ह[9] बोलाय।
कीन्ह जग्य सुभ गुन हिन अति[10] नृप पाय॥११॥

---

१. सून (अ)।

२. नृप द (श) रथ (अ)। ३. रानी सोभ (अ)। ४. महँ (अ)। ५. वास (अ)। ६. राव (अ)। ७. सन (अ)। ८. गुरु वशिष्ट प्रति (अ)। ९. आदर शृंगिहि (अ)। १०. गुरु (अ)।

*प्रति (अ) में दो छन्द अधिक हैं। ये छन्द महत्त्वपूर्ण समझे जा सकते हैं क्योंकि उनसे ग्रन्थ-निर्माण की तिथि पर प्रकाश पड़ता है।

पंड[1] दीप[7] रस[6] इंदुहि[1] संमत जान।
दामोदर सुत (सित ?) नन्दन (?) छति (छह ?) तिथि वेद
बखान॥८॥

बलि प्रोहित मीन दुघरि (या ?) बालव देषि।
तुलसी करि प्रभु ध्यानहिं रामहिं पेषि॥९॥

इसके अनुसार संवत १६७९ मार्गशीर्ष शुक्ल ६ को जब शुक्र ने मीन-राशि में दो घड़ी प्रवेश किया तब तुलसी ने ध्यान में राम के दर्शन कर ग्रन्थ की रचना की।

दीन्ही[1] अगिनि[2] सुचरु कर कहि संवाद।
वाटि[3] देहु नृप रानिन्ह जस मरजाद[4] ॥१२॥
राजा दीन्ह जथा विधि लायक जान।
गर्भ सहित सब सोभित[5] तेज निधान॥१३॥
राम प्रगट[6] कर औसर[7] विधि जब जान।
सुर समूह सब आये चढे विमान॥१४॥
सुमन वरपि जस[8] गावत हरपित[9] होत।
भव सागर सो[10] आवत जेहि पद पोत॥१५॥
अस्तुति करि सुर गवने[11] निज निज लोक।
प्रगटेउ[12] प्रभु हरि लीन्हे[13] द्विज सुर सोक[14] ॥१६॥ ब्राह्मण
कौसिल्या[15] के आगे सब सुष दानि।
चकित[16] भई लषि माता रूप निधानि[17] ॥१७॥
अस्तुति करि न सकत भय[18] करहि विचार।
अषिल भुवन पति व्यापक मम अवतार॥१८॥
प्रभु[19] लषि समुझावा मति भूलै[20] माय[21]।
पूरब पुन्य विचारहु[22] सो[23] वर पाय[24] ॥१९॥

---

१. दीन्हेउ (अ)। २. चारू कर सुभ संवाद (अ)। ३. इहैं (अ)। ४. मर्जाद (अ)। ५. रानी (अ) ६. जनम (अ)। ७. अवसर (अ)। ८. सुर (न) (जौ)। ९. हर्षित (न)। १०. सोइ (अ)। ११. गमने (म)। १२. प्रगटत (न) प्रगटे (म)। १३. लीन्हेउ (अ)। १४. शोक (अ)। १५. कौशल्या (अ)। १६. चकृत (न)। १७. बिनानि (न)। १८. सकै त्रिय (अ) सकौ तिय (म)। १९. तब प्रभु (अ) (म)। २०. भुले मति (अ) भूले मति (म)। २१. माए (अ) माइ (म)। २२. विचारो (अ) विचारउ (म)। २३. जो (म)। २४. पाए (अ)।

बालक लीला अति सुप कीजै[1] लाल।
कीन्हेउ[2] ज्ञान निधानहि सुत कर प्याल[3]॥२०॥

उत्सव भएउ[4] बधाई कोटि[5] बिवान।
सेस सारदा आगम[6] करहिं बपान॥२१॥

दीन्ह भूप मन हरपित रथ गज[7] बाजि।
दीन्हेउ[8] धेनु अलंकृत[9] बहु[10] बिधि साजि॥२२॥

हीरा मनि मानिक बहु[11] जनु जव धान।
समै समै[12] सुर बरसत सुमन सुजान॥२३॥

जोइ जोइ जाचन आयो[13] सो तेहि दीन्ह।
जोइ अभिलापा मागेउ पूरन कीन्ह॥२४॥

नंदीमुप्र अरु जातक[14] कीन महीस।
द्विजन दान पाएउ बहु[15] देहि असीस॥२५॥

समय[16] सोहावन पावत सुप नर नारि।
घर घर पूरन देपिय जौं[17] फल चारि॥२६॥

---

१. किजिय (न)। २. कीन्हेव (स)। ३. पालक व्याल (अ), पाल कृपाल (स)। ४. भयो (अ)। ५. कीन्ह (अ) कीन (स)। ६. आगम को (अ)। अगम कौं (स)। ७. गज रथ (अ) (स)। ८. दीन्ह (अ) दीन्हें (स)। ९. आलंकृत (अ)। १०. अरु सब (अ), सहित समाज (स)। ११. सब (अ)। १२. समय समय (स)। १३. जो जेहि जाचन आयेउ (अ) (स)। १४. जात कर्म सब कीन महीस (अ)। जात करम सब कीन महीस (स)। १५. अति पाएउ (अ) (स)। १६. समै (न) समए (अ)। १७. कर (न)।

राम निछावर[1] कारन[2] होत भिपारि।
बहुरि देत तेहि देपिय[3] जनु बनवारि॥२७॥
येहि[4] विधि राम जनम[5] मुप को कहि[6] गाय।
सेस सारदा गावहिं[7] पार न पाय॥२८॥
कंचन मनिमय पलना रचेउ[8] सुढार।
विविध पिलौना किंकिनि लटकत[9] हार॥२९॥
मातु उबहि अन्हवाएउ[10] करि सिंगार।
तेहि[11] पलना पौढ़ाए साजि कुमार[12]॥३०॥
मदन मोरवना चंदक[13] निदरत[14] जोति।
कहे नील मनि[15] जलदहि लघु मति होति॥३१॥
छोट लसित अरु[16] लोहित कर पद उप्ट[17]।
को कवि कहे छवि सब अँग सुंदर पुप्ट[18]॥३२॥
पग नूपुर कटि किंकिन पहुंची मंजु।
हिए बघवना[19] नपवन मनिमय गंजु॥३३॥
नील कमल सम लोचन भुव मसि बुंद[20]।
ससि मुप सोभा के निधि[21] बाल मुकुंद॥३४॥

---

१. निछावरि (न)। २. कारण (न)। ३. देपीय (न) देपिअ (अ)। ४. ऐहि (न)। ५. जन्म (न)। ६. जो कहिये (म)। ७. गावँ (अ)। ८ कनक मनिमय पलना बन्यो (अ)। पलकना बन्यो (म)। ९. मुक्ताहार (न)। १०. अन्हवाइयो (म)। ११. ते (अ) सुनि (म)। १२. राजकुमार (न) (जौ)। १३. मोर के चन्द्रहि (अ) मोर की चंद्रिका (म)। १४. निदति (अ) (म)। १५. कवल मनि (न) कौन मनि (म)। १६. अति (म)। १७. कोप (म)। १८. अंग पुष्ट (अ)। १९. बघौना (अ)। २०. भुज संबंद (अ)। २१. कंथव (म)।

अलकावलि महू लटकनि ललित[१] ललाट।
जनु उडुगन विधु सनमुष[२] तम करि वाट ॥३५॥
देखि षिलौना डोलहिं कर पद नैन।
मनहु[३] अरुन रवि अंवुज में रत[४] मैन ॥३६॥
बोलत[५] अर्थ न निकसहिं[६] द्वै[७] फल चारि।
मनहु जनक ऋषि सुरतरु अरु त्रिपुरारि[८] ॥३७॥
कवहुंक पलन[९] झुलावहि कवहुंक गोद।
रोम रोम सुप पावहिं[१०] छिन छिन[११] मोद ॥३८॥
चारिउ भाइ घुटुरवन अँगना[१२] पेल[१३]।
आल वाल सव माता सुरतरु वेल[१४] ॥३९॥
नृप[१५] रानी मज्जहिं नित[१६] प्रेम प्रयाग।
तुलसी मनि फल चारिउ[१७] मरकत राग ॥४०॥
पकरि चलावत अंगुरिन्ह[१८] सिषवत[१९] चाल।
छुटकत डरत कँपत अति[२०] भगत[२१] कृपाल ॥४१॥
गिरत उठत गहि अनुजन्हि[२२] डिगत विसेष।
पकरि लेत तव जननी लपि वर वेष ॥४२॥

---

१. लसत (न)। २. सन्मुष (न) (अ)। ३. मनो (म)। ४. फेरत नैन (अ) फेकत सैन (न)। ५. बोलन (अ)। ६. अर्थ न पावहि (अ) (म)। ७. दय (न)। ८. जन बोलनते भये रिचा वेद के चारि (म)। ९. पलना (न) (जौ)। १०. पावैं (अ) महू पूरन (जौ)। ११. छन छन (न)। १२. आँगन (न)। १३. पेलि (म)। १४. बेलि (म)। १५. तात नृप रानी मज्जन (म)। १६. मज्जहिं णित (न)। १७. चारिउ फल (म)। १८. अंगुरिन (अ)। १९. सेषावत (म)। २०. छुटत डरत अति काँपत (अ)। २१. भक्त (न) (अ)। २२. अनुजनि (अ) अनुजान गहि (म)।

निरगुन[1] ब्रह्म निरंजन अविगत[2] पार।
भगत बस्य[3] कर लीला परम उदार॥४३॥
ऐसे[4] प्रभु कह जानत[5] भजै न जोय[6]।
जग विवि बंचक[7] कीन्हेउ मूरख सोय[8]॥४४॥
प्रभु समरथ कौसलपति[9] दरस[10] अनूप।
मरन[11] भये तेहि लागिहि लघु सुर भूप॥४५॥
करन बेव गुरु कीन्हेउ[12] अति सुप पाय[13]।
बिप्रन्ह[14] बहु दछिना पुनि लह्यौ अघाय[15]॥४६॥
भयं[16] कुमार जबहि सब दए[17] उपनैन।
विद्या[18] पढ़न चले प्रभु विद्या ऐन[19]॥४७॥
जो सुप ध्यान न आवहि[20] प्रभु कर[21] बेद।
शिव[22] श्रुति सेस सकहि नहिं बूझत भेद॥४८॥
सो सुप अवव गलिन्ह[23] रह्यो वर घर पूरि[24]।
कवन[25] जतन कवि गावहि[26] गोचर दूरि[27]॥४९॥

---

१. निर्गुन (न)। २. अविगति (न)। ३. भक्तिवस्य (न) (म)। ४. अैसे (म)। ५. जानै (अ)। ६. जोए (न)। ७. जग बंचक विवि (अ) (म)। ८. सोए (न)। ९. कोशल (अ)। १०. दर्स (न)। ११. सपन (न) (अ)। १२. कीन्हेव (म)। १३. पाइ (म) पाए (अ)। १४. बिप्रन (म) विप्र दक्षिना (अ)। १५. लीन अघाय (न) पाए अमित अघाए (अ)। १६. भए (अ)। १७. दिय (म) (अ)। १८. विदिया (म)। १९. विदिया निधि आनद दैन (म)। राउ बोलि गुरपद गहि अमृत बैन (अ)। २०. पाहियो (अ)। २१. कह (अ)। २२ सव सुरसति नहि बूझत पेद (अ), ते सकहि नहि छूटहि भेद (म)। २३. गलिन सह (अ) (म)। २४. रह भरिपूर (म)। २५. कौन (म)। २६. गावै (अ) (म)। २७. पूर (म)।

एहि विधि बाल चरित हरि बहु विधि कीन्ह।
अति आनंद नगर बासिन कहँ दीन्ह[1] ॥५०॥
गाधि सुवन मप साजहिं[2] डर पल नीच।
कीन्ह विचार[3] राम बिन नाहिन मीच ॥५१॥
श्रापत[4] पाप घटै तप रचेउ उपाय[5]।
हरन भार महि कारन नृप घर आय[6] ॥५२॥
यह कारज ले देपौं रघुपति जाय[7]।
जज्ञ सुफल मिस करि के[8] दृग फल पाय[9] ॥५३॥
बहु विधि[10] करत मनोरथ मग मह जात।
धन्य जनम[11] निज मानत[12] हिय न अघात ॥५४॥
मज्जन करि सरजू जल गए[13] जहँ[14] भूप।
देपी[15] मंगल मूरति मधुर अनूप ॥५५॥
राजा पूजन[16] कीन्हेउ सोरह भाँत।
पुनि निज भाग सराहेउ गदगद गात[17] ॥५६॥
मुनि अस कृपा न कीन्हेउ कबहू मोहि[18]।
कारज बेगि सुनावहु तनपर[19] होहि ॥५७॥

---

१. अंत अनंद नगरवासिन कह लुप दीन (स) (अ)। २. करैं (स) कर उर (अ)। ३. तिन विचारा (अ), तिन विचार मन (स)। ४. सापत (अ)। ५. उपाए (अ) उपाइ (स)। ६. आए (अ) आइ (स)। ७. येहि विधि राम लपन कहँ नृप सन जाए (अ)। येहि विधि ल्याऊ राम लपन कह नृप सन जाइ (स)। ८. कारन (अ) (स)। ९. पाए (अ)। १०. एहि विधि (न)। ११. जन्म (न)। १२. जिन जाना (अ)। १३. गे (अ)। १४. जहां रह (स)। १५. देखेउ (न) (स)। १६. पूजा (न) (अ)। १७. प्रेम न माति (न)। १८. सोपर (अ) (स)। १९. कारज तत पर (अ) तत पर नर (स)।

कह मुनि मोहि सतावहि निसिचर भीर[1]।
मम हित[2] राम लषन दीजै[3] दोउ वीर॥५८॥

निसिचर वध करि करिहैं[4] मोहि सनाथ।
मुत प्रभाउ[5] नहि जानहु तुम[6] रघुनाथ॥५९॥

बूझिय[7] वामदेव गुरु[8] तुम पुनि[9] दक्ष।
अखिल भुवनपति तव सुत भगतन रक्ष[10]॥६०॥

गदगद कंठ भएउ नृप सुनि मुन वैन।
तब वशिष्ठ समझाएउ[11] आनंद ऐन॥६१॥

चले भवन जननी[12] पह आयसु[13] लीन्ह[14]।
राम लषन मुनि[15] काजहि मन[16] तव दीन्ह[17]॥६२॥

मारग जात तपोवन मन आनंद।
प्रभु ब्रह्मण्य देव लषि ब्रह्मानंद[18]॥६३॥

करत केलि[19] मगु कौतुक धावत राम।
मुनि लषि पाछे विलँवत मन अभिराम॥६४॥

नीरत सुमन लता[20] द्रुम रघुकुल वीर।
पुनि पुनि वरनत पावन[21] छांह समीर॥६५॥

---

१. निशिचर धीर (न)। २. कारन आए देहु (न)। ३. मम हित राम लषन दीजै (अ)। ४. अरु (न)। ५. प्रभाव (अ) (म)। ६. तुम्ह (अ)। ७. उठिए (न) पूजि (अ)। ८. कुल गुर (अ)। ९. पुर (अ)। १०. भगतन पक्ष (न) (अ)। ११. समुझाए (अ)। १२. जनणी (न)। १३. आएसु (न)। १४. लीन (अ)। १५. रिषि (न)। १६. नृपत (म)। १७. दीन (अ)। १८. परमानंद (म)। १९. के (अ) (म)। २०. लता मधुर मृदु (अ)। २१. पायन (म)।

बैठत सिलन विटप तर वंधु समेत।
पैठत सरनि[1] सोहावनि सीतल सेत॥६६॥

देषत मग नर नारी[2] तन विसराय[3]।
जो[4] सुष होत अगम मन कह्यो[5] न जाय॥६७॥

मुनि मुनितिय मुनि वालक वरनत रूप।
कोटि काम लघु[6] सोभा लपि सुत भूप॥६८॥

मारग देषि ताडिका[7] कहेउ[8] लपाय[9]।
एकहि वान प्रान हरि सुरपुर पाय[10]॥६९॥

तव मुनि आश्रम आनेउ[11] आयुध[12] देइ।
पूजेउ[13] विविध विधानन मति गति भेइ॥७०॥

प्रात कहेउ प्रभु रिषि सन[14] कीजै[15] जग्य[16]।
करन लगे लपि धूम धाए[17] जड़ अग्य॥७१॥

सुभुज मारि[18] मारीचहि विनु फर वान।
फटकि दीन्ह सत जोजन[19] रापेउ[20] प्रान॥७२॥

---

१. सरन (अ) (म)। २. नारिन्ह (न)। ३. बिसराए (अ) बिसराइ (म)। ४. सो (अ) (म)। ५. कहो (अ) कहेउ (म)। ६. लजि (म)। ७. तारिका (न)। ८. कहे (अ)। ९. लषाए (अ) लषाइ (म)। १०. पाए (अ) पाइ (म)। ११. आने (अ) आये (म)। १२. आहुति (अ) आहुत (म)। १३. पूजे बहु विधान ये (अ)। १४. मुनि सन प्रभु (न)। १५. किजिय (न)। १६. जज्ञ (न) (अ)। १७. तब निसिचर धाए (अ) (म)। १८. दाहि (अ)। १९. सत जोजन तेहि फेकेउ (अ), राम फेकि दीन्हेउ सत जोजन (म)। २०. राखे (म)।

सकल कटक रिपु लछिमन छन[१] महु मारि।
सकल मुनिन्ह मन हरपित जानि परारि ॥७३॥

तव मुनि कहेउ[२] राम सन कौतुक[३] एक[४]।
देषिय जग्य[५] जनकपुर राजन टेक ॥७४॥

धनुप जग्य सुनि रघुवर मन[६] हरपाय[७]।
विश्वामित्र महा मुनि संग दोउ भाय[८] ॥७५॥

चले जात आश्रम एक[९] देपि अनूप।
फल फूलन भर लतनन्हि[१०] वापी कूप ॥७६॥

सिला देपि पूछेउ मुनि कारन[११] तासु।
गौतम तिय गति कीन्ही स्वामी[१२] जासु ॥७७॥

चरन कमल रज परसत भइ सुकुमारि।
देपि काम रति लाजै[१३] रूप सुढारि ॥७८॥

अस्तुति कीन्ह वहुत विधि[१४] गई पति लोक।
अनरहित लहि आसिप भई विसोक[१५] ॥७९॥

पुनि प्रभु गए सुरसरी तीर सुजान।
गग सु महिमा अति[१६] मुनि कीन्ह[१७] वपान ॥८०॥

---

१. छिन (म)। २. कहे (अ)। ३. कौतक (म)। ४. येक (म)। ५. जाय (म)। ६. चले (अ) अति (म)। ७. हरषाइ (म) हरषाए (अ)। ८. भाइ (म) भाए (अ)। ९. यक (म)। १०. फूलन फल दलत न भल (म)। ११. प्रभु मुनि कही जु (म)। १२. हित अति (अ)। १३. लाजहि (न)। १४. प्रेम भरि (न) विविध विधि (अ)। १५. विशोक (अ) असोक (म)। १६. गंगा सु महिमा (अ), गंगा महिमा मुनि तव (म)। १७. कीन (अ) कही (म)।

कीन्ह अन्हान[1] मुनिन्ह[2] संग दीन्हेउ[3] दान।
चले जनकपुर प्रमुदित[4] तव नियरान॥८१॥

हरषे देषि नगर प्रभु सहित अनंत।
वाग तड़ाग वापिका सरस[5] वसंत॥८२॥

पुर वाहेर अति सोभा कहिय[6] न जाय।
जह जह दृष्टि जाइ[7] मन तहाँ लोभाय॥८३॥

सुभग एक आरामहिं[8] लषि मुनि धीर।
इहाँ रहिय[9] रघुनायक सुभग समीर[10]॥८४॥

मनि अनुसासन रघुवर कीन्ह निवास[11]।
तिरहुत नाथ सनत ही दिय सुख वास[12]॥८५॥

राम देषि दृग थाके[13] धरत न धीर।
ब्रह्म जीव सम भासैं मोहि[14] दोउ[15] वीर॥८६॥

कीन्ही वहुत वड़ाई चले लेवाय[16]।
भीतर भवन दीन्ह वर वास वनाय[17]॥८७॥

गए भवन नृप सोचत पन परिताप[18]।
दोऊ वनै संभु वर[19] दीजै आप॥८८॥

---

१. नहान (अ) किय असनान (म)। २. मुनिन (अ)(म)। ३. दीनेउ (अ)। ४. तुरतहि (अ)। ५. सरिस (न)। ६. कह्यो (अ)। ७. जाए (अ)। ८. आरामैं (अ)। ९. रहौ (म)। १०. सरीर (अ)। ११. कीन्हेउ वास (म)। १२. सह द्विज पास (न)। हिदय सहवास (म)। १३. नृप थकित ही रहेउ (न मन थाकेउ (अ)। १४. समुझत लषि (न)। १५. द्वौ (अ) १६. लिवाए (अ)। १७. भितर भवन अति सुंदर वास दिवाए (अ)। अति सुंदर वास बनाय (म)। १८. परतापु (म)। १९. फल (अ) सो मोहि दीजै आपु (म)।

देषि स्याम मृदु मूरति मन अनुराग[1]।
भए विदेह विदेह विराग विराग[2] ॥८९॥

प्रमुदित हृदय सराहत यह[3] भव सिंधु[4]।
जह प्रगटे[5] अस मानिक ए दोउ[6] बंधु ॥९०॥

पुन्य[7] पयोधि मातु पितु जिन[8] सुत एहु[9]।
रूप सुधा रस[10] नैनन्ह पियत सनेहु[11] ॥९१॥

रूप सील वय[12] बंसहि यह[13] सुष पूर्न[14]।
सुमिर कठिन प्रन[15] आपन लगे विसूर्न[16] ॥९२॥

भोर भये नृप कुवरन्ह लीन्ह[17] बोलाय।
देषि तेज बर सोभा सब नृपराय[18] ॥९३॥

मारतंड सम रामहि लषि नृप सर्व[19]।
उडगन सम सब लागहि[20] तेज बल गर्व[21] ॥९४॥

राजन राज समाजहि[22] रघुवर दोय[23]।
सोभा अमित न आवहि[24] बरनत सोय ॥९५॥

---

१. अति लाग (न)। २. देह बिनु भरि अनुराग (न)। ३. या (अ)। ४. पावन सिंधु (म)। ५. जनमे (अ)। ६. दिन जन (अ) (म) दोउ (जौ)। ७. पुण्य (न)। ८. जेहि (न)। ९. राउ (म)। १०. सुष (अ)। ११. पीवहि नयन सनेह (अ), सुष पीवहि नयन अघाइ (म)। १२. गुन (अ)। १३. सब (अ)। १४. पूर्ण (न)। १५. पन (अ)। १६. विसूर्ण (न)। १७. मन्हि (न) लये बोलाइ (अ) लीन्ह (न) (म)। १८. राए (अ), राइ (म)। १९. सब राज (न)। २०. लागै (अ)। २१. लागहि नृपन्ह समाज (न)। २२. समाजै (अ)। २३. दोए (न)। २४. पावै बरनन कोय (अ)। पावहि बरनत कोय (म)।

काक पच्छ[1] सिर सोहत स्यामल गौर।
हरन मार मद[2] मूरति थक मन दौर॥९६॥

तिलक भृकुटिया टेढ़ी काम[3] कमान।
श्रवन विभूषन सुंदर लषि मन मान॥९७॥

नासिक सुभग कपोलन अधर[4] सुलाल।
वदन सरद विध निंदक उन्नत भाल॥९८॥

उर[5] विसाल वृष कधर[6] भुज वल भूरि[7]।
पीत वसन अरु पदिकन्हि[8] मुकतन्ह पूरि॥९९॥

कटि निषंग कर कमलन्ह[9] धनु अरु वान।
सकल अंग मनमोहन जोहन जान[10]॥१००॥

राम लषन छवि देषत जो जेहि जोग[11]।
उर आनँद जल लोचन सब पुर लोग[12]॥१०१॥

नारि परस्पर कह लषि दोउन भाय[13]।
लह्यो जनम फल आजुहि येहि जग आय[14]॥१०२॥

---

१. काकपक्ष (न) काक पछा (म)। २. मृदु (अ)। ३. मदन (अ), तिलक भाल भृकुटी टेढ़ी मदन कमान (म)। ४. अधरन लाल (अ)। ५. कर (अ)। ६. वर कंधर (अ)। नर कंधर (म)। ७. बल भर पूरि (अ)। ८. मुकुतहि मुकुतहि (अ), पतकहि मुकतहि (म)। ९. कमलन (अ)। १०. जोग जहान (अ) (म)। ११. सब पुर लोग (म)। १२. उर अनंद जल लोचन सब पुर लोग (न), उर अनंद जु तु लोचन जो जेहि जोग (म)। १३. सब कह ए दोउ भाय (अ), लषि कहै ये दोउ भाइ (म)। १४. लिहे जनम फल आजुहि येहि जग आय (अ), लेहु जनम फल अजुहि ये जग धाइ (म)

यह वर जानकि जोगहि[1] मिलि[2] नृप होय[3] ।
हम सब मंगल गावहि विधि वस सोय[4] ॥१०३॥

ऐहि[5] विधि करत मनोरथ जस जेहि[6] भाव।
हियरा भरि भरि आवहि[7] रुकहि[8] न चाव ॥१०४॥

अनुज समेत जनक तब बहु नृप पाय[9] ।
मुनि दोउ बीरन्ह सब मप भूमि देपाय[10] ॥१०५॥

दिए दिव्यतर आसन सब ते ऊंच।
उज्ज्वल परम विमालहि सील समूच[11] ॥१०६॥

भूप किसोर ओर दोउ[12] बीच मुनीस।
पुर नर नारि अनंदित लजित महीस॥१०७॥

जनक कहेउ उपरोहित सियहि[13] बुलाय।
सपित मध्य सजि ल्याए[14] मद रति जाय[15] ॥१०८॥

रुप दीपिका[16] सोहत भवन सपीन[17]।
मृगा मृगी सम[18] पुरजन मन बुधि लीन[19] ॥१०९॥

---

१. लायक (न) (जौ)। २. बड़ (न) (जौ)। ३. होए (न)। ४. सोए (न)। ५. येहि (अ) यहि (म)। ६. जेहि जस (अ) जो जेहि (म)। ७. हृदो भरि भरि आवै (अ), हिरदै भरि भरि आवै (म)। ८. थकै (अ) (म)। ९. लिए रंग महि आए (अ), रामहि मग सह आय (म)। १०. दिहे दिव्य वर आसन बड़ सुप पाय (अ), दिये दिर्घ वर आसन बड़ सुष पाय (म)। ११. यह छन्द अन्य दो प्रतियों में नहीं है। १२. दुहु (म)। १३. सीय (अ) (म)। १४. ल्याइ (अ) साजे (म)। १५. मद रत जाए (अ), लाजी मद रति जाइ (म)। १६. दीपका (न)। १७. परम प्रवीन (अ)। १८ सब (अ) (म)। १९. नयत लीन (अ), लषि तन लीन (म)।

सीतहि देषि सराहत पुरजन भाग।
वर साँवरो विलोकहि अति अनुराग॥११०॥

प्रथम जनक जो देपत आपन कीन[१]।
अव छोड़त अति लार्जाह भा अति पीन[२]॥१११॥

कहहिएक[३] भलि वातहि[४] हम कह सूझ।
तेज प्रताप जहाँ है तहँ वल वूझ॥११२॥

तव वोले वंदीजन[५] कहि पुरुपार्थ[६]।
दीप दीप के भूपति जुरे सुआर्थ[७]॥११३॥

कीजै सव अपनो वल जस जेहि[८] होइ।
सुनत उठे[९] आमरुपत मूरप सोइ[१०]॥११४॥[११]

वर्राह धनुष वल करि करि डगै न चाप[१२]।
वानर हाथ नारियर[१३] लषि तजि आप॥११५॥

तव नृप दुषित अवीरज वोले वात[१४]।
देस देस के नृप सव सुनि समुहात[१५]॥११६॥

---

१. तो का करि पन (न) (जौ)। २. अति लज्जा सब हँसिहैं जन (न)। चिन्त्य-पाठ (न) तथा (जौ) प्रति में—प्रथम जनक जो देषत तो का करि पन। अब छोड़त अति लज्जा जेब हँसिहैं जन। ३. कहत येक (अ)। ४. वातन (अ) (म)। ५. वंदीजन बोले (न)। ६. पुरषारथ (न)। ७. भूपहि जुरे सब स्वारथ (न), सप्त दीपके भूपति जुरे समर्थ (म)। ८. जहँ लगि (अ)। ९. उठे सकल (अ)। १०. अति लघु लोइ (अ)। ११. यह छन्द प्रति 'म' में नहीं है। १२. धरै धनुष अति बल करि उठै न चाप (अ)। उठै न चाप (म)। १३. पाय नारिअर (अ) (जौ)। १४. गदगद बोल (न) (जौ)। १५. आए सुनि मन कौल (न) (जौ)।

कोऊ सक न चढ़ावन[1] धनु अति भार।
बीर विहीन भई महि छपित उदार॥११७॥*
घर घर जाहु सकल नृप आसा छोरि[2]।
बिजै समागम पूजव[3] धनुप बहोरि॥११८॥*
जो पन तजउं लाज बड़ि बिधि अस[4] कीन।
कुंअरि कुआंरि रहउ बरु जस नहिं[5] छीन॥११९॥*
कहउ तपोवन रामहिं भंजहु चाप।
राजा दुपित[6] अधीरज मेटहु ताप॥१२०॥*
तब उठि राम ठाढ़ भए[7] आएसु मान।
सब मुनि हरपि असीसहिं[8] परम[9] सुजान॥१२१॥*
आपन सुकृत मनावहि[10] सब पुर लोग।
तोरहु राम धनुप जिमि[11] छत्रक जोग॥१२२॥
तब रघुवर आनंद भरि गे[12] धनु पास।
सीता सहित बिलोकेउ[13] सब रनिवास॥१२३॥
जानि जानकी भीरहिं[14] परम कृपाल।
लपेउ न कोउ सब देपत तोरेउ प्याल[15]॥१२४॥

---

१. काहू न सके चढ़ावत (न)। २. बुधि बल छोर (अ)। ३. पूजेहु (न) (जौ)। ४. सब (अ)। ५. ही (अ)। ६. हर्षित (म)। ७. भे (अ)। ८. हर्षि असीसत (न)। ९. पर्म (न) (जौ)। १०. संभारहि (न) (जौ)। ११. जनु (अ) १२. गए (न) १३. बिलोके (म) १४. जानकी जानि भीर अति (न) (जौ) १५. लखे न कोहू चढ़ावत टुट ततकाल (अ)

*छंद ११६, ११७, ११८, ११९, १२१ और १२२ प्रति (म) में नहीं हैं।

आकरषेउ सिय मन[1] अरु जनकहि सोच।
भंजेउ भृगुपति मद सह दुरि गए पोच[2] ॥१२५॥*

बाजन लगे पंच धुनि हनत[3] निसान[4]।
सजहिं[5] आरती गावहि मंगल गान ॥१२६॥

नव जयमाल जानकी प्रभु गर दीन्ह।*
सुमन बरषि सब देवन[6] अस्तुति कीन्ह ॥१२७॥

रचन लगे पुर मंगल मांडव छाय[7]।
गयो बसीठी अबवहि राव[8] बुलाय ॥१२८॥*

सजि बरात नृप आए लगन समेत।
नगर लोग आनंदित[9] धरम[10] निकेत ॥१२९॥

सपि सब कहहिं परस्पर मिलि दस[11] पांच।
चारिउ जोरि सोहावन सांचहु[12] साच ॥१३०॥*

गावि भुवन के तप ते सपि सब आजु[13]।
संभु[14] कृपा ते चौगुन भा नव[15] काजु ॥१३१॥*

---

१. सह जनकऊ चित (अ) २. जनकऊ चीत (अ) ३. विपुल (न) ४. निशान (अ) ५. करहिं (अ)। ६. देवन्ह ()। ७. माडो छाए (अ) ८. राउ (अ)। ९. आयेनंदित (म)। १०. धर्म (न)। ११. दश (अ)। १२. होहि पुर जो विधि (न)। १३. दाया बनेउ समाज (न)। १४. शंभु (अ)। १५. रोपेउ प्रथमहिं (न)।

* छन्द १२५ प्रति (म) में इस प्रकार है—
धनु तोरेउ सिय मन सम जनकहि चित्त।
भजेउ भृगुपति मद सह हरपेउ मित्त ॥११६॥

* छन्द १२७ और १२८ प्रति (म) में मिला कर लिखे गये है—
तव जयमाल जानकी प्रभु पहिराय।
रचन लगे पुर मंगल मंडफ छाय ॥११७॥

नहि अस समधी[1] दूसर जग मह कोय[2]।
भये न हैं नहि होइहि इन सम दोय[3] ॥१३२॥*

नहि अस दूलह दुलहिन ब्याह उछाह।
हम सब पुन्य पयोनिधि नृप अवगाह[4] ॥१३३॥*

ब्याह[5] सुचारिउ[6] सुत तव[7] कौसल नाथ[8]।
आए मुदित अवध नृप पूरण पाथ[9] ॥१३४॥*

एहि विधि राम ब्याह जस बरनत लोग।
पार न पावहि श्रुति सब गावन जोग[10] ॥१३५॥

नहि भारति नहि सेसहु[11] नाहि गनेस।
ब्रह्मादिक नहि कहि सक जान[12] महेस ॥१३६॥

अति मति मंद कहेउ[13] कछु[14] तुलसीदास।
जिमि निज कल बल मसकहु उड़हि[15] अकास ॥१३७॥

---

१. सम धव (न)। २ कोए (न)। ३. आगे भए न अब है अउर न होए (न) (जौ)। ४. बरनत काह (अ)। ५. ब्याहि (स)। ६. चारो (न)। ७. वर (न) (अ)। ८. कोशलनाथ (अ)। ९. कह नृप वर पाथ (अ) (स)। १०. पावन परम श्रवन श्रुति बरनन जोग (अ), आतम मि मंद कहै किमि तुलसी येहि जोग (स)। ११. सेसो (अ)। १२. जानै सुदै (अ)। १३. कहै (अ) १४. किछु (अ)। १५. मसकहि निज कर दल उडत (अ)।

* (स) प्रति में नहीं हैं।

नृप कर जोरि कहेउ गुरु सुनिये नाथ।
राउर चरन पूजि[1] प्रभु भएउ सनाथ॥१३८॥
रामहि देहु[2] राजपद यह अभिलाष।
पुनि प्रभु मरन जियन कर रहै न माष॥१३९॥
महाराज सुभ कारज करिय न देर।
जो विधि पुरव[3] मनोरथ सब सुप हेर॥१४०॥
मुदित राउ गए[4] मंदिर सचिव बोलाइ[5]।
लीन्ह सकल मति[6] सुंदर साज सजाइ॥१४१॥
सुनतहि नगर बधावन कैकइ दीन[7]।
लगी देव माया बस कटु प्रन[8] कीन॥१४२॥
रहि चलिए[9] जननी कह आनंद कंद।
कवन[10] समय वन दीन्हेउ[11] विधि बड़ मंद॥१४३॥*
दसस्यंदन मन चंदन करन प्रकास।
केहि कारन वन दीन्हे[12] भएउ[13] विपास[14]॥१४४॥

---

१. रावरे चरण पूजि (न) राउर पुन्य पूजिपद भयो (अ) रावर पुन्य पूजि पद भयेउ (म)। २. देऊ (न) देव (म)। ३. विधि जो पुरव (अ) (म)। ४. गे (अ)। ५. बोलाए (अ)। ६. मत (अ) ७. सुनि अभिषेक की बात (म)। ८. कपट न (अ) (म)। ९. रहे चले जननी पहँ (अ)। १०. कौन (अ)। ११ दीनेहु (न)। १२. केहि वन दीन महासुख (न) (जौ), कौन समय वन दीन्हेउ (म)।१३. भये विभास (अ)। १४. विधि वड़ भास (म)।

* (म) प्रति में नहीं हैं।

कहेउ[1] सचिव सुत कारन रहि गहे[2] मौन।
एकहु आंक[3] न चल सक रापहि कौन॥१४५॥

राजा धरम[4] विचारत[5] तुम्ह[6] कह त्याग।
मानिक कर ते डारत[7] का चहि लाग॥१४६॥

तुम तजि धरम[8] सील भयो चाहत राउ[9]।
नारि विवस[10] न विचारेउ रहेउ न भाउ[11]॥१४७॥*

जो सुत पिता वचन रत अति हित जान[12]।
सो सुत जननीहु[13] आरत रापहि[14] मान॥१४८॥

सुनत कौसिला[15] बानी राजिव नैन[16]।
भरि आए जल रहि गए आनंद अैन॥१४९॥*

जो मैं रहउं मातु हित काज नसाय।
दोष होइ महि आएक सुर विलपाय॥१५०॥

कीन्ह मातु परितोषहि सिय समुझाय।
चले जननी पद बहु विधि सीस नवाय॥१५१॥

---

१. कहा (अ)। २. गए (अ) माता (म)। ३. अंग (न) चलै न एको आंके बुधि करि गौन (अ), मातु चरन सिर नायेउ कियौ राम बनगौन (म)। ४. धर्म (न)। ५. विचारा (अ)। ६. तुम (अ)। ७. सोल गवावत (अ)। ८. धर्म (न) सीलवरस (अ)। ९. राव (अ)। १०. नारी बस (अ)। ११. रहेउ न रहे अभाव (अ)। १२. जानि (अ)। १३. जानेउ (अ)। १४. राषेउ (अ)। १५. कौशिला (अ)। १६. नयन (अ)। १५० और १५१ वां छन्द प्रति (अ) *और १४३, १४७, और १४९ (म) में नहीं हैं।

लषन लपेउ प्रभु गवनब धीरज त्याग।
राम चरन सिर नाएउ अति अनुराग ॥१५२॥*

---

* इस छन्द से लेकर प्रति (अ) और प्रति (म) में अतिरिक्त भिन्न पाठ है।

करि परबोध चले प्रभु सिय संग लागि।
जो रापो माता हित प्रानहि त्यागि ॥१३॥
(प्रति 'म' में भी है।)

सीय सहित पग लागे चले तुरंत।
समाचार सब सुनतहि विकल अनंत ॥१४॥
तन कंपित मन गदगद आए पास।
रघुपति देपा अनुजहि परम उदास ॥१५॥
(प्रति 'म' में भी है।)

चलहु मातु सन मांगहु आयसु जाय।
जननी भवन गये तब अति हरषाय ॥१६॥
जननी कहेउ जाउ बन तौ बड़ भाग।
सीय राम पद सेवा अति अनुराग ॥१७॥
चले नाय पद पंकज सीस बहोरि।
सियरघुपति पहँ आए हित कर जोरि ॥१८॥
चले सकल नृप मंदिर मन बड़ चाव।
हिये सोच भीतर जनि कह कछु राव ॥१९॥
(प्रति 'म' में भी है।)

राउ देषि सुत दूनौ सीय समेत।
व्याकुल परे धरनि तल अधिक अचेत ॥२०॥
(प्रति 'म' में भी है।)

रघुपति चले बनहि तब परिहरि राज।
उतर अवध सुपेनहि सोक समाज ॥२१॥

रघुपति कहेउ लपन सन चलहु सुभाय।
नहि विषाद कर अब (सर) समय नसाय॥१५३॥

विदा मातु सन ह्वै करि चले अनंत।
नृप मंदिर महु आए सिय भगवंत॥१५४॥

भूप उठे अति व्याकुल लखि सुत दोय।
जनक सुता कहँ देषत धीर न होय॥१५५॥

पितु पद वंदि चले प्रभु मुरछित राउ।
नगर लोग सब व्याकुल सूझ न दाउ॥१५६॥

गुरु कँह सवहि सौंपि प्रभु तमसा तीर।
सचिव सीय (सह बंधु) बसे रघुवीर॥१५७॥

अवध भयानक लागहि घर वन बाग।
एकहि एक डरत लपि निकसे भाग॥१५८॥

क्रमशः— केवट कीन पहुनई प्रेम प्रमोद।
सो जामिनि सिगरौरे रहे भरि मोद॥२२॥
(प्रति 'म' में भी है।)

प्रात भये रघुनंदन मुनि कर साज।
पूजेउ बहु सुरसरिहि संग गुहराज॥२३॥
येहि विधि चले राम जव सिय अकुलानि।
लछिमन गए तुरत ही षोजत पानि॥२४॥
(प्रति 'म' में भी है)

ठाढ़े भये विटप तर सिय श्रम देषि।
ग्राम लोग सब आए हृदय विशेषि॥२५॥
तिय सुभाय एक पूछति सन सकुचात।
बोलहि वचन प्रेम वस पुलकित गात॥२६॥
(प्रति 'म' में भी है।)

अति सनेह तन पुलकि[1] परम सचु पाइ।
आंचर ओट असीसहि ईस मनाइ॥१८०॥

जब लगि गंग जमुन महि[2] सागर पानि।
तब लगि मांग कोगि सुप रहहु जुडानि[3]॥१८१॥

बारहि बार पाय परि बिदा कराहिं[4]।
फिरउ बहोरि न फिर मन पछुमनु जाहिं[5]॥१८२॥

सील सनेह सराहि रूप उर राषि।
सिय पग[6] लागि फिरी[7] सविनय[8] बहु भाषि॥१८३॥

कोउ जानकी सराहहिं[9] रामहि कोउ।
कोउ कह कुंवर गौर सुठि सुंदर दोउ॥१८४॥

अनमन बदन मलिन[10] मन कछु न सोहाय।
लै गए मनहि चोराय[11] पथिक दोउ[12] भाय॥१८५॥

फिरि फिरि पंथ निहारहि कहहि सप्रीत।
फिरे न बहुरि बटाउ गए[13] दिन बीत॥१८६॥*

मग लोगन्ह येहि भाति नयन फल देत।
प्रभु[14] गए चित्रकूट सिय लषन समेत॥१८७॥

सुनत चले मुनि जहं तहं अति अनुराग।
होइ है आजु सुफल सब जप तप जाग॥१८८॥*

---

१. अतिहि सनेह पुलक (अ)। २. सह (अ) ३. जडानि (न)। ४. कराए (अ)। ५. फिरै बहोरि फिरै मन कछु मन जाए (अ)। ६. पद (अ)। ७. फिरै (अ)। ८. विनय (अ)। ९. को जानै नहि कैसेहु (अ)। १०. मैल (न) ११. चोराए (अ) विचार। (म)। १२. दो (अ)। १३. गे (अ)। १४. गये (म)।

* छंद १८६ तथा १८८ से २२२ तक (म) प्रति में नहीं हैं।

जो पै राम न जानेउ समुझि[1] सुभाय।
सत सुरेस सम राजत[2] जीवन जाय॥१८९॥

देखि राम छबि गए बिबुध सब सोक[3]।
रचे परन तृन साल गये[4] निज लोक॥१९०॥

सोहत परन कुटी तर सीता राम।
लखन समेत बसहु तुलसी उर[5] वाम॥१९१॥

पय अन्हाहु[6] फल पाहु[7] परिहरी[8] आन।
सीय राम पद सुमिरहु तुलसीदास॥१९२॥

काल कराल बिलोकहु होउ[9] सचेत।
राम नाम जपु तुलसी प्रेम समेत॥१९३॥

तप साधन सब दान नेम उपवास[10]।
सब ते अधिक राम पद तुलसीदास॥१९४॥

कलि नहिं[11] ज्ञान बिराग न जोग समाधि।
राम नाम जपु तुलसी नित निरुपाधि॥१९५॥

राम नाम दोउ[12] आखर हिय हित[13] आनु[14]।
राम लखन सम तुलसी सिखवन मानु[15]॥१९६॥

माई बाप गुरु स्वामि राम को[16] नाम।
तुलसी जेहि न सुहाइ[17] ताहि बिधि बाम॥१९७॥

---

१. रामहि जानैं सहज (अ)। २. राजा (अ) ३. येहि विधि सुर विधि ओक (अ)। ४. तून गाला गे (अ)। ५. मन तुलसी (अ)। ६. अन्हाए (अ)। ७. पाये (अ)। ८. परिहरि (अ)। ९. होहु (अ)। १०. तपन सराहि व्रत दान नेम उपास (अ)। ११. विज्ञान (अ)। १२. दोइ (अ)। १३. बिच (अ)। १४. आन (अ)। १५. मान (अ)। १६. कै (अ)। १७. सुहाहि तेहि (अ)।

राम जपहु तुलसी तुम[1] होउ[2] विसोक।
लोक सकल कल्यान नीक परलोक॥१९८॥
सगरइ[3] सोच विमोचन मंगल गेहु[4]।
राम नाम पर तुलसी करिय[5] सनेहु॥१९९॥
महिमा राम नाम कर जान महेस।
देत परम पद कासी करि उपदेस॥२००॥
कलस जोनि निज जानेउ नाम प्रताप।
कौतुक सागर सोपेउ करि सोइ जाप॥२०१॥
जान[6] आदि कवि तुलसी नाम प्रभाव।
उलटा जपत मूव भा भे[7] रिपि राव॥२०२॥
एकहि एक[8] सिपावहि जपहि न आप।
तुलसी राम नाम कर वावक पाप॥२०३॥
एकहि एक[9] कहत सब समुझ न कोय[10]।
बड़े भाग अनुराग राम पद होय[11]॥२०४॥
राम नाम सम तुलसी मीत न आन।
जो पहुंचाव परम[12] पद तन अवसान॥२०५॥*

---

१. तुम तुलसी (अ)। २. होहु (अ)। ३. सिगरी (अ)। ४. गेह (अ)। ५. परम सनेह (अ)। ६. जानि (अ)। ७. कोल ते भए (न) (जौ)। ८. येकहि येक (अ)। ९. येकहि येक (अ)। १०. सुमिरत कोए (न)। ११. होए (न)। १२.पर्म (न)।

* छन्द २०५ के बाद (अ) प्रति में यह छन्द है—

निसि वासर जो ध्यावै आपर दोय।
राम वटाउ हिय बसै तुलसी सोय॥५६॥

इस छन्द के बाद अयोध्या कांड की कथा भिन्न छन्दों में वर्णित है, जो निम्न प्रकार है—

चित्रकूट मंह तुलसी नाम प्रताप।
प्रगट पुकारत सब मुख रघुपति आप ॥२०६॥
चित्रकूट महि देषत आवत हीय।
तुलसी सुमिरन कीजिय रघुवर सीय ॥२०७॥
चित्रकूट गिरि देषत रघुवर रूप।
तुलसी मिलहि राम सिय भगति अनूप ॥२०८॥
तुलसी निरषि राम वन वड़ सुष होय।
पद अंकित महि रेषा पूरण सोय ॥२०९॥
मन्दाकिनि मज्जन करि पाप नसाइ।
तुलसी वसहि हृदय मंह सिय रघुराइ ॥२१०॥
पैसरनी अरनी सम पावक प्रेम।
राम कृपा ते तुलसी पावहि क्षेम ॥२११॥
नीच ऊंच नर नारिन्ह वन महि ग्राम।
तुलसी राम कृपा ते सव अभिराम ॥२१२॥
नाम महातम भाषहि मुनि सुर सिद्ध।
तुलसी ताप निवारन मंगल रिद्ध ॥२१३॥
मुनि तिय सुतन्ह सिषावहि जेहि अस नाम।
सोइ प्रभु प्रगट विराजहि पूरन काम ॥२१४॥
एहि विधि मुनि अनुरागिहि सकल समेत।
वसहि लषन सिय रघुवर परन निकेत ॥२१५॥
तुलसी कहेउं राम वन गवन पुनीत।
अपर कथा अव भाषउं परम विनीत ॥२१६॥

क्रमशः [प्रति (अ)]

येहि विधि राम गवन वन वरनेउ सोय।
सीय सहित दोउ भाई अपर न कोय ॥५७॥

प्रभु पहुंचाइ बनहि जब फिरेउ निषाद।
सचिव सहित रथ देषेउ विकल विषाद॥२१७॥

तब निषाद परितोषेउ मंत्रिहि सोय।
चाहत करन राम बिनु बीर न होय॥२१८॥

चारि सारथी आपन दीन्हेउ संग।
चले सुमंत्र नगर सब व्याकुल अंग॥२१९॥

क्रमशः (अ) प्रति

बालमीक मुनि मिल कै चले रघुनाथ।
जाय बिलोके पैसुनि पूरन पाथ॥५८॥

चित्रकूट बस रघुपति पैसुनि तीर।
सीता सहित बिराजत परन कुटीर॥५९॥

सुनत आगमन आए सह सुर रांज।
बिनती कीन्ह बहुत बिधि भा सब काज॥६०॥

हरषित गये लोक सब सुर गुरु संग (वृंद?)
राज राम सिह लषन सरद जिमि चंद॥६१॥

सुनि आगमन सकल मुनि अस्तुति कीन।
जो जेहि भाव सुगम वर हरषित दीन॥६२॥

सुनत किरात किरातिनि गे प्रभु पास।
येकटक सकल बिलोकहि प्रेम पियास॥६३॥

कीन्ह बहुत अनुहारी मन आनंद।
बिबिध भांति सनमाने रघुकुल चंद॥६४॥

ये (हि) बिधि सुषी बसहिं बन रघुकुल बीर।
अपर कथा अब भाषौं भजि रघुबीर॥६५॥

तब. निपाद देषराएउ सैल अनूप।
मंदाकिनि तट तहाँ रहत सुर भूप॥२३१॥

करत दंडवत भरतहि प्रेम अपार।
पद रज नैनन्हि लावहि बारहि बार॥२३२॥

रघुवर मिलन सरिस सुप हिय महं होत।
सबहि बिसरि गएउ मारग प्रेम निसोत॥२३३॥

भरत लपे प्रभु सोभित मुनि के वेष।
पुलक अंग जल लोचन हरप विशेप॥२३४॥

पाहि पाहि कहि स्वामी महि महं लेट।
आरत वचन सुनत प्रभु बरबस भेट॥२३५॥

अनुज मातु गुरु मुनि गन अरु पुर लोग।
तुलसी मिले सकल प्रभु जो जेहि जोग॥२३६॥

क्रमशः (अ) प्रति

चित्रकूट वन सुनिकै भई अस प्रीति।
वरनि सकै को तुलसी प्रेम की रीति॥७३॥
सैल देखि मन आनंद लोचन छाय।
सिथिल अंग पग डगमग धरत न पाय॥७४॥
राम चरन रज लावहि नयनन्हि माहिँ।
राम मिलन कर सुषमा हृदय जुड़ाहिँ॥७५॥
तब निषाद देषरावा वट तप पुंज।
अपर वृक्ष सब लागे निरखहु कुंज॥७६॥
तहि तर रुचिर वेदिका वसे सिय राम।
सुनि आये सब भाषे प्रभु गुन ग्राम॥७७॥
करत दंडवत तहँ ते चले सप्रेम।
तापस जिमि तप फल भल बीते नेम॥७८॥

तब मुनि कहेउ जगत गति माया रूप।
ब्रह्म सक्ति संग सोहत परम अनूप॥२३७॥

पुनि नृप कर तन त्यागन कह मुनि नाथ।
सुनत विकल भए लषनहु सिय रघुनाथ॥२३८॥

रोवहि सकल विकल अति राज समाज।
मानहु कीन्ह गवन नृप सुरपुर आज॥२३९॥

तब गुरु सबहि बुझाएउ सरित नहाय।
ब्रत निरंबु प्रभु कीन्हेउ आयसु पाय॥२४०॥

बीते तीन दिवस प्रभु सुचिहि होत।
जासु नाम भवसागर श्रुति कह पोत॥२४१॥

सुद्ध सच्चिदानन्द भानु कुल केतु।
करत चरित नर सगुन सागर सेतु॥२४२॥

क्रमशः (अ) प्रति

इसके उपरान्त (अ) प्रति का ७९ वां तथा ८० वां छंद (म) प्रति के २१ वें तथा २२ वें छन्द के समान है—

लषन देखि तब भरतहि कीन जनाव।
तुरत उठे रघुनंदन सिथिल सुभाव॥७९॥
अति आतुर उठि धाए लिये उठाय।
बड़ी बार तक राखे हृदय लगाय॥८०॥

[(म) प्रति—जनाय, सुभाय, धायो, उठाइ, लगि, लगाइ]

क्रमशः (अ) प्रति—

मिले लषन सन भरतहि प्रेम अनंद।
प्रभु पुनि भेटे सत्रुहन हरि दुख दंद॥८१॥
यहि विधि मिले सबहि प्रभु करि परितोष।
जननी अरु सब परिजन करि संतोष॥८२॥

एहि विधि सुद्ध भये दिन बीते दोय।
राम कहेउ मुनि बूझिय कीजिय सोय।।२४३।।

मुनि रुष लषि प्रभु भरतहि पांवरि दीन्ह।
भरत प्रेम परिपूरन सिर धरि लीन्ह।।२४४।।

कीन्ह वहुत विधि विनती मन हरषाय।
सुमन वरषि जस गावत सुर समुदाय।।२४५।।

बिदा कीन्ह सब रघुवर प्रेम बढाय।
गुरुजन पुरजन जननी सुप दुष पाय।।२४६।।

परबस चले जाहि सव विकल अचेत।
सुमिरहिं लषन राम सिय प्रेम समेत।।२४७।।

आए परन कुटी प्रभु सिया अनत।
देवन्ह दीन्ह भरोसो वसे सुतंत।।२४८।।

क्रमशः (अ) प्रति

इसके उपरान्त (अ) प्रति का ८३ वां छंद (स) प्रति के २३ वें छन्द के समान हैं—

भरत कीन बहु बिनती मुनि भगवान।
हरषित दीन पादुका सब कर प्रान।।८३।।

क्रमश (अ) प्रति

भरत शीस धरि भाषे सुनिय गोसांय।
अवधि आज लौं बिनती देषव पाय।।८४।।

इसके उपरान्त (अ) प्रति का ८५ वां छंद (स) प्रति के २४ वें छंद के समान है—

बहु विधि प्रेम प्रसंसा करि दोउ भाय।
चले सकल दल साजे अवधहि आय।।८५।।

पहुँचे भरत अपर जन सकल निधान।
अवधि आस सब रार्पाहि आपन प्रान॥२४९॥

चरन पीठ सिंहासन धरि दिन सोधि।
बंदि मातु पद सेवा कहेउ प्रबोधि॥२५०॥

गुरु अनुसासन लीन्हेउ विनय सुनाय।
नंदि ग्राम बसे महि पनि-दर्भ डसाय॥२५१॥

अजिन बसन फल असनहि जटा बनाय।
रहत अवधि चित दीन्हे अस प्रभु पाय॥२५२॥

प्रेम नेम व्रत निरपत मुनिहु लजात।
सिंहासन प्रभु पांवरि पूजत प्रात॥२५३॥

प्रभु अनुराग अमी के सब पुर लोग।
निज निज काज संवारत जो जेहि जोग॥२५४॥

क्रमशः (अ) प्रति

राज काज सब सौंपे सचिव बोलाय।
पुरजन सुबस बसाये प्रेम बढ़ाय॥८६॥

सौंपि मातु सेवकाई लहुरे भाय।
आपु लीन गुरु आयसु सीस चढाय॥८७॥

इसके उपरान्त (अ) प्रति का ८८ वां छन्द (म) प्रति के २५ वें (अन्तिम) छन्द के समान हैं—

नंदि ग्राम अवनी पनि बसे सनेम।
भरत हृदय नित बाढ़ै-प्रभु पद प्रेम॥८८॥

[(म) प्रति—नंदीग्राम अवनि, बाढ़हि]

सुनत घटज मुनि आतुर गए प्रभु पास।
चरन परत उर लाए अधिक हुलास॥२६४॥

पुनि निज आश्रम आनेउ पूजा कीन।
कंद मूल फल अंकुर भोजन दीन॥२६५॥

मुनिन्ह मध्य प्रभु सोभित सव की ओर।
एकटक सकल निहारहि इंदु चकोर॥२६६॥

तव रघुपति मुनि सन कह कहिय निधान।
जह वसि काज होइ तुम परम सुजान॥२६७॥

तव मुनि कहेउ राम सन सुनिए देव।
तुम्हरी कृपा द्वैत कछु जानउं भेव॥२६८॥

पंचवटी वर आश्रम गोदहि पास।
मुनि कर श्राप निवारिय कीजिय वास॥२६९॥

क्रमशः (अ) प्रति :—

इसके उपरांत (अ) का ४ का छंद (स) प्रति के पहले छन्द की प्रथम पंक्ति से मिलता है, द्वितीय पंक्ति भिन्न है—

वधि विराध सरभंगहि प्रभु गति दीन।
घट संभव के सिष्यहि प्रभु संग लीन॥४॥

(स) प्रति के पहले छंद की दूसरी पंक्ति इस प्रकार है—

पंचवटी रह दस सिर जनक सुता हरि लीन॥१॥

अगस्त्य आश्रमहिं तव नियराय।
हरषित आये कुंभज लषि रघुराय॥५॥

आश्रम जाय विविध विधि पूजा कीन्ह।
मुनि अगस्त आनंदित प्रभु कहँ चीन्ह॥६॥

मुनि सन विदा मांगि सिय लपन समेत।
गोदावरी निकट करि परन निकेत ॥२७०॥

चरन परसि कानन गा अघ सब दूर।
फल फूलन द्रुम लागे भए भरपूर ॥२७१॥

गिद्धराज सन मिलि प्रभु बसे सुपेन।
मुनि भय विगत भए सब आनंद अैन ॥२७२॥

जासु चरन रज परसत गौतम नारि।
तुलसी भई सुभग तन अधिक सवारि ॥२७३॥

कौसिक संकट भानेउ चरन प्रताप।
जनक राइ सुप दीन्हेउ मिस करि चाप ॥२७४॥

चरन पांवरी राषेउ भरतहि प्रान।
तुलसी पावन वल सब बसे निवान ॥२७५॥

क्रमशः (अ) प्रति :—

तब रघुपति मुनि भाजे जोरे हाथ।
प्रभु जानेउ जे कारन आयेउ नाथ ॥७॥
अब बरवास बतावहु करउं निकेत।
निसिचर सकल विनासो सुर महि हेत ॥८॥
दंडक कानन आये बस रहि धूर।
चरन परस प्रभु कीजिय द्रुम भरि पूर ॥९॥
तब कुंभज रिषि आयसु पंचवटि जाय।
गीध मिताई करिकै बसि द्वौ भाय ॥१०॥
सब मुनि आयसु धरि कै बसे द्वौ वीर।
सीय लषन संग सोहत परन कुटीर ॥११॥
पुनि लछिमन उपदेशे ज्ञान विराग।
भक्ति जोग सुनि हरखे अति अनुराग ॥१२॥

गिरि वन द्रुम तृन पग मृग चरन प्रसाद।
तुलसी मिटेउ सकल कर परम विषाद॥२७६॥

चरन रेनु महिमा कहि बरसत फूल।
राम लषन सिय निरषहि सुर अनुकूल॥२७७॥

एहि विधि बसहिं राम छवि अमित अनंग।
कहत लषन सब बहु विधि कथा प्रसंग॥२७८॥

ज्ञान विराग जोग कछु माया भेद।
भगति निरुपहिं तुलसी सोधित वेद॥२७९॥

कहत कछुक दिन बीते भगति प्रभाव।
रावन बहिन देषि प्रभु उपजेउ चाव॥२८०॥

वेद नाम गनि अंगुरिन्ह षंडि अकास।
सूपनषा कहं प्रेरेउ लछिमन पास॥२८१॥

क्रमशः (ज) प्रति—

येहि विधि कछु दिन वीते कहत विवेक।
सूपनषा तहं आई सुंदर वेष॥१३॥
वेद नाम गुनि अँगुरिन षंडि अकास।
सूपनषा कहं पठये लछिमन पास॥१४॥

यही छंद लघु पाठ में इस प्रकार है—

वेद नाम कहि अंगुरिन खंडि अकास।
पठयो सूपनखाहि लखन के पास॥२८॥

क्रमशः (ज) प्रति

पर दूषन तृसिरा वधि कर सुर काज।
पंचवटी मह सोहत कोसल राज॥१५॥
माया रूप कुरंगहि सनिमय देषि।
सीता कहत राम सन हरष विसेषि॥१६॥

प्रिया प्रीति बन विहरत मृग संग राम।
वेद अंत नहि पावहि कहि गुन ग्राम॥२९४॥

गएउ दूरि बन गह्वर मारेउ बानु।
लषन पुकारेउ मन महँ कृपानिधानु॥२९५॥

तात पुकारे कोउ तुम जिमि रघुनाथ।
वरवस सिया पठाएउ तब अहिनाथ॥२९६॥

अनुज देषि प्रभु बाहिज चिंता कीन्ह।
कोउ पल छल करि सीतहि निजु हरि लीन्ह॥२९७॥

कुटी निहारि सिया बिन विकल विसेषि।
देवन्ह भयेउ अदेसा प्रभु दुष देषि॥२९८॥

राम कहे—भैया लछमन का विधि कीन्ह।
दुष विसरावन सीता केहि हरि लीन्ह॥२९९॥

क्रमशः (अ) प्रति—

फिरे राम मृगया वधि लषन विलोक।
कानन सिया हेराएउ पाठठि रोक॥२८॥

आये परन कुटी जहं मलिन अवास।
देषि महा दुष कीन्हेउ गोदहि पास॥२९॥

राम कहे भैया लछमन का विधि कीन्ह।
दुष विसरावन सीतहि केहि हरि लीन्ह॥३०॥
(यह छन्द (न) प्रति के २९९ वें छन्द के ही समान है।)

चले सकल बन षोजत लछिमन राम।
तुलसिदास के स्वामी पूरन काम॥३१॥

षोजत प्रभु विरही इव बाहिज वेष।
पूछत विटप लखन सन मनुज विशेष॥३२॥

पोजत चले अनुज सह गीधहि देपि।
प्रिया विसरि गई तेहि लपि प्रीति विसेपि ॥३००॥[1]

गीधहि देइ परम गति पिंडहि दीन्ह।
धरि वपु सुंदर नभ चढ़ि अस्तुति कीन्ह ॥३०१॥

वधि कवंध सेवरी गति दीन्ही राम।
विरह विकल नर इव प्रभु सुप के धाम ॥३०२॥

पंपा सरहि निकट प्रभु वैठे जाय।
अस्तुति कीन्ह सकल तहं सुर मुनि आय ॥३०३॥

---

१. कनक सलाक कला ससि दीप सिपाउ।
तारा सी सिय लछिमन मोहिं दिपाउ॥

यह छन्द जौनपुर की प्रति १ में ही है। इसकी छंद संख्या भी ३०० है।

क्रमशः (अ) प्रति—

तनसुधि बुधि विसराए दुपित अधीर।
तव लछिमन समुझाए सुनु रघुवीर ॥३३॥
तव लगि है यह चिंता पवरि न पाय।
निमिष भरे महं आनो काल नसाय ॥३४॥
आगे परेउ गीध पति देपेउ राम।
जनक समान कृपा करि पठये धाम ॥३५॥

प्रति (अ) का ३६ वां छन्द प्रति (म) के दूसरे छंद के समान है—

वधि कवंध सेवरी के आश्रम जाय।
प्रेम सहित द्वौ भाई सुभ फल पाय ॥३६॥

प्रति (म) का पाठ—

वधि कवंध गति सवरी आश्रम जाय।
प्रेम सहित दोउ भाइ (न) अमृत फल पाय ॥२॥

तबहि देव रिषि आए विनय सुनाय।
संतन लच्छन भाषेउ तब रघुराय॥२०४॥

क्रमशः (अ) प्रति—

सबरी लीन भई तब प्रभु जिय जानि।
पुनि सीतहि बन षोजत सारंग पानि॥३७॥

करत विलाप त्रिविध विधि षग मृग देषि।
नारि सहित सब सोहहिं मरम विसेषि॥३८॥

प्रति (अ) का ३९ वां छंद प्रति (स) के तीसरे छंद के समान है।

पंपा सरहि गए प्रभु लषन समेत।
देषि सरहि मन हरषे कृपा निकेत॥३९॥

प्रति (स) का पाठ इस प्रकार है—

पंपा सरहि गये प्रभु तह नारद मुनि आय।
अस्तुति करत मगन मन प्रभु गुन गाय॥३॥

अरण्य कांड को केवल तीन छन्दों में पूर्ण कर प्रति (स) का अंतिम अंश इस प्रकार है—

इति श्री गुसांई तुलसीदास कृत
बरमै रामाइन। आरन कांड संपूरन
समापता।

क्रमशः (अ) प्रति—

बैठे बट के तरु तर त्रिविध समीर।
देषे चहुं दिसि सोहत पिय मृग नीर॥४०॥

तहं अज सुत मुनि आये बीन बजाय।
अस्तुति करत मगन मन प्रभु गुन गाय॥४१॥

तब हनुमंत दुहूं दिसि कहि समुझाय।
पावक साषीं दे करि प्रीति दृढ़ाय ।।३११।।

सुनि कपि कथा सकल फरकेउ भुज दंड।
बालि हतन प्रन कीन्हेउ बान प्रचंड ।।३१२।।

बालि मारि सुग्रीव राज प्रभु दीन्ह।
राम प्रवरषन गिरि पर आसन कीन्ह ।।३१३।।

फटिक सिला प्रभु सोहहिं लछिमन संग।
कहत भगति पथ बहु विधि कथा प्रसंग ।।३१४।।

वर्षागत निर्मल रितु सोचत राम।
जेहि हित कीन्ह निवास न निबह्यो काम ।।३१५।।

(अ) प्रति के छंद ५ का पाठ (म) प्रति में इस प्रकार है—

लीन संग सुग्रीवहि तब ततकाल।
बाली हरिपुर दीन्हेउ परम कृपाल ।।१।।

क्रमशः (अ) प्रति—

पुनि सुग्रीव तिलक कर वरषा देषि।
कीन्ह प्रवरषन वासैं हरष विसेषि ।।६।।

यह छन्द (म) प्रति में भी है।

कहत कथा लछिमन सों इतिहास (?) अनेक।
ज्ञान भवित नृप नीतिहि सहित विवेक ।।७।।
वरषा विगत सरद रितु उज्ज्वल देषि।
सीता कर मन चिंता भई विसेषि ।।८।।
सुनहु लषन अब केहि विधि सीतहि पाय।
तात सो जतन विचारो अवसर पाय ।।९।।
सुग्रीवहु सुधि बिसरी पावा राज।
गहवर हियमन पुलकित कौशल राज ।।१०।।

क्रोध भाव सुग्रीवहि तव प्रभु सोधि।
भगत वसल प्रभु तुलसी कृपा पयोधि॥३१६॥

तब कपीस सब बोले जूथप जूथ।
बदि बदि अवधि सकल दिसि पठै बरूथ॥३१७॥

रतनाकर मंथन करि रमा निकारि।
जनक सुता हित भवनिधि मथत परारि॥३१८॥

पैठ विविर संपातिहि कथा सुनाइ।
नव तन पाइ सीय सुधि कहेउ बनाइ॥३१९॥

क्रमशः (अ) प्रति—

तब लछिमन जिय कोपे गे कपि गाउं।
सहित पवन सुत चरनहि कपिहि लिवायु॥११॥

चरन वंदि सुग्रीवहु बलि मुख भेजि।
सीता कह सब षोजेहु कहे तरेजि॥१२॥

मारुत सुतहि बोलायउ प्रभु निज पास।
दीन्ह मुद्रिका हरषित जान उदास॥१३॥

(अ) प्रति के छंद तेरह के दूसरे चरण का पाठ (म) प्रति में इस प्रकार है—

दीन मुद्रिका कपि उर परम हुलास॥३॥

क्रमशः (अ) प्रति—

सीता कहँ समझायउ मम बल भाषि।
चलेउ पवन सुत हरषित प्रभु उर राषि॥१४॥

मुंदरी मुख मह मेलेउ कपि संग लीन्ह।
विवर प्रवेस कीन पुनि मारग दीन॥१५॥

देपि पयोनिधि दुस्तर कपि बल बूझ।
जामवंत हनुमतहि मंत्रहि सूझ॥३२०॥
भएउ कनक गिरि सम कपि राम प्रताप।
तुलसी चढ़ि गिरि ऊपर कीन्हेउ दाप॥३२१॥

गीधहि देषि मिले तब सुनेउ संदेस।
तरकेउ उदधि पवनसुत मेटि कलेस॥१६॥

प्रति (म) में प्रति (अ) के १६ वें छंद का पाठ इस प्रकार है—

गीधहि देउ विमल गति सुनि उपदेस।
तरकेउ उदधि पवन सुत मेटि अदेस॥४॥

प्रति (अ) का अंत—इति श्री बरवै रामायने आरण्डकांडे चतुर्य सोपान समाप्तं॥४॥

प्रति (म) का अंत—इति श्री गोसांई तुलसीदास कृत बरवै रामाइन पिंघा कांडे संपुरन स्मापत।

(सुंदर कांड)

सिंधु पार सिंहक[1] हति गएउ कपीस।
लंकहि घर घर निसि लपि निसिचर ईस ॥३२२॥

वन असोक मह सीतहि देपेउ जाइ।
तुलसी वरनि रामजस कहेउ सुनाइ ॥३२३॥

दै मुंदरी प्रबोध करि आएसु लेइ।
वन विधंसि पुर जारेउ आरत भेइ ॥३२४॥

जनक सुतहि समुझाएउ कपि कर जोरि।
लेइ चूरामनि हरषित चलेउ वहोरि ॥३२५॥

लंकहि थापि राम वल कुलिस समान।
गरजेउ सुनि कपि आवत कह जमुवान ॥३२६॥

---

१. जौनपुर की दूसरी प्रति में 'सिंधि का' पाठ है।

(अ) प्रति का पाठ—

देषेउ नगर विविध विधि लषि पुनि सीय।
कहे सकल प्रभु कथा (सु ?) सीतल होय ॥१॥

बन विधंसि पुर जारेउ हति वहु वीर।
सीय चरन सिर नाये दैब वड़ धीर ॥२॥

(म) प्रति में दूसरे छंद का दूसरा चरण कुछ भिन्न है—

सीय चरन सिर नायउ दै वड़ धीर ॥१॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

चरन कमल सिर नायेउ कूदेउ सिंधु।
सकल कपिन मिलि गे जहं करुना सिंधु ॥३॥

मिले सकल कपि हरषित जीवन पाय।
मधुवन मिस सुग्रीवहि षवरि पठाय॥३२७॥

सुनि सुग्रीव मगन मन भएउ विसेष।
राम काज निसचै भा अचगरि देष॥३२८॥

सकल कपिन्ह मिलि राजहि चले तुरंत।
फटकि सिला जहं सोहत सहित अनंत॥३२९॥

परे सकल कपि चरनन्ह कह जमुवान।
राम कृपा सब कारज किय हनुमान॥३३०॥

जेहि सुमिरन ते मसक काल सम होत।
कारज सिंधु पार भा प्रभु वल पोत॥३३१॥

क्रमशः

(म) प्रति में इस छन्द का पाठ इस प्रकार है--

चरन कमल सिर नाय कै कूदेउ सिंधु।
सकल कपिन्न पहं आये करुना सिंधु॥२॥

(अ) प्रति का पाठ--

कहे सकल सुधि सिय कर सुनि तब राम।
कह कपि राज विलंबों अब केहि काम॥४॥

चला कटक को बरनै कपि कर जूथ।
गए सिंधु तट बानर रीक्ष वरूथ॥५॥

येहि विधि जाइ कृपा निधि सागर तीर।
मांगत पंथ कृपा मन करि रघुवीर॥६॥

(म) प्रति में यह छंद इस प्रकार है--

यहि विधि जाय कृपानिधि सागर तीर।
आइ विभीषण (न) मिले मुदित (भये) रघुवीर॥३॥

सिय सुधि सकल बूझि प्रभु कह कपिराज।
अब बिलंब केहि कारन सजहु समाज॥३३२॥

चली सैन रघुपति की मारि सुमार।
डोलत मही अहीसहु करत विचार॥३३३॥

कुरुम कोल अकुलाने धरत न धीर।
सुमन बरपि सुर गावत जस रघुबीर॥३३४॥

सिंधु तीर प्रभु डेरा कीन्हेउ जाय।
रावण सचिव बुलाएउ सब सुधि पाय॥३३५॥

कहत सचिव सब नीतिहि जस बुधि जाहि।
काल बिवस जिमि भेपज लगत न ताहि॥३३६॥

कहेउ बिभीपन रावन राम समान।
साहिब एहि जग देपिय अपर न आन॥३३७॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

उहां बिभीषन भाषेउ भजु भगवान।
क्रोधवंत तब रावन चित नहिं आन॥७॥

मय तनया समझायेउ बहु विधि जाय।
मातुल अपर महोदर कह समुझाय॥८॥

कहै बिभीषन पुनि पुनि गुन रघुबीर।
हुकुमि लात तकि मारेउ गनी न पीर॥९॥

पुनि बहु विधि समुझाये अति हित आनि।
चले पुनि हरषित जहंवा कृपा निधान॥१०॥

करत मनोरथ बहु विधि हृदय अनंद।
चरन कमल के देषे मिट दुष दंद॥११॥

रावन भयेउ काल वस सुमति न बूझ।
हुमुकि लात हिय मारेउ कुमती सूझ ॥३३८॥

पुनि वहु विधि समझाएउ लपि वस काल।
तव प्रभु सगुन विचारेउ समुझि कृपाल ॥३३९॥

मिलि धनेस मति बूझेउ सिव वर पाय।
चलेउ गगन पथ आतुर सगुन जनाय ॥३४०॥

विपुल मनोरथ मन मंह करत सप्रीत।
जा कह ठांव न जग महं तेहि प्रभु रीत ॥३४१॥

धन्य भाग मम पूरन उदधि अपार।
सपने को सो दुष सुप लहेउ विचार ॥३४२॥

देपिहौं जाइ चरन सिव मानस हंस।
हनुमान हिय धारेउ वेद प्रसंस ॥३४३॥

क्रमशः

दूरि ते प्रभुहि निहारेउ पूरन काम।
करत प्रनाम विलोके उठे तव राम ॥१२॥

लिये उठाय हृदय तव लाये प्रीति।
तिलक कीन्ह अपनाये कहे सुनीति ॥१३॥

इस छन्द का पाठ (म) प्रति में इस प्रकार है:—

लिये उठाइ लाइ उर प्रभु अति प्रीति।
तिलक कीन अपनाइयउ कही सुनीति ॥४॥

तरी अहल्या जेहि परसत (पग) धूरि।
पाहन ते पंकज भइ तजि अघ भूरि।।३४४।।

दंडक वन पावन भा परसत पाय।
सोइ पद कमल विलोकव नैनन्ह जाय।।३४५।।

जेहि पद पांवरि पाए भरत मनाय।
अवध प्रजा निजु सव के प्रान बचाय।।३४६।।

मुनिगन सुरगन सब कह चरनहि आस।
आरत वस सुमिरन करि मेटत त्रास।।३४७।।

मगन विभीषन तुलसी करि·पद ध्यान।
सिंधु पार एहि आएउ जहं भगवान।।३४८।।

देषि दरस ततकालहि भएउ विसोक।
सुधरेउ एकहि आंक लोक परलोक।।३४९।।

पाहि पाहि कहि मेदिनि परेउ अधीर।
श्रवन सुजस सुनि आएउँ भरि भव भीर।।३५०।।

निशचर वंस जनम मम सुनहु कृपाल।
सुरन्ह सुषद असुरन्ह उर दायक साल।।३५१।।

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

सागर निग्रह कीने कथा सुनाय।
मुदित भये निज भवनहि अति सुष पाय।।१४।।

तुलसी राम भजन करु अंतर रेष।
सकल जनम सुष वीतत धर्म निरेष।।१५।।

एकहि वान वालि हति जो वल सिंधु।
कहु केहि कुसल वैर जन आरत वंधु॥३६०॥ ऊर्मी
नाघि न सक जगजई सेस कृत रेप।
उतरि सिंधु जारेउ पुर दून विसेष॥३६१॥
चलेहु वेगि लै सिया अग्र करि मोहि।
सरन सवद सुनि रपिहहिं रघुवर तोहि॥३६२॥
तू दसकंठ भले कुल उतपति लीन्ह।
ता महं सिव कर सेवक विधि वर दीन्ह॥३६३॥

क्रमशः

तवहिं आय प्रभु निकटहिं कहि गढ़ भेद।
तव प्रभु सचिव वोलाए करिय विभेद॥४॥
जामवंत सुग्रीवहि रावन वंधु।
हरष सहित कह सुनिये करुना सिंधु॥५॥
एक वान महं कालहु वचै न प्रान।
कौन काज फुरमावहु श्री भगवान॥६॥
तव अनुशासन माया रचै वनाय।
हम संमत तव आज्ञा कालहि पाय॥७॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्डन लटकति रोम।
अगनित शिव चतुरानुन वड़ विधि सोम॥८॥
वेद करत गुन गातै लहै न पार।
भृकुटि नवन वाढै जव को रखवार॥९॥
या रावन तुक्ष समान।
तव प्रभुता को जानै कृपा निधान॥१०॥
साधु विप्र हित कारन लिये अवतार।
चरित करत नाना विध लै भवपार॥११॥
सनकादिक मुनि गावहिं कृपा विकेत।
तव चरित्र भवसागर महं वड़ सेत॥१२॥

पर दूषन अरु तिसिरहिं बालिहि मारि।
उपल किये जलजानहिं नाम परारि॥३६४॥

ताकर दूत संदेस कहन सुभ आय।
श्री मद नृप मद त्यागहु कुल वर पाय॥३६५॥

अंगद कहेउ परम हित नीति समेत।
कल्प कोटि विधि लागहि बुधि न अचेत॥३६६॥

रिपु बल मथि प्रभु जस कहि चलेउ बहोरि।
काल वात बस जानेउ भइ बुधि तोरि॥३६७॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

सकुल सदल सह रावन मूल बहाय।
लंका दीन विभीषन अविचल पाय॥१३॥

इस छंद का पाठ (म) प्रति में इस प्रकार है—

सकल पुत्र दल रावन मारि करीर समान।
लंका दीन विभीषन मिले सीय भगवान॥२॥

क्रमशः (अ) प्रति—

मंदोदरी सोच अति देव न सूष।
अस्तुति करत प्रेम भर बीतेउ दूष॥१४॥
शिव ब्रह्मादिक आए बरषत फूल।
सीता सहित विराजत जहँ अनुकूल॥१५॥
सुरपति बिनै बहुत करि सैन जिआय।
जाय बसे अमरावति अति सुष पाय॥१६॥

इस छंद का पाठ (म) प्रति में इस प्रकार है—

सुरपति बिनै बहुत करि सवन जिवाइ।
सीता अनुज सहित प्रभु अवध चले हरिषाइ॥३॥

वाजत आवै डुगडुगि साएर तीर।
लंका परेउ कोलाहल लपि रघुवीर॥३६८॥

मदन कोटि सत सुंदर राजत राम।
रिपु रन जीति विभीषन पूरन काम॥३६९॥

कपि महं अनुज सहित कर फेरत चाप।
स्याम अंग श्रम कन संग सोनित छाप॥३७०॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

बहुरि विभीषन आये प्रभु के पास।
नाथ कोस अरु दरवहि लपो अवास॥१७॥
देहु कपिन कह सब विधि बड़ श्रम कीन।
हरषि राम लंकेशहि आयसु दीन॥१८॥
नभहि जाइ पट वरषो भूषन मीत।
छन बीतत मोहि जुग सम भरतहि प्रीत॥१९॥
तोर कोस गृह संपति मम सब आहि।
दशा भरत कै सुमिरत जुग सम जाहि॥२०॥
करेहु कल्प भरि राजहि सुमिरेहु मोहि।
परम भक्ति अनुरागेहु दीनेउ तोहि॥२१॥
तवँ विभीषन वरषे नभ पर जाय।
भालु वलीमुष हरषित भूषन पाय॥२२॥
लै विमान प्रभु आगे राषे आय।
सीतहि अनुज सहित प्रभु कपिन सहाय॥२३॥
अपर कपिन सब भेजेउ निज निज गेह।
मन क्रम वचन करेहु मम चरन सनेह॥२४॥
कालहु कर डर नहि तुम कहं यतुधान
तुम सब मम उपकारी कहों न वनाय॥२५॥

घायल वीर चहूँ दिसि कपि अरु रीछ।
निकट तमाल फूल जनु टेसु विरीछ॥३७१॥

कृपा विलोक विलोकेउ सुर मुनि नाग।
तुलसी बसेउ हृदय जेहि तेहि बड़ भाग॥३७२॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

चले सकल मन हरषित करत प्रनाम।
अंतरहित हिय राषे मन अभिराम॥२६॥

नव प्रधान सब बानर अरु जमवंत।
सीता सहित विराजत हरष अनंत॥२७॥

सुभग एक सिंहासन उच्च विराज।
सीय सहित प्रभु तापर कोशल राज॥२८॥

लषन दहिन दिसि सोहत बानर जूथ।
जामवंत लंकापति सकल वरूथ॥२९॥

येहि विधि सब लै प्रभु तब चले उरगाय।
देव सुमन झरि लाये कहि गुन ग्राम॥३०॥

दश दिसि बढ़त अनंद विमल आकास।
जै जै राम शब्द भा तब चहुं पास॥३१॥

सीतहि प्रभु देषरावा श्री भगवान।
रावन कुंभकरन इह तजेऊ प्रान॥३२॥

इन्द्रजीत रावन कर बड सुत वीर।
लषन हतेउ येहि ठांई बड़ रन धीर॥३३॥

अपर निसाचर मारे अंगद हनुमान।
सीतहि समर देषावत कृपानिधान॥३४॥

सीता बोलि पठाएउ अनलहि डाहि।
सुर मुनि कपि सब देपेउ कहत सकाहि॥३७३॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ––
पुनि प्रभु हरपि जानकी लषन समेत।
संभुहि कीन दंडवत कृपा निकेत॥३५॥

चलेउ विमान तहां ते उडेउ अकास।
जै जै राम कहत सब परम हुलास॥३६॥

बहुरि किषिधापुर मह आये राम।
सकल देषाये सीतहि कहि सब नाम॥३७॥

घट संभव के आश्रम गए उदार।
सकल मुनिय परतोषे विविध प्रकार॥३८॥

पुनि प्रभु चले हरषि अति सीय समेत।
चित्रकूट प्रभु आये परन निकेत॥३९॥

तहं पुनि पुनि संतोषे भक्तकृपाल।
अत्रि आदि तें विदा होइ चले कृपाल॥४०॥

भरद्वाज पहँ आए कृपा निधान।
करत मुनीस दंडवत परम सुजान॥४१॥

सिथिल अंग जल लोचन अति अनुराग।
येकटक निमिष निहारत कहि वड़भाग॥४२॥

सीता लषन सहित प्रभु प्राग नहाय।
विविध भांति महि देवनि दान दिवाय॥४३॥

मारुत सुत कहं भेजेउ भरत समीप।
पुनि प्रभु चले तहां ते अवध समीप॥४४॥

राम वाम दिसि सोभित सिय गुन पानि।
सुमन वरपि सुर गावत अस्तुति ठानि ॥३७४॥

नील कमल के पास करह जनु सोन।
तुलसी ध्यान परम पद पाएउ को न ॥३७५॥

इहां निषाद सुने उठि आये राम।
नाव नाव गोहरावैं मन अभिराम ॥४५॥

तब लगि उतरि बिभानुहि आयउ पार।
देषि निषाद प्रभु आये सह परिवार ॥४६॥

हरषित करत दंडवत हरष अपार।
बार बार प्रभु हेरत बह जल धार ॥४७॥

राम उठाय लगाए उर मह लेत।
परम कृपाल दीन हित सज्जन हेत ॥४८॥

असरन सरन दीन प्रभु प्रेमहि प्रीति।
तुलसीदास के स्वामी भक्त विनीत ॥४९॥

(अ) प्रति का अंत—

इति श्री बरवै रामायने तुलसी कृत लंका कांड
षष्ठो सोपान ॥६॥

(म) प्रति का अंत—

इति श्री गुसाईं तुलसीदास कृत
बरमै रामाइन लंका कांड
संपूरन समाप्त ।

(उत्तरकांड)

अवध अनंद वधाई घर घर बाजु।
अनुज सीय सह ग्रह आए रघुराज॥३७६॥
रिपु रन जीति कुसल प्रभु साजि विमान।
देव लोक सब हरषित बजत निसान॥३७७॥
ग्रह ग्रह चारु चौक मनि मंगल साज।
ध्वज पताक तोरन बहु बाजन बाज॥३७८॥
दीप दीप के भूपति सुनि प्रभु राज।
आए ले उपहारिहि सहित समाज॥३७९॥
सीय समेत सिंघासन निरपि जोहारि।
श्रुति जय ध्वनि मुनि आसिष भुवन मझारि॥३८०॥

(अ) प्रति का पाठ—

तब हनिवंत कुसल सब भरत सुनाय।
चरन कमल सिर नायेउ प्रभु पह जाय॥१॥

(म) प्रति में पहली पंक्ति का पाठ इस प्रकार है—

तब हनुमंत कथा सब भरतहि कही सुनाय।

(अ) प्रति का पाठ क्रमशः—

चले राम चढ़ि पुष्पक परम कृपाल।
अनुमुष अवध देषावत कपिन कृपाल॥२॥
भरत गए निज पुर महं षबरि जनाय।
आवत नगर निकट निज प्रभु रघुराय॥३॥
जननी सकल सुनाये कुशल विशेष।
लषन सीय संग आवत सगुन अलेष॥४॥

निरषि मातु सब जनम सुफल करि मान।
भरत लषन रिपु घातक सुप अविकान॥३८१॥

सुर तरु सुमन बरषि सुर देहिं असीस।
पुरजन सकल अनंदित लषि जगदीस॥३८२॥

राम राज कर संपति सुपद विभूति।
सेस महेस गनेसहु नहिं करतूति॥३८३॥

संकर सुप रस पूरन सहित भसुंड।
गाइ राम जस तुलसी भये अपड॥३८४॥

निज निज ग्रह पुर लोगन्ह सह परिवार।
राति दिवस रघुपति जस कहत प्रचार॥३८५॥

सिषवन करहिं परस्पर मिलि नर नारि।
कस न भजहु रघुनायक जन हितकारि॥३८६॥//

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

गुरु वशिष्ठ सन भाषे प्रभु गुन ग्राम।
भक्त पच्छधर आवत पूरन काम॥५॥
सुनत सकल आनंदित बजत बधाय।
घर घर उत्सव पूरन मंजुल गाय॥६॥
पुरी बनावत बहु विधि रचत अनूप।
आजु कृपाल घर आवत सब जग भूप॥७॥
कनक कलस अति सोभित चौक पुराय।
बहुत रसाल तमालहि पुंग सोहाय॥८॥
रोपे पुर सब वीथिन फलन समेत।
की रितुराज कीन्ह अस नगर निकेत॥९॥
सचिव भूमि सुर लै कै अरु पुर लोग।
चले भरत मन हरषित विगत वियोग॥१०॥

राम राम रघुनायक रघुवर राम।
बारहि बार सहज नित कहु निःकाम॥३८७॥

सब सुभाग सुप आकर जिय मह जानि।
भजहु वेद जस गावत प्रभु दिन दानि॥३८८॥

कौसलेन्द्र पद कंजहि भजहु सचेत।
राम काम अरि हिय मह दिएउ निकेत॥३८९॥

सिय जीवन जग जीवन जीवन राम।
सकल भुवन पति रघुपति सब सुप धाम॥३९०॥

कानन दनुज धूमध्वज भुज आजान।
अरुन कमल कर सोभित बान कमान॥३९१॥

सकल वासना कैरव रघुपति भान।
तुलसी उपल पयोनिधि किए जलजान॥३९२॥

यह दसवां छंद (स) प्रति में दूसरा छंद है।

देषि राम सब आवत गुरु द्विज बंधु।
उतरे तुरत महीमह करुना सिंधु॥११॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

उतरि कहेउ प्रभु पुष्पहि तुम गृह जाहु।
चले सीस धरि आयसु सोक समाहु॥१२॥
परे राम गुरु चरनन धरि धनु भाथ।
लिय उठाय उर लाये तब मुनि नाथ॥१३॥
पूछी कुसल नाथ तब कह पुनि राम।
हमरे कुसल तुम्हारे चरन प्रनाम॥१४॥
लषन सहित सब द्विज मिलि आशिष पाय।
... ... ॥१५॥

काम क्रोध मद कंजहि प्रबल तुसार।
तुलसी सकृत प्रनामहि द्रवत उदार ॥२९३॥
लोभ मत्त नागेन्द्रहिं केहरि राम।
तुलसी घोपेहु सुमिरत दै सुरधाम ॥२९४॥

भरत परे प्रभु चरनन प्रेम अधीर।
बल करि कृपा सिंधु लीने रघुबीर ॥१६॥

यह १६ वां छन्द (म) प्रतिका तीसरा छंद है जो इस प्रकार है—

भरत परे प्रभु चरनन प्रेम अधीर।
अनु (ज) सहित पुरवासिन मिलि रघुबीर ॥३॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

लँ पुनि हृदय लगाये गै सब पीर।
कोमल चित कृपाल अति पुलक सरीर ॥१७॥
पुनि प्रभु शत्रुहन भेंटे हिये भरि प्रेम।
लषनहि भरत मिले पुनि प्रगटत प्रे (ने?) म ॥१८॥
जननी सकल मिले प्रभु करि बहु भाव।
लगे केकेई चरनन मन बड़ चाव ॥१९॥

यह १९ वां छंद (म) प्रति के चौथे छंद में इस प्रकार हैं—

जनन (ी?) सकल मिले प्रभु उर बड़ चाय।
तब गुरु विप्र बोलाये लगन सोचाय ॥४॥
बोले वचन कनौड़े सकुचत राम।
विविध भांति तोषेऊ करि अभिराम ॥२०॥
बहुरि सुमित्रा चरनन धरि अति प्रीति।
लोग सराहत सकल प्रेम की रीति ॥२१॥
बहुरि मिले निज मातहिं नीति निधान।
उर अल्हाद बढ़ावत श्री भगवान ॥२२॥

द्विज हित हरन भार महि नासन माथ।
तुलसी कुटिल अनाथहि हित रघुनाथ॥३९५॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ —

लषन मिले सब जननी अति आनंद।
कैकेई के चरनन पुनि पुनि बंद॥२३॥
सषा सकल सुग्रीवहि अरु हनुमंत।
धरे मनुज तन (अँग?) सुंदर गति भगवंत॥२४॥
सकल सराहत भरतहि है अति प्रीति।
भक्ति गूढ़ अति दुस्तर पूरन रीति॥२५॥
तब प्रभु सषा बोलाये कहे बुझाय।
गुरु वशिष्ट पग लागहु सबहि सिषाय॥२६॥
मुनि सन कहे कपिन गुन बिपुल बनाय।
बहु विधि दीन्ह आसिषा मन हरषाय॥२७॥
जननी चरन धरायेउ प्रीति समेत।
जानिउ राम लषन प्रिय आसिष देत॥२८॥
पुरबासिन कर देषेउ प्रेम बहूत।
राम कीन यह कौतुक प्रगट बिभूत॥२९॥
छिन में मिले सकहि प्रभु जस जेहि भाव।
यह माया रघुपति कै समुझि को काव॥३०॥
सकल हृदय परिपूरन ब्रह्म सरूप।
चेतन अमल सहज सुष परम अनूप॥३१॥
येहि विधि सबहि सुषी करि चले रघुवीर।
पुर प्रवेस बड़ सगुनन भये गंभीर॥३२॥
द्वार द्वार अति सुंदर आरति साज।
करहि निछावरि अगनित सहित समाज॥३३॥

संकर बिधि पद सेवत सुरसरि आप।
आनंद सिंधु मोह हर तुलसी नाप॥३९६॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

जोहत हाथ अटारहि अक्षत रोरि।
गान करै पिक बैनी मंगल गौरि॥३४॥

द्वार द्वार प्रति हरषित प्रेम समेत।
तुलसिदास के स्वामी गये निकेत॥३५॥

वेद विहित गुरु सोवेउ दिन भल जानि।
सकल द्विजन सन पूछेउ मन अनुमानि॥३६॥

सचिव महाजन हरषित कह कर जोर।
विलंब करि जनि मुनिवर कहहि निहोर॥३७॥

करिअ राम अभिषेकहि मंगल मूल।
दुंदुभि हनहिं देव सब बरषहिं फूल॥३८॥

जय जय करहि मुनीस्वर वेद बखानि।
नाचहि मुदित अप्सरा मंगल गान॥३९॥

घर घर बजत बधावा अवध मझार।
राज सिंहासन बैठे राम उदार॥४०॥

अवध बनाये बहु विधि रचना सिंधु।
देखत मुनि गन ठगि रह भूले बुध॥४१॥

सोहत राज सिंघासन सीय समेत।
अस्तुति करत देवता भक्त सचेत॥४२॥

यह छंद (म) प्रति में इस प्रकार है—

सोहत राज सिंघासन रमा समेत।
अस्तुति करत सकल सुर जय जय कृपानिकेत॥५॥

सोक संदेह मेघ कहं अनिल परारि।
पाप पहार कुलिस सम अवध विहारि।।३९७।।
भगत कामधुक धेनुहि भजु करि नेम।
तुलसी राम कृपालहि पोषत प्रेम।।३९८।।

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

लखन चंवर कर लीन्हे दक्षिन भाग।
मुरछल लिये भरत कर अति अनुराग।।४३।।
छत्र मुकुट सिर सोहत भूषन चारु।
व्यजन लिये शत्रुह (न) कर करिय विचार।।४४।।
आसपास (स) व वनचर सुग्रीवादि।
सनमुष मारुत नंदन द्दत विवादि।।४५।।
लंकापति मन हरषित अरु जामवंत।
हम सव हैं वड़ भागी है हनुमंत।।४६।।
कृपा निधान निहारत हनिवत वीर।
वार वार कपि पुलकत करत निहोर।।४७।।
छिन छिन वरषत देवन सुमन प्रसंस।
अवध वास विधि जाचहि लषि रघुवंस।।४८।।

इस संदर्भ में (म) प्रति में यह छंद विशेष है—

लंका ईस कपी सव निज निज धाम।
चारिउ भाय जुगल सुत चक्रवर्ति भे राम।।६।।

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

मगध सूत नट जाचक ढाढी भाट।
वहु विधि देत असीसैं पूरन हाट।।४९।।

धर्म कल्पतरु रघुवर आरत बंधु।
तुलसी द्रवत दीन लषि करुना सिंधु॥३९९॥

राम वाम कर परची केवल नाम।
तुलसी लिपेउ न भालहि तेहि विधि वाम॥४००॥

सावन सकल नाम विनु लागहि सून।
तुलसी नाम बीज करु बढ़ दस गून॥४०१॥

एहि विधि अवध नारि नर प्रभु गुनगान।
करहि दिवस निसि तुलसी जात न जान॥४०२॥

भजन प्रभाव भांति बहु बरनेउ वेद।
तुलसी गाएउ हरि जस मिटि भव पेद॥४०३॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

जाचक भये अजाचक सुष रह पूर।
अवध चहूं दिसि सुष भर लोग मयूर॥५०॥
कहेउ राम जस यहि विधि निज सुष नीत।
गावहि मुदित ना (रि) नर मन वुधि चीत॥५१॥

यह छंद (म) प्रति में इस प्रकार है—

तुलसी कहेउ राम जस जो मन वुधि।
सोवत वीते काल बहु अब करु सुधि॥७॥

क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

राम चरन (र) ति उपजै मिटै कलेस।
राम सुजस कर फल यह क (ह) त महेस॥५२॥
येह कलि दुर्लभ दूनौ मानुष देह।
राम च (रन) रति केवल स (ह) ज सनेह॥५२॥
(इसे ५३ होना चाहिए)

करन पुनीत हेतु निज बचन बिबेक।
तुलसी एसेहु सेवत रापत टेक॥४०४॥

सीताराम लषन संग मुनि के साज।
तुलसी चित चित्रकूटहिं बस रघुराज॥४०५॥*

---

*क्रमशः (अ) प्रति का पाठ—

सोई गुनवंत ज्ञान रत परम विचार।
तुलसिदास के स्वामी परम उदार॥५३॥
(इसे ५४ होना चाहिए)

(अ) प्रति का अंत—

इति श्री बरवैं रामायने तुलसी कृते उत्तर कांड
सप्तमो सोपान समाप्त॥

लि० अजोध्यादास निज पाठार्थ। सं० १८९५
मी० मा० सु: १२ वारः र श्री बलदे (व) मंदिरे।

(म) प्रति का अंत—

इति श्री गुसांई तुलसीदास कृत बरवै रामाइन उत्तर कांड
संपूरन स्मापता।

७ मिती॥ सुभ माह॥ वदि ८॥ भौमे॥ संवत १९०८॥

दतिया राज्य पुस्तकालय की प्रति में निम्नलिखित अन्तिम छन्द अतिरिक्त पाया जाता है जो बरवै रामायण की रचना-तिथि की दृष्टि से विचारणीय है:—

रघुबर चरन तरनिया चढ़ि चित मोर।
तर भव सागर नदिया दिन रह थोर॥

बरवै रामायण का लघु पाठ

(नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित)

बाल कांड

केस मुकुत सखि मरकत मनिमय होत।
हाथ लेत पुनि मुकुता करत उदोत ॥१॥

सम सुवरन सुखमाकर सुखद न थोर।
सीय अंग, सखि, कोमल, कनक कठोर ॥२॥

सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जाय।
निसि मलीन वह, निसि दिन यह विगसाइ ॥३॥

बड़े नयन कटि भ्रुकुटी भाल विसाल।
तुलसी मोहत मनहि मनोहर बाल ॥४॥

चंपक हरवा अँग मिलि अधिक सोहाइ।
जानि परै सिय हियरे जब कुंभिलाइ ॥५॥

सिय तुव अंग रंग मिलि अधिक उदोत।
हार वेलि पहिरावौं चंपक होत ॥६॥

साधु सुसील सुमति सुचि सरल सुभाव।
राम नीति रत, काम कहा यह पाव ॥७॥

कुंकुम तिलक भाल, स्रुति कुंडल लोल।
काक पच्छ मिलि, सखि, कस लसत कपोल ॥८॥

भाल तिलक सर, सोहत भौंह कमान।
मुख अनुहरिया केवल चंद समान ॥९॥

तुलसी बक बिलोकनि मृदु मुसकानि।
कस प्रभु नयन कमल अस कहौं बखानि ॥१०॥

काम रूप सम तुलसी राम सरूप।
को कवि समसरि करै परै भव कूप ॥११॥

चढ़त दसा यह उतरत जात निदान।
कहौं न कबहूं करकस भौंह कमान ॥१२॥

नित्य नेम कृत अरुन उदय जब कीन।
निरखि निसाकर नृप मुख भए मलीन ॥१३॥

कमठ पीठ धनु सजनी कठिन अँदेस।
तमकि ताहि ए तोरिहि कहब महेस ॥१४॥

नृप निरास भए, निरखत नगर उदास।
धनुष तोरि हरि सब कर हरेउ हरास ॥१५॥

का घूंघट मुख मूदहु नवला नारि।
चाँद सरग पर सोहत यहि अनुहारि ॥१६॥

गरब करहु रघुनदन जनि मन मांह।
देखहु आपनि मूरति सिय कै छांह ॥१७॥

उठी सखी हंसि मिस करि कहि मृदु बैन।
सिय रघुबर के भए उनींदे नैन ॥१८॥

सीक धनुष, हित सिखन सकुचि प्रभु लीन।
मुदित मांगि इक धनुही नृप हँसि दीन ॥१९॥

अयोध्या कांड

सात दिवस भए साजत सकल बनाउ।
का पूछहु सुठि राउर सरल सुभाउ ॥२०॥

राज भवन सुख विलसत सिय संग राम।
विपिन चले तजि राज सुविधि बड़ बाम ॥२१॥

कोउ कह नर नारायन हरि हर कोउ।
कोउ कह विहरत वन मधु मनसिज दोउ ॥२२॥

तुलसी भइ मति वियकित करि अनुमान।
राम लपन के रूप न देखेउ आन ॥२३॥

तुलसी जनि पग धरहु गंग महँ साँच।
निगानांग करि नितहिं नचाइहि नाच ॥२४॥

सजल कठौता कर गहि कहत निषाद।
चढ़हु नाव पग धोइ करहु जनि वाद ॥२५॥

कमल कंटकित सजनी कोमल पाइ।
निसि मलीन, यह प्रफुलित नित दरसाइ ॥२६॥

वालमीकि वचन

द्वै भुज कर हरि रघुबर सुंदर वेप।
एक जीभ कर लछिमन दूसर शेप ॥२७॥

अरण्य कांड

वेद नाम कहि अंगुरिन खंडि अकास।
पठयो सूपनखाहि लपन के पास ॥२८॥

हेमलता सिय मूरति मृदु मुसुकाइ।
हेम हरिन कहँ दीन्हेउ प्रभुहि देखाइ ॥२९॥

जटा मुकुट कर सर धनु संग मरीच।
चितवनि वसति कनखियनु अँखियनु बीच ॥३०॥

राम वाक्य

कनक सलाक कला ससि दीप सिखाउ।
तारा सिय कह लछिमन मोहि बताउ ॥३१॥
सीय बरन सम केतकि अति हिय हारि।
किहेसि भँवर कर हरवा हृदय बिदारि ॥३२॥
सीतलता ससि की रहि सब जग छाइ।
अगिनि ताप ह्वै हम कह सँचरत आइ ॥३३॥

किष्किंधा कांड

स्याम गौर दोउ मूरति लछिमन राम।
इनते भइ मित कीरति अति अभिराम ॥३४॥
कुजन पाल गुन बर्जित अकुल अनाथ।
कहहु कृपानिधि राउर कस गुन गाथ ॥३५॥

सुन्दर कांड

बिरह आगि उर ऊपर जब अधिकाइ।
ए अँखियां दोउ बैरिनि देहि बुझाइ ॥३६॥
डहकु न है उजियरिया निसि नहि घाम।
जगत जरत अस लागु मोहि बिनु राम ॥३७॥
अब जीवन कै है कपि आस कोइ।
कनगुरिया कै मुदरी कंकन होइ ॥३८॥
राम सुजस कर चहु जुग होत प्रचार।
असुरन कहँ लखि लागत जग अँधियार ॥३९॥

कपि वाक्य

सिय वियोग दुख केहि विधि कहउं बखानि।
फूलबान ते मनसिज बेधत आनि ॥४०॥

सरद चाँदनी संचरत चहुं दिसि आनि।
विधुहि जोरि कर विनवति कुलगुरु जानि ॥४१॥

लंका कांड

विविध वाहिनी विलसति सहित अनंत।
जलधि सरिस को कहै राम भगवंत ॥४२॥

उत्तर कांड

चित्रकूट पयतीर सों सुर-तरु-वास।
लषन राम सिय सुमिरहु तुलसीदास ॥४३॥

पय नहाइ फल खाहु परिहरिय आस।
सीय राम पद सुमिरहु तुलसीदास ॥४४॥

स्वारथ परमारथ हित एक उपाय।
सीय राम पद तुलसी प्रेम बढ़ाय ॥४५॥

काल कराल विलोकहु होइ सचेत।
राम नाम जपु तुलसी प्रीति समेत ॥४६॥

संकट सोच विमोचन मंगल गेह।
तुलसी राम नाम पर करिय सनेह ॥४७॥

कलि नहिं ज्ञान, विराग, न जोग समाधि।
राम नाम जपु तुलसी नित निरुपाधि ॥४८॥

राम नाम दुइ आखर हिय हितु जानु।
राम लषन सम तुलसी सिखव न आनु ॥४९॥

माय बाप गुरु स्वामि राम कर नाम।
तुलसी जेहि न सोहाइ ताहि विधि वाम ॥५०॥

राम नाम जपु तुलसी होइ बिसोक।
लोक सकल कल्यान नीक परलोक ।।५१।।

तप तीरथ मख दान नेम उपवास।
सब ते अधिक राम जपु तुलसीदास ।।५२।।

महिमा राम नाम कै जान महेस।
देत परम पद कासी करि उपदेस ।।५३।।

जान आदि कवि तुलसी नाम प्रभाउ।
उलटा जपत कोल ते भए ऋषिराउ ।।५४।।

कलस जोनि जिय जानउ नाम प्रतापु।
कौतुक सागर सोखेउ करि जिय जापु ।।५५।।

तुलसी सुमिरत राम सुलभ फलचारि।
बेद पुरान पुकारत कहत पुरारि ।।५६।।

राम नाम पर तुलसी नेह निवाहु।
एहि ते अधिक न एहि सम जीवन लाहु ।।५७।।

दोष दुरित दुख दारिद दाहक नाम।
सकल सुमंगल दायक तुलसीराम ।।५८।।

केहि गिनती महँ गिनती जस बन घास।
नाम जपत भए तुलसी तुलसीदास ।।५९।।

आगम निगम पुरान कहत करि लीक।
तुलसी नाम राम कर सुमिरन नीक ।।६०।।

सुमिरहु नाम राम कर सेवहु साधु।
तुलसी उतरि जाहु भव उदधि अगाधु ।।६१।।

कामधेनु हरि नाम काम-तरु राम।
तुलसी सुलभ चारि फल सुमिरत नाम ।।६२।।

तुलसी कहत सुनत सब समुझत कोय।
बड़े भाग अनुराग राम सन होय॥६३॥

एकहि एक सिखावत जपत न आप।
तुलसी राम प्रेम कर बाधक पाप॥६४॥

मरत कहत सब सब कह 'सुमिरहु राम।
तुलसी अब नहिं जपत समुझि परिनाम॥६५॥

तुलसी राम नाम जपु आलस छाँडु।
राम बिमुख कलि काल को भयो न भाँडु॥६६॥

तुलसी राम नाम सम मित्र न आन।
जो पहुँचाव रामपुर तनु अवसान॥६७॥

नाम भरोस, नाम बल, नाम सनेहु।
जनम जनम रघुनंदन तुलसिहि देहु॥६८॥

जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसिहि देहु।
तहँ तहँ राम निबाहिब नाम सनेहु॥६९॥

ख

बरवै रामायण की आश्रेय प्रतियों के छन्दों की अनुक्रमणिका

(न) प्रति

(अ) प्रति

(म) प्रति

अपर कपिन सब भेजेउ निज निज गेह ॥लं० २४
अपर निसाचर मारे अंगद हनुमान ॥लं० ३४
अब वर वास बतावहु करउं निकेत ॥अर० ८
अवध बनाये बहु बिधि रचना सिव ॥उ० ४१
असरन सरन दीन प्रभु प्रेमहि प्रीति ॥लं० ४९

(ल) प्रति

अब जीवन की है कपि आस न कोइ ॥सु० ३८

(न) प्रति

आकरपेउ सिय मन अरु जनकहिसोच ॥बा० १२५
आपन कथा कहेउ सुनि रावन क्रोध ॥अर० २९०
आपन सुकृत मनावहिं सब पुर लोग ॥बा० १२२
आये परन कुटी प्रभु सिया अनंत ॥अ० २४८
आरत बचन सुनत प्रभु प्रेम अधीर ॥सुं० ३५२

(अ) प्रति

आगे परेउ गीधपति देपेउ राम ॥अर० ३५
आये परन कुटी जहं मलिन अवास ॥अर० २९
आश्रम जाय बिबिध बिधि पूजा कीन ॥अर० ६
आस पास सब बनचर सुग्रीवादि ॥उ० ४५

(ल) प्रति

आगम निगम पुरान कहत करि लोक ॥उ० ६०

(अ) प्रति

इन्द्रजीत रावन कर बड़ सुत बीर ॥लं० ३३
इहां निपाद सुने उठि आये राम ॥लं० ४५

(न) प्रति

उत्सव भएउ बधाई कोटि विधान ॥बा० २१
उर विसाल वृप कंधर भुज बल भूरि ॥बा० ९९

(अ) प्रति

उतरि कहेउ प्रभु पुष्पहि तुम गृह जाहु ॥उ० १२
उहाँ विभीषन भाषेउ भजु भगवान ॥सुं० ७

(ल) प्रति

उठी सषी हंसि मिस करि कहि मृदु बैन ॥बा० १८

(न) प्रति

एकहि एक कहत सब समुझ न कोय ॥अ० २०४
एकहि एक सिषावहि जपहिं न आप ॥अ० २०३
एकहि बान बाल हति जो बल सिंधु ॥लं० ३६०
एहि विधि अवध नारि नर प्रभु गुन गान ॥उ० ४०२
एहि विधि बसहिं राम छवि अमित अनग ॥अर० २७८
एहि विधि मुख अनुरागिहि सकल समेत ॥अ० २१५
एहि विधि राम व्याह जस बरनत लोग ॥बा० १३५
एहि विधि युद्ध भये दिन बीते दोय ॥अ० २४३

(अ) प्रति

एक बान मह कालहु बचै न प्रान ॥लं० ६

(ल) प्रति

एकहि एक सिखावत जपत न आप ॥उ० ६४ (न प्रति, अ २०३)

(न) प्रति

ऐसे प्रभु कह जानत भजै न जोय ।।बा० ४४

(न) प्रति

अंगद कहेउ परम हित नीत समेत ।।लं० ३६६

(न) प्रति

कटि निषग कर कमलन्ह धनु अरु बान ।।बा० १००
कपट काक सासति करि बधेउ विराध ।।ल० ३५९
कपि सुग्रीव बंधु भय राषेहु राम ।।सुं० ३५४
कपि यह अनुज सहित कर फेरत चाप ।।लं० ३७०
कबहुंक पलन झुलावहि कबहुंक गोद ।।बा० ३०
करत केलि मग कौतुक धावत राम ।।बा० ६४
करत दंडवत भरतहि प्रेम अपार ।।अ० २३२
करन पुनीत हेतु निज वचन विवेक ।।उ० ४०४
करन-वेध गुरु कीन्हेउ अति सुष पाय ।।बा० ४६
कलस जोनि निज जानेउ नाम प्रताप ।।अ० २०१
कलि नहि ज्ञान विराग न जोग समाधि ।।अ० १९५
कहत कछुक दिन बीते भगति प्रभाव ।।अर० २८०
कह मुनि मोहिं सतावहि निसचर भीर ।।बा० २८
कहहि एक अलि बातहिं हम कहं सूझ ।।बा० ११२
कहहि सचिव सब नीतिहि जस बुधि जाहि ।।सुं० ३३६
कहेउ तपोधन रामहिं भजहु चाप । बा० १२०
कहेउ विभीषन रावन राम समान ।।सुं० ३३७
कहेउ सचिव सुत कारन रहि गए मौन ।।अ० १४५
कृपा बिलोक बिलोकेउ सुर-नर नाग ।।लं० ३७२

(न) प्रति

केसरि सुवन वीरवर रघुपति दास ।।वा० ७

(अ) प्रति

केवट कीन पहुनई प्रेम प्रमोद ।।अ० २२

(ल) प्रति

केस मुकुत सखि मरकत मनिमय होत ।।वा० १
केहि गिनती महं गिनती जस वन घास ।।उ० ५९

(न) प्रति

कोउ जानकी सराहहि रामहि कोउ ।।अ० १८४
कोऊ सक न चढ़ावन धनु अति भार ।।वा० ११७
क्रोध भाव सुग्रीवहि तव प्रभु सोचि ।।कि० ३१६

(अ) प्रति

कोटि कोटि ब्रह्मांडनि लटकत रोम ।।लं० ८

(ल) प्रति

कोउ कह नर नारायन हरि हर कोउ ।।अ० २२

(न) प्रति

कौसलेन्द्र पद कंजहि भजहु सहेत ।।उ० ३८९
कौसिक संकट भानेउ चरन प्रताप ।।अर० २७४
कौसिल्या के आगे सब सुपदानि ।।वा० १७

(न) प्रति

कंचन मनि मय पलना रचेउ सुढार ।।वा० २९

(न) प्रति

गएउ दूरि वन गहवर मारेउ वान ।।अर० २९५
गए भवन नृप सोचत मन परिताप ।।बा० ८८
गदगद कंठ भएउ नृप सुनि मुनि बैन ।।बा० ६१
गन नायक वरदायक देव मनाय ।।बा० १
ग्रह ग्रह चारु चौक मनि मगल साजि ।।उ० ३७८

(अ) प्रति

गए बसीठी जेहि विधि वालि कुमार ।।लं० २

(ल) प्रति

गरब करहु रघुनन्दन जनि मन मोह ।।बा० १७

(न) प्रति

गाधि सुवन के तप ते सषि सब आजु ।।बा० १३१
गाधि सुवन मष साजहि उर पल नीच ।।बा० ५१
ग्राम बधू सब आवहिं सिया समीप ।।अ० १७६

(न) प्रति

गिद्धराज सन मिलि प्रभु बसे सुपेन ।।अर० २७२
गिरत उठत गहि अनुजन्हि डिगत विशेप ।।बा० ४२
गिरि वन द्रुम तृन पग मृग चरन प्रसाद ।।अर० २६७

(न) प्रति

गीधहिं देइ पर मगति पिंडहि दीन्ह ।।अर० ३०१

(अ) प्रति

गीधहिं देइ विमल गति सुनि उपदेस ।। (म प्रति,) कि० ४
गीधहिं देपि मिले तब सुनेउ संदेस ।।कि० १६

(न) प्रति

गुर कृपाल अति कोमल रिपिन्ह बोलाय ॥बा० ११
गुरु अनुसासन लीन्हेउ विनय सुनाय ॥अ० २५१
गुरु कहं सबहि सौंपि प्रभु तमसा तीर ॥अ० १५७

(अ) प्रति

गुरु मंत्री सब पुरजन कीन्ह विचार ॥अ० ६९
गुरु वशिष्ट सन भाषे प्रभु गुन ग्राम ॥उ० ५

(न) प्रति

गौर बरन ते देवर सांवर नाह ॥अ० १७९

(न) प्रति

गंगहि पूजि जानकी कहेउ मनाय ।अ० १६८

(न) प्रति

घर घर जाहु सकल नृप आसा छोरि ।बा० ११८

(अ) प्रति

घट संभव के आश्रम गए उदार ।लं० ३८
घर घर बजत बधावा अवध मंझार ।उ० ४०

(न) प्रति

चरन कमल रज परसत भइ सुकुमारि ।बा० ७८
चरन परसि कानन गा अघ सब दूरि ।अर० २७१
चरन पांवरी राखेहु भरतहि प्रान ।अर० २७५
चरन पीठ सिंहासन धरि दिन सोधि ।अ० २५०
चरन रेनु महिमा कहि बरसत फूल ।अर० २७७
चली सैन रघुपति की मारि सुमारि ।सु० ३३२

चले जात आश्रम एक देषि अनूप ।बा० ७६
चले भवन जननी पहं आयसु लीन ।बा० ६२
चलेहु वेगि लै सिया अग्र करि मोहि ।लं० ३६२

(अ) प्रति

चरन कमल सिर नायेउ कूदेउ सिन्धु ।सुं० ३ (म प्रति २)
चरन वंदि सुग्रीवहु वलि नृप भेजि ।कि० १२
चलहु मात सन मांगहु आयसु जाय ।अ० १६
चला कटक को वरनै कपि कर जूथ ।सुं० ५
चलेउ विमान तहां ते उड़ेउ अकास ।लं० ३६
चले चित्रकूटहि सव साज सजाय ।अ० ७१ (म प्रति)
चले नाथ पद पंकज सीस वहोरि ।अ० १८
चले राम चढ़ि पुष्पक परम कृपाल ।उ० २
चले सकल नृप मंदिर सन वड़ चाव ।अ० १९ (म प्रति)
चले सकल वन षोजत लछिमन राम ।अर० ३१
चले सकल मन हरषित करत प्रनाम ।लं० २६

(ल) प्रति

चढ़त दसा वह उतरत जात निदान ।वा० १२

(न) प्रति

चारिउ भाइ घुटुरवन अंगना षेल ।बा० ३९
चारि सारथी आपन दीन्हेउ संग ।अ० २१९

(न) प्रति

चित्रकूट गिरि देषत रघुवर रूप ।अ० २०८
चित्रकूट यह तुलसी नाम प्रभाव ।अ० २०६
चित्रकूट महि देषत आवन होय ।अ० २०७

(न) प्रति

जेहि पद पांवरि पाएउ भरत मनाय।सुं० ३४६
जेहि सुमिरन ते मसक काल सम होत।सुं० ३३१

(प्र) प्रति

जेहि जेहि गाउं गोइडवा निकसहि जाइ। छंद संख्या१ (प्र० प्रति ३

(न) प्रति

जोइ जो जाचन आयो सो तेहि दीन्ह।वा० २४
जो पन तजउ लाज वड़ि विधि अस कीन।वा० ११९
जो पै रहउ मातु हित काज नसाय।अ० १५०
जो पै राम न जानउ समुझि सुभाय।अ० १८९
जो सुत पिता वचन रत अति हित जान।१४८
जो सुष ध्यान न आवहि प्रभु कर वेद।वा० ४८

(अ) प्रति

जोहत हाथ अटारिन अक्षत रोरि।उ० ३४

(न) प्रति

ज्ञान विराग जोग कछु माया भेद।अर० २७९

(अ) प्रति

ठाढ़े भये विटप तर सिय श्रम देषि।अ० २५

(ल) प्रति

डहकु न है उजियरिया निसि नहिं घाम।सुं० ३७

(न) प्रति

तप सरि नहिं मष दान नेम उपवास।अ० १९४
तव उठि राम ठाढ़ [illegible] न।वा० १२१

(अ) प्रति

तुलसी निरपि राम वन वड़ सुप होय।अ० २०९
तुलसी भाइ भरत सम भुवन न कोय।अ० २५६

(अ) प्रति

तुरतहि वोलि हकारा भरत वुलाय।अ० ६८
तुरतहि रूप प्रगट करि त्यागेसि प्रान।अर० २५
तुलसी राम भजन करु अन्तर रेप।सुं० १५

(म) प्रति

तुलसी कहेउ राम जस जो मन वुधि। (मं० ७)

(ल) प्रति

तुलसी कहत सुनत सव समुझत कोय।उ० ६३
तुलसी जनि पग धरहु गंग महं सांच।अ० २४
तुलसी वंक विलोकनि मृदु मुसुकानि।वा० १०
तुलसी भइ मति विथकित करि अनुमान।अ० २३
तुलसी रामनाम जपु आलस छाँडु।उ० ६६
तुलसी रामनाम सम मित्र न आन।उ० ६७
तुलसी सुमिरत राम सुलभ फल चारि।उ० ५६ (प्र० प्रति)

(न) प्रति

तू दस कण्ठ भले कुल उतपति लीन्ह।ल० ३६३

(अ) प्रति

तेहि तर रुचिर वेदिका वसे सियराम।अ० ७७

(न) प्रति

तोरत सुमन लता द्रुम रघुकुल वीर।वा० ६५

(अ) प्रति

तोर कोस गृह संपति सव मम आहि।ल० २०

(न) प्रति

दंडक वन पावन भये परसत पाय।सुं० ३४५

(अ) प्रति

दंडक कानन आये वस रहि धूर।अर० ९

(न) प्रति

दसकंधर निज भगिनिहि कहि वहु भांति।अर० २८५

(अ) प्रति

दसस्यंदन मन चंदन करन प्रकास।अ० १४४
दस दिशि बढ़त अनंद विमल आकास।लं० ३१

(न) प्रति

दिन तहं जहां दिवाकर निसि सुषचन्द।अ० १६०
दिये दिव्यतर आसन सवते ऊंच।वा० १०६
दिवस गंवाएउ वाहेर अवसर पाय।अ० २२१
द्विवज हित हरेन भार महि दासन साथ।उ० ३९५
दीन्ही अगिनि सुचरु कर कहि संवाद।वा० १२
दीन्ह भूप मन हरषित रथ गज वाजि।वा० २२
दीप दीप के भूपति सुनि प्रभु राज।उ० ३७९

(अ) प्रति

दूरि ते प्रभुहि निहारेउ पूरन काम। सुं० १२

(न) प्रति

देखत मग नर नारी तन विसराय।वा० ६७
दे मुदरी प्रवोध करि आयसु लेइ।सुं० ३२४
देषि पिलौना डोलहि कर पद नैन।वा० ३६

(अ) प्रति

(ल) प्रति

(ल) प्रति

(न) प्रति

(अ) प्रति

धनु तोरेउ सिय मन सम जनकहि चित्त। बा० ११६ (म प्रति)

(न) प्रति

नहि अस दूलह दुलहिन ब्याह उछाह। बा० १३३
नहि अस समधी दूसर जग मह कोय। बा० १३२
नहि भारति नहि सेसहु नाहि गनेस। बा० १३६
नृप कर जोर कहेउ गुरु सुनिये नाथ। अ० १३८
नृप रानी सब मज्जहि प्रेम प्रयाग। बा० ४०

(अ) प्रति

नगर लोग सब व्याकुल मह रनिवास। अ० ६७
नभहि जाइ पट बरषो भूपन मीत। लं० १९
नव प्रधान सब बानर अरु जमवंत। लं० २७

(ल) प्रति

नृप निरास भये निरखत नगर उदास। बा० १५

(न) प्रति

नांघि न सक जगजई सेस कृत रेष। लं० ३६१
नाम महातम भापहि मुनि सुर सिद्ध। अ० २१३
नारि परस्पर लपि कह दोउन भाय। बा० १०२
नासिक सुभग कपोलन अधरन लाल। बा० ९८

(अ) प्रति

नाथ परम मृग सुन्दर कोशल पाल। अर० १७
नारद हृदय हरप भये सीस नवाय। अर० ४३

(ल) प्रति

नाम भरोस नाम बल नाम सनेहु। उ० ६८

(न) प्रति

निज निज गह पुर लोगन्ह सह परिवार।उ० ३८५
निरगुन ब्रह्म निरजन अविगत पार।बा० ४३
निरषि मातु सब जनम सुफल करि मान।उ० ३८१
निसचर देषि रामबल परम उदार।अर० २८४
निसचर बध करि करिहै मोहि सनाथ।बा० ५९
निसचर वंश जन्म मम सुनहु कृपाल।सुं० ३५१

(अ) प्रति

निसि बासर जो ध्यावै जापर दोय।अ० ५६

(ल) प्रति

नित्य नेम कृत अरुन उदय जब कीन।बा० १३

(न) प्रति

नीच ऊँच नर नरिन्ह बन महि ग्राम।अ० २१२
नील कमल के पास करहु जन सोन।लं० ३७५
नील कमल सम लोचन भुव मसि बुंद।बा० ३४

(अ) प्रति

नीति सहित सब भाषे करै न कान।लं० ३

(न) प्रति

[illegible] मुनि अरु मानक कीन्ह महीस।बा० २५

(अ) प्रति

[illegible] अवनी पनि बसे सनेम। अ० ८८ (म प्रति ५५)

(न) प्रति

[illegible] चलावत अंगुरिन्ह मिस्रवत चाल।बा० ४१
पग नूपुर कटि किंकिनि पहुँची मंजु।बा० ३३

पठवा वालि होहि जो त्यागउं सैल।कि० ३०८
पय अन्हाहु फल खाहु परिहरी आस।अ० १९२
परबस चले जाहि सव विकल अचेत।अ० २४७
परे सकल कपि चरनन्ह कह जमुवान।सुं० ३३०
हुँचे भरत अपर जन सकल निधान।अ० २४९

(अ) प्रति

परे राम गुरु चरनन धरि धनु माथ।उ० १३

(ल) प्रति

पय नहाहु फल खाहु परिहरिय आस।उ०४४

(न) प्रति

पाहि पाहि कहि मेदनि परउ अधीर।सुं० ३५०
पाहि पाहि कहि स्वामी महि मां लेटा। अ० २३५

(न) प्रति

पितु पद वंदि चले प्रभु मुरछित राउ।अ० १५६
पिय अजहू सिष मानहु परिहरि क्रोध।लं० ३५६

(न) प्रति

पुनि आश्रम ले आये पूजा कीन।अर० २६५
पुनि नृप कर तन त्यागब कह मुनिनाथ।अ० २३८
पुनि प्रभु गए सुरसरी तीर सुजान।बा० ८०
पुनि वहु विधि समझायेउ लषि बस काल।सुं० ३३९
पुन्य पयोधि मातु पितु जिन सुत एहु। वा० ९१
पुर वाहेर अति शोभा कहिय न जात। बा० ८३

(अ) प्रति

पुनि प्रभु चले हरषि अति सीय समेत।लं० ३५
पुनि प्रभु सत्रुहन भेटे हिये भरि प्रेम।उ० १८

पुनि प्रभु हरषि जानकी लषन समेत।लं० ३५
पुनि वहुविधि समुझाये अति हित आनि।सुं० १०
पुनि लछिमन उपदेशे ज्ञान विराग।अर० १२
पुनि सुग्रीव तिलक करि वरषा देषि।कि० ६
पुरवासिन कर देषेउ प्रेम वहूत।उ० २९
पुरी वनावत वहु विधि रचत अनूप।उ० ७

(अ) प्रति

पूछी कुसल नाथ तव कह पुनि राम।उ० १४

(न) प्रति

पैसरनी अरनी सम पावक प्रेम।अ० २११
पंचवटी वर आश्रम गोदहि पास।अर० २६९
पंपासरहि निकट प्रभु वैठे जाय।अर० ३०३

(अ) प्रति

पंपासरहि गए प्रभु लषन समेत।अर० ३९ (म प्रति ३)

(न) प्रति

प्रथम जनक जो देषत आपन कीन्ह।वा० १११
प्रभु अनुराग मांग के सव पुर लोग।अ० २५४
प्रभु पहुचाइ वनहिं जव फिरेउ निषाद।अ० २१७
प्रभु लषि समझावा मति भूलै माय।वा० १९
प्रभु समरथ कौसलपति दरस अनूप।वा० ४५
प्रमुदित हृदय सराहत यह भव सिन्धु।वा० ९०
प्रात कहेउ प्रभु रिषि सन कीजै जग्य।वा० ७१
प्रात भए देषेउ प्रभु तीरथराज।अ० १७०
प्रात भए रघुपति वट छीर मंगाय।अ० १६५

(अ) प्रति

प्रात भए रघुनन्दन मुनि कर साज।अ० २३

(न) प्रति

प्रिया प्रीति वन विहरत मृग सँग राम।अर० २९४
प्रेम नेम व्रत निरषत मुनिहुं लजात।अ० २५३

(न) प्रति

फटिक सिला प्रभु सोहहिं लछिमन संग।कि० ३१४
फिरि फिरि पंथ निहारहिं कहहि सप्रीत।अ० १८६

(अ) प्रति

फिरि फिरि प्रभुहिं विलोकत मृग वड़ भाग।अर० २०
फिरे राम मृगया वधि लषन विलोक।अर० २८

(न) प्रति

वाजत आवै डुगडुगि साएर तीर।लं० ३६८
वधि कवंध सेवरी गति दीन्ही राम।अर० ३०२
वधि ताड़का सुबाहिहु प्रकट्यो आप।लं० ३५७
वधि विराध सरभंगहिं प्रति प्रभु देह।अर० २६०
वन असोक मंह सीतहि देषेउ जाहु।सु० ३२३
वहु विधि करत मनोरथ मग मह जात।वा० ५४
वहुरि चले प्रभु आगे लषि कपिराय।कि० ३०६
व्याह सुचारिउ सुत तब कौसल नाथ।वा० १३४

(अ) प्रति

वधि कवंध सेवरी के आश्रम जाय।अर० ३६ (म प्रति २)
वधि विराध सरभंगहिं प्रभु गति दीन।अर० ४

वन विधंसि पुर जारेउ हति वहु वीर।सुं० २ (म प्रति)
वन वीथिन प्रभु धावत मृग के संग।अर० १९
वलि प्रोहित मीन दुवरि (या) वालव देषि।वा० ९
वहु विधि प्रेम प्रसंसा करि दोउ भाय।अ० ८५ (म प्रति २४)
वहुरि किषिंधापुर मंह आये राम।लंका० ३७
वहुरि मिले निज मार्नहि नीति निधान।उ० २२
वहुरि विभीषन आए प्रभु के पास।लं० १७
वहुरि सुमित्रा चरनन धरि अति प्रीति।उ० २१

(ल) प्रति

वड़े नयन कटि भृकुटी भाल विसाल।वा० ४

(अ) प्रति

वाजन लगे पंच धुनि हनन निसान।१२६
वारन वार पाय परि विदा कराहि।अ० १८२
वालक लीला अति सुप कीजै लाल।वा० २०
वालि मारि सुग्रीव राज प्रभु दीन।कि० ३१३

(न) प्रति

विदा कीन्ह सव रघुवर प्रेम वढ़ाय।अ० २४६
विदा मातु सन ह्वै करि चले अनन्त।अ० १५४
वीते तीन दिवस प्रभु सुद्धिहि होत।अ० २४१
वूझत चित्रकूट कह चले तुरन्त।अ० २२८
वूझिय वामदेव गुरु तुम पुनि दक्ष।वा० ६०
वैठि विविर संपातिहि कथा सुनाइ।कि० ३१९
वैठत सिलन विटपतर वंधु समेत।वा० ६६

(अ) प्रति

वैठे वट के तरु तर त्रिविध समीर।अर० छंद संख्या १

(न) प्रति

वोलत अर्थ न निकसहिं दै फल चारि।वा० ३७

(अ) प्रति

वोले वचन कनौड़े सकुचत राम।उ० २०

(न) प्रति

भएउ कनक गिरि सम कपि राम प्रताप।कि० ३२१
भगत कामधुक धेनुहि भजु करि नेम।उ० ३९८
भजन प्रभाउ विभीपन भाषेउ आप।सुं० ३५५
भजन प्रभाउ भक्ति वहु वरनेउ वेद।उ० ४०३
भये कुमार जवहिं सव दए उपनैन।वा० ४७
भरत चरित जे गावहिं नित करि नेम।अ० २५७
भरत प्रीति कछु गायेउ जस वुधि मोरि।अर० २५८
भरत भारती नायक छन्द विधान।वा० ४
भरत लषेउ प्रभु सोभित मुनि के वेष।अ० २३४
भरत सौंपि पुर सचिवन्ह चले वहोरि।अ० २२६

(अ) प्रति

भरत कहे सुन जननी संमत येक।अ० ७०
भरत कीन्ह वहु विनती सुनि भगवान।अ० ८३ (म प्रति २३)
भरत गए निज पुर मंह षवरि जनाय।उ० ३
भरत चरित जे गावहिं प्रेम समेत।अ० ८९
भरत परे प्रभु चरनन प्रेम अधीर।उ० १६ (म प्रति ३)
भरत शीग धरि भाषे सुनिय गोसांय।अ० ८४
भरद्वाज पंह आए कृपानिधान।ल० ४१

(ल) प्रति

भाल तिलक सर सोहत भौह कमान।वा० ९

(न) प्रति

भूप उठे अति व्याकुल लखि सुत दोय।अ० १५५
भूप किसोर वीर द्वहु वीच मुनीस।वा० १०७
भोर भये नृप कुंवरन्ह लीन्ह वुलाय।वा० ९३ (भो प्रति)
भोर भये रथ चढ़ करि सिन्धुहि पार।अर० २८७
मगन विभीपन तुलसी करि पद ध्यान।सुं० ३४८ (म प्रति)
मग लोगन येहि भाँति नयन फल देत।अ० १८७
मज्जन करि सरजू जल गए जहँ भूप।वा० ५५
मदन कोटिसत सुन्दर राजत राम।लं० ३६९
मदन मोरवना चंदक निदरति जोति।वा० ३१
मन्दाकिनि मज्जन करि पाप नसाय।अ० २१०
महाराज सुभ कारज करिय न देर।अ० १४०
महिमा रामनाम कर जान महेस।अ० ३००

(अ) प्रति

मघवा तनय झूठ प्रभु वल अजमाय।अर० १
मय तनया समझायेउ वहु विधि जाय।सुं० ८

(ल) प्रति

भरत कहत सव सव कहं सुमिरहु राम।उ० ६५
महिमा राम नाम कै जान महेस।उ० ५३

(न)प्रति

माइ वाप गुरु स्वामी राम को नाम।अ० १९७
मातु उवटि अन्हवायउ करि सिंगार।वा० ३०
मारग जात तपोवन मन आनन्द।वा० ६३
मारग देषि ताड़िका कहेउ लपाय।वा० ६९
मारतंड सम रामहिं लपि नृप सर्व।वा० ९४

(अ) प्रति

मांगि विदा तहं ते चले रघुकुल चंद ।अर० ३
मागध सूत नट जाचक ढाढी भाट ।उ० ४९
माया रूप कुरंगहि ननिमय देपि ।अर० १६
मारुत सुत कहं भेजेउ भरत समीप ।लं० ४४
मारुत सुत मिलि कीन्हे सुग्रीव मिताय ।कि० १
मारुत सुतहि बोलाएउ प्रभु निज पास ।कि० १३ (म प्रति)

(ल) प्रति

माय बाप गुरु स्वामि राम कर नाम ।उ० ५०

(न) प्रति

मिलि धनेस मति बूझेउ सिव घर पाय ।सुं० ३४०
मिलि निपाद पति भरतहि प्राग नहाय ।अ० २२७
मिलिहि पथिक तेहि पूछहि प्रभु गुन ग्राम ।अ० २२९
मिले सकल कपि हरपित जीवन पाय ।सुं० ३२७

(अ) प्रति

मिलि निपाद अनुरागिहि प्राग नहाय ।अ० ७२
मिले लपन सन भरतहि प्रेम अनन्द ।अ० ८१

(न) प्रति

मुदित राउ गए मंदिर सचिव बोलाइ ।अ० १४१
मुनि अनुसासन रघुवर कीन्ह निवास ।बा० ८५
मुनि अस कृपा न कीन्हेउ कबहूं मोहि ।बा० ५७
मुनिगन सुरगन सब कह चरनहि आस ।सुं० ३४७
मुनि तिय सुतन्ह सिपावहि जेहि अस नाम ।अ० २१४
मुनिन मध्य प्रभु सोभित सबकी ओर ।अर० २६६ (बा० ६८)

मुनि मुनि तिय मुनि बालक बरनत रूप। बा० ६८
मुनि रूप लखि प्रभु भरतहि पांवरि दीन्ह।अ० २४४
मुनि सन विदा माँगि सिय लषन समेत।अर० २७०

(अ) प्रति

मुंदरी मुख मंह मेलेउ कपि संग लीन।कि० १५
मुनि सन कहे कपिन गुन विपुल बनाय।उ० २७

(न) प्रति

मंत्रिहि विदा कीन्ह प्रभु करि परितोष।अ० १६६

(अ) प्रति

मदोदरी सोच अति देखन मूष।लं० १४

(न) प्रति

यह कारज लै देषौ रघुपति जाय।बा० ५३
यह वर जानकि जोगहि मिलि सुप होय।बा०४३

(अ) प्रति

यहि विधि मिले सवहि प्रभु करि परितोप।अ० ८२

(न) प्रति

येहि विधि करत मनोरथ जस जेहि भाव।बा० १०४
येहि विधि बाल चरित हरि बहु विधि कीन्ह।बा० ५०
येहि विधि राम जनम सुप को कहि गाय।बा० २८

(अ) प्रति

येहि कलि दुर्लभ दूनौ मानुष देह।उ० ५३
येहि विधि कछु दिन बीते कहत विवेक।उ० १३
येहि विधि गे सुर लोकहि विनय सुनाय।अर० ४४

(न) प्रति

(अ) प्रति

(न) प्रति

राम धाम कर परची केवल नाम।उ० ४००
राम नाम दोउ आखर हिय हित आनु।अ० १९६
राम नाम सम तुलसी मीत न आन।अ० २०५
राम निछावर कारन होत भिषारि।बा० २७
राम प्रगट कर औसर विधि जब जान।बा० १४
राम भक्त मन क्रम बच सह रनिवास।बा० ९
राम राज कर संपति सुषद विभूति।उ० ३८३
राम नाम रघुनायक रघुवर राम।उ० ३८७
राम लषन छवि देखत सब पुर लोग।बा० १०१
राम बाम दिसि सोभित सिय गुन षानि।लं० ३७४
रामहि देहु राजपद यह अभिलाष।अ० १३९
रावन भयेउ कालबस सुमति न बूझ।सुं० ३३८
रावन संग चलेउ बन निकटहि जान।अर० २९२

(अ) प्रति

राउ देषि सुत दूनौ सीय समेत।अ० २० (म प्रति)
राज काज सब सौपे सचिव बोलाय।अ० ८६
राम उठाय लगाये उर मह लेत।लं० ४८
राम चरन रज लावहिं नयनन्हि मांहि।अ० ७५
राम चरन रति उपजै मिटै कलेस।उ० ५२
राम जान सब कारन उठ ततकाल।अर० १८
रावन हरन कीन्ह तब अतर देष।अर० २७

(ल) प्रति

राज भवन सुख बिलसत सिय सग राम।अ० २
राम नाम जपु तुलसी होइ बिसोक।उ० ५१
राम नाम दुइ आखर हित हिय जानु।उ० ४९

(अ) प्रति

(न) प्रति

(अ) प्रति

(न) प्रति

(अ) प्रति

लपन दछिन दिसि सोहत वानर जूथ।लं० २९
लपन देपि तव भरतहि कीन जनाव।अ० ७९ (म प्रति २१)
लपन मिले सव जननी अति आनन्द।उ० २३
लपन सहित सव द्विज मिञि आगिप पाय। उ० १५

(न) प्रति

लागि चरन अस्तुनि करि प्रीति वढाय।कि० ३०९

(अ) प्रति

लिये उठाय हृदय तव लाये प्रीति।सु० १३ (म प्रति ४)
लीन्ह संग सुग्रीवहि तव ततकाल।कि० ५ (म प्रति)
लै पुनि हृदय लगाये गै सव पीर।उ० १७
लै विमान प्रभु आगे रापे आय।ल० २३

(न) प्रति

लोभ मत्स्य नागेन्द्रहिं केहरि राम।उ० ३९४
लंकहि थाप रामवल कुलिग समान।सु० ३२६

(अ) प्रति

लंकापति मन हरपित अस जामवन्त।उ० ४६

(म) प्रति

लंका ईस कपी सव निज निज धाम।(म प्रति ६)

(न) प्रति

वर्षागत निर्मल ऋतु सोचत राम।कि० ३१५

(अ) प्रति

वर्षा विगत शरद ऋतु उज्ज्वल देपि।कि० ८

(अ) प्रति

वाल्मिकि मुनि मिलि कै चले रघुनाथ। अ० ५८

(न) प्रति

विपुल मनोरथ मन मह करत सप्रीत। सु० ३४१

(अ) प्रति

विरह विकल रघुनायक दुखित अधीर। कि० २
विविध भाति परितोषेउ करुना सिन्धु। अर० ४२

(ल) प्रति

विरह आगि उर ऊपर जब अधिकाइ। सुं० ३६
विविध वाहनी विलसति सहित अनन्त। लं० ४२

(न) प्रति

वेद नाम गनि अंगुरनि खंडि अकास। अर० २८१

(अ) प्रति

वेद करत गुन गानै लहै न पार। लं० ९
वेद नाम कहि अंगुरनि पंडि अकास। अर० २८
वेद विहित गुरु सोधेउ दिन भल जानि। उ० ३६

(ल) प्रति

वेद नाम कहि अंगुरिन पंडि अकास। अर० २८

(न) प्रति

श्रापत पाप घटै तप रचेउ उपाय। बा० ५२

(अ) प्रति

शिव ब्रह्मादिक आये वरषत फूल। लं० १५

(न) प्रति

श्री गुरु पद अंबुज रज हृदय संभारि।बा० २
श्री रघुबर अंग सोभित अतुलित काम।बा० ३
परदूषन तिसिरहु अरु बालिहि मारि।लं० ३६४
परदूषन तिसिरा मिस प्रभुहि विचारि।अर० २८६

(अ) प्रति

परदूपन तिपिरा वधि कर पुर काज।अर० १५

(न) प्रति

पोजत चले अनुज मह गीधहि देपि।अर० ३००

(अ) प्रति

पोजत प्रभु विरही इव वाहिज वेप।अर० ३२

(अ) प्रति

पंड दीप रसु इंदुहि संमत जान।बा० ८

(न) प्रति

सकल कटक रिपु लछमन छन मंह मारि।बा० ७३
सकल कपिन्ह मिलि राजहि चलेउ तुरन्त।सुं० ३२९
सकल भूप बल तोरेउ पंडेउ चाप।लं० ३५८
सकल वासना कैरव रघुपति भान।उ० ३९२
सकुच सीय मुसकानि सुनत मृदु बैन।अ० १७८
सगरड सोच विमोचन मंगल गेहु।अ० १९९
सजि बरात नृप आए लगन समेत।बा० १२९
सब सुभाग सुष आकर जिय मंह जानि।उ० ३८८
समय सुहावन पावत सुख नर नारि।बा० २६

सपि सब कहहिं परस्पर मिलि दस पांच।बा० १३०
सहित अनुज बैदेही सुभग मरग।अर० २६३

(अ) प्रति

सकल सराहत भरतहिं है अति प्रीति।उ० २५
सकल हृदय परिपूरन ब्रह्म स्वरूप।उ० ३१
सकुल सदल सह रावन मूल वहाय।लं० १३ (म प्रति २)
सचिव वचन सुनि राजा त्यागेउ प्रान।अ० ६६
सचिव भूमिसुर लै कै अरु पुर लोग।उ० १० (म प्रति २)
सचिव महाजन हरषित कह कर जोर।उ० ३७
सनकादिक मुनि गावहिं कृपानिकेत।लं० १२
सब प्रकार सेवकाई करि मन लाए।४० ३
सब मुनि आयसु धरि कै वने द्वौ वीर।अर० ११
सबरी लीन भई तव प्रभु जिय जानि।अर० ३७
सपा सकल सुग्रीवहि अरु हनुमंत।उ० २४
स्याम सरोज बरन तन लसत प्रसेद।अर० २२

(ल) प्रति

सजल कठौता कर गहि कहत निषाद।अ० २५
सम सुवरन सुषमाकर सुखद न छोर।बा० २
सरद चांदनी संचरत चहुँ दिसि आनि।सुं० ४१

(प्र) प्रति

सजल नयन तन पुलकित गदगद बैन।(प्र० २)

(न) प्रति

साधन सकल नाम बिनु लागहि सून।उ० ४०१

(अ) प्रति

सागर निग्रह कीन्हे कथा सुनाय।सुं० १४
साधु विप्र हित कारन लिय अवतार।लं० ११

(ल) प्रति

सात दिवस भये साजत सकल बनाउ।अ० १
साधु सुसील सुमति सुचि सरल सुभाव।वा० ७
स्याम गौर दोउ मूरति लछिमन राम।कि० ३४

(न) प्रति

सिन्धु तीर प्रभु डेरा कीन्हेउ जाय।सुं० ३३५
सिन्धु पार सिवक हति गएउ कपीस।सुं० ३२२
सिय लपि कहत नाथ सन सुनिय कृपाल।अर० २९३
सिय सुधि सकल वूझि प्रभु कह कपिराज।सुं० ३३२
सिला देपि पूछेउ मुनि कारन तासु।वा० ७७
सिपवन करहिं परस्पर मिलि नर नारि।उ० ३८६

(अ) प्रति

सिथिल अंग जल लोचन अति अनुराग।लं० ४२
सिन्धु वांधि कपि जूथप उतरे पार।लं० १

(ल) प्रति

सिय तुव अंग रंग मिलि अधिक उदोत।वा० ६
सिय मुख सरद कमल सम किमि कहि जाय।वा० ३
सिय वियोग दुख केहि विधि कहउं वखानि।सुं० ४०

(न) प्रति

सीतहिं देपि सराहत पुरजन भाग।वा० ११०
सीता वोलि पठाएउ अनलहि डाहि।लं० ३७३

(अ) प्रति

सोइ गुनवंत ज्ञान रत परम विचार।उ० ५४
सोहत राव सिंहासन सीय समेत।उ० ४२ (म प्रति ५)

(प्र) प्रति

सोभा कहि नहिं सकहि देषि मन मोह।प्र ४

(अ) प्रति

सौंपि मातु सेवकाई लहुरे भाय।अ० ८७

(न) प्रति

संकर विधि पद सेवत सुरसरि वाप।उ० ३९६
संकर सुष रस पूरन सहित भसुंड।उ० ३८४
संगमेरपुर पहुँचे सुरसरि देषि।अ० १६३
संतन के गुन भाषेउ निज मुष राम।अर० ३०५

(ल) प्रति

संकट सोच विमोचन मंगल गेह।उ० ४७
स्वारथ परमारथ हित एक उपाय।उ० ४५

(न) प्रति

हरषे देषि नगर प्रभु सहित अनंत।बा० ८२
हरि आनउ नृप नारी कारज होय।अर० २८९

(अ) प्रति

हरषित करत दंडवत हरष अपार।लं० ४७

हरषित गए लोक सब सुर गुरु वृन्द ।अ० ६१
हृदये मांझ सराहत रूप अपार ।अ० ८१

(न) प्रति

हीरा मनि मानिक बहु जनु उड़ बान ।बा० २३

(ल) प्रति

हेम लता सिय मूरति मृदु मुसकाइ ।अ० २६

(न) प्रति

होउ कनक मृग सुंदर तुन छल भूरि अर० । २८८ ।